॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्री जैन-हित-शिक्षा।

प्रथम भाग।

प्रकाशक—

कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा।

गंगाशहर (बीकानेर)

संग्रहकर्त्ता—

दुर्जनदास सेठिया।

नं० १६ सीनागोग ष्ट्रीट के

"ओसवाल प्रेस" में

बा० महालचन्द बयेद द्वारा मुद्रित।

सं० १९८३ वि०

तृतीयावृत्ति १०००] [बिना मूल्य।

मिलने का पता—

१ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

मु० आठगांव, पो० ढींग,

(असाम)

२ कुम्भकरण टीकमचन्द चोपड़ा

गंगाशहर (बीकानेर)

विषय-सूची।

निवेदन ।

य पाठकों! यह पुस्तक 'जैन-हित-शिक्षा' प्रथम भाग श्रावक कुम्भकरणजी टीकमचन्दजी चोपड़ा के कहने से मैंने तैयार की है। इस में पचीस बोल, चर्चा आदि थोकड़ों के सिवाय बहुत सी उपदेशिक ढालें तथा श्रीपूज्यजी महाराज के गुणों की ढालें दि गई हैं द्वितीयावृति की अपेक्षाय इस तृतीयावृति में ९८ बोलकी अल्पाबहुत और बावन बोलका थोकड़ा यह दोनों थोकड़े नये दिये गये हैं। परन्तु मेरा परिश्रम तभी सफल है जब कि आप लोग इन्हें जयणायुत पढ़ें व दूसरों को पढ़ कर सुनावें तथा शुद्ध समकित दृढ कर अपना व दूसरों का आत्मिक हित करें। श्री वीतराग देव के वचनों की यथार्थ ओलखना कर उस पर दृढ आस्था-प्रतित रखना ही भव सागर से पार होने का एक मात्र उपाय है।

पुस्तक के लिखने व छपाने में भरसक सावधानी से काम लिया गया हैं, तथापि मेरी अल्पज्ञता के कारण व प्रमाद वश कुछ भूल चूक व त्रुटियां रह गई हों तो विज्ञ जन उन्हें स्वयं शुद्ध कर लें तथा मुझे उस से अवश्य सूचित करें ताकि चौथी आवृत्ति में शुद्ध कर दी जाय।

अन्त में ओसवाल प्रेस के मालिक बा० महालचन्दजी बयद को धन्यवाद देकर निवेदन समाप्त करता हूं—जिन की सहायता से इस पुस्तक के संग्रह करने व छपाने में मुझे पूरी सफलता हुई।

यदि जिनेश्वर देव के वचनों के विरुद्ध कुछ छप गया हो तो मुझे मिच्छामि दुक्कड़।

निवेदक:—

दुर्जनदास सेठिया।

(भीनासर निवासी)

गजल

जिनेश्वर धर्म सारा है।
मेरे प्राणों से प्यारा है॥
जिनका ध्यान धर भाई।
श्री जिनराज फरमाई॥
जिससे होत सुखदाई।
इसीसे दिल हमारा है॥ जिने ॥१॥
जिनेश्वर नाम जो गावे।
कि भव से पार हो जावे॥
जनम वो फेर ना पावे।
होय भवसिन्धु पारा है॥ जिने ॥२॥
ऐसे जिनराज प्यारे है।
जिन्हों ने भक्त त्यारे हैं॥
जिन्हों ने कर्म मारे हैं।
उन्हीं का मो आधारा है॥ जिने ॥३॥
विमुख जो धर्म से होवे।
पकड़ सिर अन्त में रोवे॥
जिनेश्वर धर्म वो खोवे।
जिन्हो को नर्क प्यारा है॥ जिने ॥४॥
नही नर भव जनम हारे।
जिनेश्वर धर्म जो धारे॥
वोही यम फांस को टारे।
महालचंद दास थांरा है॥ जिने ॥५॥

॥ श्रीजिनाय नम ॥

अथ

॥ श्रीचौवीसजिनस्तुतिप्रारम्भः ॥

दोहा—ॐ नमः अरिहन्त अतनु। आचार्य उवझाय॥ मुनि पंच परमेष्टिए ॐकाररै माहि॥ १॥ वलि प्रणमुं गुणवत गुरु। भिक्षु भरत मझार॥ दान दया न्याय छाणनें। सीधो मारग सार॥ २॥ भारी माल पट झलकता। तीजे पट ऋषिराय॥ प्रणमुं मन वच काय करी पांचूं अंग नमाय॥३॥ इम सिद्ध साधु प्रणमी करी। ऋषभादिक चौवीस॥ स्तवन करूं प्रमोद करी। जय जश कर जगदीश॥४॥ मल्लि नेम ए दोय जिन। पाणि ग्रहण न कीध॥ शेष बावीस जिनेश्वरु रमण छाड व्रत लीध॥५॥ वासुपूज्य मल्लि नेमजिन। पारश अनें वर्द्धमान॥ कुमर पदे अरु प्रथम वय। धार्यो चरण निधान॥६॥ छत्रपति उगणीस जिन। व्रत तीजी वय सार॥ उत्कृष्ट आयु जिह समय तसु तिण भाग विचार॥७॥ वीर समय उत्कृष्ट स्थिति। वर्ष सवासय होय॥ भाग तीन कीजे तसु। ए तीनूं वय जोय॥८॥ इम सगले उत्कृष्ट स्थिति। त्रिणभागे वय तीन॥ अतिम

वय उगणीस जिन। धुर वय पंच सुचीन ॥ ९ ॥ श्वेत वरण चंद सुविधि जिन। पदम वासुपूज्य लाल ॥ मुनि सुव्रत रिठनेम प्रभु। क्रष्ण वरण सुविशाल ॥ १० ॥ मल्लिनाथ पुन पार्श्व प्रभु। नील वरण वर अंग ॥ षोड़स शेष जिनेश तनु। सोवन वरण सुचंग ॥ ११ ॥ श्रेयांस मल्लि मुनिसुव्रत जिन। नेम पार्श्व जगदीश ॥ प्रथम पहर दीक्षा ग्रही। पिछले पोहर उन्नीस ॥ १२ ॥ सुमति जीम दीक्षा ग्रही। अठम भक्त मल्लि पास ॥ छठ भक्त जिन बीस वर। वासुपूज्य उपवास ॥१३॥ ऋषभ अष्टापद शिवगमन। वीर पावापुरी दीस ॥ नेम गिरनारे वासु चंपा। शिखर समेत सुबीस ॥ १४ ॥ ऋषभ संथारै शिव गमन। चउदश भक्त उदार ॥ चरम छठ अणसण पवर। बावीस मास संथार ॥ १५ ॥ ऋषभ वीर अरु नेम जिन। पल्यंक आसण शिव पेख ॥ शेष इकवीस जिनेश्वरु काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥ जिन चौवीस तणा सुगुण। रचियै बचन रसाल ॥ ध्यान सुधा वर सार रस जय जश करण विशाल ॥१७॥

प्रथम ऋषभ जिन स्तवन।

(ऐसे गुरु किम पावियै एदेशी)

वन्दु वेकर जोड़ने। जुग आदि जिनन्दा ॥ काम रिपु गज ऊपरे। मृगराज मुनिन्दा ॥ प्रणमूं प्रथम

जिनन्दन, जय जय जिन चन्दा ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अनुकूल प्रतिकूल सम सही । तप विविध तपिन्दा ॥ चेतन तनु भिन्न लेखवी । ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥२॥ पुद्गल सुख अरि पेखिया । दुःख हेतु भायाला ॥ विरक्त चित्त विगर्थ्यो इसो । जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥ संवेग सरवर भूलता । उपशम रस लीना ॥ निन्दा स्तुति सुख दुःखि । सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥ वासी चन्दन सम पणे । थिर चित्त जिण ध्याया ॥ इम तन सार तजी करी । प्रभु केवल पाया ॥५॥ हूं बलिहारी ताहरी । वाह वाह जिन राया ॥ उवा दशा किण दिन आवसी । मुझ मन उमाया ॥ ६ ॥ उगणीसै सुदि भाद्रवे । दशमी दीतवार ॥ ऋषभदेव स्तवेकरी । हुओ हर्ष अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजित जिन स्तवन ।

(अहो प्रिय तुम घट पाडी एदेशी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरी । ध्याऊं ध्यान हमेश हो ॥ अहो प्रभु अशरण शरण तुंही सही । मेटण सकल कलेश हो ॥ अहो प्रभु तुम ही दायक शिव पथना ॥ १ ॥ अहो प्रभु उपशम रस भरी आपरी । वाणी सरस विशाल हो ॥ अहो प्रभु सुगत निसरणी

महा मनोहरु। सुख्यां मिटे भ्रमजाल हो॥ २॥ अहोप्रभु उभय बंधण आप आखिया। रागद्वेष विकराल हो॥ अहो प्रभु हेतु ए नरक निगोदना। राच्या मूरख बाल हो ॥३॥ अहो प्रभु रमणी राक्षसणी समी कही। विष बेलि मोह जाल हो॥ अहो प्रभु काम नें भोग किम्पाकसा। दाख्या दीन दयाल हो ॥४॥ अहो प्रभु विवध उपदेश देई करी। तें तार्‍या नर नार हो॥ अहो प्रभु भवसिंधु पोत तुंही सही। तुंही जगत् आधार हो ॥५॥ अहो प्रभु शरण आयो तुज साहिबा। वस रह्या हीया मांय हो॥ अहो प्रभु आगम वयण अंगी करी। रह्यो ध्यान तुज ध्याय हो॥ ६ ॥ अहो प्रभु सम्वत् उगणीसे नें भाद्रवे। दशमी आदित्यवार हो। अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया वर्त्या जय जयकार हो॥ ७॥

श्री सम्भव जिन स्तवन.

(हूं बलिहारी हो जादवां एदेशी)

संभव साहिब समरिये। धार्‍यो हो जिण निरमल ध्यान के॥ इक पुद्गल दृष्टि थापनें॥ कीधो हे मन मेरु समान कै॥ संभव साहिब समरिये॥ १॥ ए आंकणी। तन चञ्चलता मेटनें। हुआहे जग थी उदा-

सौन कै ॥ धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै। उपशम रस मे होय रह्या लीन कै। सं० ॥ २ ॥ सुखइन्द्रादिकाना सहु। जाण्या है प्रभु अनित्य असार कै ॥ भोग भयंकर कटुक फल। देख्या है दुर्गति दातार कै ॥ सं० ॥ ३ ॥ सुधा सवेग रसे भर्या। पेख्याहै पुद्गल मोह पाशकि ॥ अरुचि अनादर आण नें। आत्मध्यानें करता विलास कै। सं० ॥ ४ ॥ संग छांड मन वशकरी। इन्द्रिय दमन करी दुर्दंत कै ॥ विविध तपे करी खामजी। घाती कर्मनो कीधो अंत कै ॥ सं० ॥ ५ ॥ हूं तुझ शरणे आवियो। कर्म विदारन तूं प्रभु वीर कै। तें तन मन बच वश किया। दुःकर करणी करण महाधीर कै ॥ स० ॥ ६ ॥ सवत उगणीसे भाद्रवे। सुदि इग्यारस आण विनोद कै ॥ सभव साहिब समरिया। पाम्यो है मन अधिक प्रमोद कै ॥ स० ॥७॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन ।

(सती कलूजी हो हुआ सयमनें त्यार पदेशी)

तीर्थंकर हो चोथा जग भाण। छांडि गृहवास करी मति निरमली। विषय विटम्बन हो तजिया विष फल जाण। अभिनन्दन वान्दूं नित्य मनरली ॥ १ ॥ ए आंकणी। दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल ॥

ध्यान सुधारस सम दम मन गली। संग त्याग्यो हो जाणी माया जाल ॥ अ० ॥ २ ॥ वीर रसे कारी हो कीधो तपस्या विशाल। अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली ॥ जग झूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ अ० ॥३॥ आत्म मंत्री हो सुख दाता सम परिणाम ॥ एहीज असिव अशुभ भावे कलकली ॥ एहवी भावन हो भायां जिन गुण धाम ॥ अ० ॥ ४ ॥ लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान ॥ चायक श्रेणी चढी हुआ केवली ॥ प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ अ० ॥ ५ ॥ उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाणा ॥ तन मन प्रेम पाया जन सांभली ॥ तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ अ० ॥ ६ ॥ जिन अभिनंदन हो गाया तन मन प्यार ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रव अधदली ॥ सुदी इग्यारस हो हुओ हर्ष अपार ॥ अ० ॥७॥

श्री सुमति जिन स्तवन ।

(मूरख जीवडा रे गाफिल मत रहे)

सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ सुमति करण संसार ॥ सुमति जप्यां थी सुमति वधे घणी ॥ सुमति सुमति दातार ॥ सु० ॥१॥ ए आंकणी ॥ ध्यान सुधा-रस निर्मल ध्यायने ॥ पाम्या केवल नाण ॥ वाण सरस

वर जन बहु तारिया ॥ तिमिर हरण जग भाण ॥ सु० ॥ २ फटिक सिंहासण जिनजी फावता ॥ तरु अशोक उदार ॥ छत्र चामर भामण्डल झलकतो ॥ सुर दुंदुभि झिणकार ॥ सु० ॥ ३ ॥ पुष्प वृष्टि वर सुर ध्वनि दीपती ॥ साहिब जग शिणगार ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं ॥ ए द्वादस गुण श्रीकार ॥ सु० ॥४॥ वाणी अमी सम उपशम रस भरी ॥ दुर्गति मूल कषाय । शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या ॥ जग तारक जिन राय ॥ सु० ॥ ५ ॥ अंतरजामीरे शरणे आपरे ॥ हूं आयो अवधार ॥ जाप तुमारोरे निश दिन संभरूं ॥ शरणागत सुखकार ॥सु०॥६॥ संवत उगणीसेरे सुदी पक्ष भाद्रवे ॥ वारस मंगलवार सुमतिजिनेश्वर तन मनस्यूं रटा आनन्द उपनो अपार ॥ सु० ॥ ७ ॥

पद्मम जिन स्तवन ।

(जिन्दवैरी देशी छै सुणभगते भगवन्तके परदेशी)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु ॥ पद्म प्रभु पिछाणर संयम लीधो तिण समै ॥ पाया चोथो नाण ॥ पद्म प्रभु नित्य समरिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ध्यान शुक्ल प्रभु ध्यायनें ॥ पाया केवल सोय २ दीन दयाल तणी

दिशा ॥ कहणी नावे कोय ॥ पद्म० ॥ २ ॥ सम दम उपशम रस भरी ॥ प्रभु आपरी वाणा ॥ त्रिभुवन तिलक तूंही सही ॥ तूँही जनक समान ॥ पद्म ॥३॥ तूं प्रभु कल्प तरु समो । तूं चिन्तामणि जोय २ ॥ समरण करतां आपरो ॥ मन वंछित होय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥ सुखदायक सहु जग भणी ॥ तुंही दीन दयाल २ शरणे आयो तुझ साहिवा ॥ तूंही परम कृपाल ॥ पद्म० ॥५॥ गुणगातां मन गहगहे ॥ सुख सम्पति जाण २ ॥ विघ्न मिटे समरण कियां ॥ पामै परम कल्याण ॥ पद्म० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसैनें भाद्रवे ॥ सुदी बारस देख ॥पद्म प्रभु रटा लाडनूं ॥ हुओ हर्ष विशेष पद्म० ॥ ७ ॥

श्री सुपास जिन स्तवन ।

(कृपण दीन अनाथए एदेशी)

सुपास सातमां जिणंद ए ॥ ज्यांने सेवै सुर नर वृन्दए ॥ सेवक पूरण आशए ॥ भजिये नित्य स्वामि-सुपासए ॥१॥ एआंकणी ॥ जन प्रतिबोधण कामए ॥ प्रभु वागरै वाणा अमामए ॥ संसार स्यूं हुवै उदासए॥ भ० ॥२॥ पामै काम भोगथी उद्वेगए ॥ वलि उपजै परम संवेगए ॥ एहवा तुम वच सरस विलासए ॥

परम सवेगए ॥ एहवा तुम वच सरस विलासए ॥ भ० ॥ ३ ॥ घणी मीठी चक्रीनी खीर ए ॥ वलि खीर समुद्रनो नीर ए ॥ इहथी तुम वच अधिक विमासए ॥ भ० ॥ ४ ॥ साभलनें जन वृन्द ए ॥ रोम रोम मे पामे आनन्द ए ॥ ज्यांरी मिटे नरकादिक वास ए ॥ भ० ॥ ५ ॥ तुं प्रभु दीन दयाल ए ॥ तुंही असरण शरण निहाल ए ॥ हूँ छूं तुमारो दास ए ॥ भ० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसै सोय ए ॥ भाद्रवा सुदी तेरस जोय ए ॥ पहुंचो मननी आश ए ॥ भ० ॥ ७ ॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन ।

(शिवपुर नगर सुहामणो एदेशी)

हो प्रभु चंद जिनेश्वर चद जिस्या ॥ वाणी शीतल चन्दसी न्हालहो ॥ प्रभु उपशम रस जन, सांभलै ॥ मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो ॥ प्रभु० ॥१॥ एआकणी ॥ हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी ॥ बारु रूप अनूप विशाल हो ॥ प्रभु इन्द्र शची जिन निरखती ॥ ते तो दृप्त न होवे निहाल हो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ अहो वीतराग प्रभु तूं सही ॥ तुम ध्यान ध्यावे चित्त रोक हो ॥ प्रभु तुम तुल्य ते हुवे ध्यान स्यूं ॥ मन पाया परम सतोप हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ हो प्रभु लीन पणे तुम ध्यावियां ॥ पामे

इन्द्रादिकनी ऋद्धि हो ॥ वले विविध भोग सुख सम्पदा ॥ लहे आमोसही आदि लब्धि हो ॥प्रभु० ॥४॥ हो प्रभु नरेन्द्र पद पामै सही ॥ चरण सहित ध्यान तन मन हो ॥ प्रभु अहमिन्द्र पद पावे वलि ॥ कियां निश्चल थारो भजन हो ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ हो प्रभु शरण आयो तुझ साहिबा ॥ तुम ध्यान धरूं दिन रयन हो ॥ तुझ मिलवा मुझ मन उमह्यो ॥ तुम शरणा स्यूं सुख चैन हो ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥ संवत उगणीसेनें भाद्रवे ॥ सुदी तेरसनें बुधवार हो ॥ प्रभु चन्द्र जिनेश्वर सम-रिया ॥ हुओ आनन्द हर्ष अपार हो ॥ प्रभु० ॥७॥

श्री सुविध जिन स्तवन ।

(सोही तेरापंथ पावै हो एदेशी)

सुविधि करि भजिये सदा ॥ सुविध जिनेश्वर स्वामी हो ॥ पुष्पदंत नाम दूसरो ॥ प्रभु अन्तरजामी हो ॥ सुविध भजिये शिरनामी हो ॥१॥ एआंकणी ॥ श्वेत वरण प्रभु शोभता बारू बाण अमामी हो ॥ उप-शम रस गुण आगली ॥ मेटण भव भव खामी हो ॥ ॥सु०॥२॥ समवसरण विच फावता ॥ त्रिभुवन तिलक तमामी हो ॥ इन्द्र थकी ओपे घणां ॥ शिवदायक स्वामी हो सु० ॥३॥ सुरेन्द्र नरेन्द्र चन्द्र ते ॥ इन्द्राणी अभिरामी हो ॥ निरख निरख धापे नहीं ॥ एहवो रूप

अमामो हो ।।सु०।।४।। मधु मकरंद तणीपरे । सुर नर करत सलामी हो ॥ तो पिण राग व्यापे नही । कीधो मोह हरामी हो ।। सु० ।।५।। जे जोधा जगमें घणा ।। सिंघ साथे संग्रामी हो ।। ते मन इन्द्रिय वश करी ।। जोडी केवल पामी हो ।। सु० ॥ ६ ।। उगणीसे पुनम भाद्रवी ॥ प्रणमु शिरनामी हो ।। मन चिन्तित वस्तु मिले ।। रटिया जिन स्वामी हो ।। सु० ॥ ७ ॥

श्री शीतल जिन स्तवन ।

(इ देश आइ ओलमडो साहुजी परदेशी)

शीतल जिन शिवदायका ।। साहिबजी ॥ शीतल चंद समान हो ॥ निस्नेही ।। शीतल अमृत साखिवा साहिबजी ।। तप्त मिटे तुम ध्यान हो ।। निस्नेही ।। सूरत थारी मन वसो साहिबजी ॥१॥ वदे निन्दे तो भणी साहेबजी ॥ राग द्वेष नही तास हो ।।निस्नेही।। मोह दावानल तें मेटियो ॥साहिबजी॥ गुणनिष्पन्न तुम नाम हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ २ ॥ नृत्य करे तुझ आगलें साहिबजी ॥ इन्द्राणी सुनार हो ।। निस्नेही ।। राग भाव नही उपजे ।।साहिबजी॥ ते अन्तर तप्त निवार हो ॥ निस्नेही ।। सू० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया लोभ ए ।। साहिबजी ।। अग्निसुं अधिको आगहो ।। निस्नेही ।।

शुक्ल ध्यान रूप जलकरो ॥ साहेवजी ॥ थया शीत लिभूत महाभाग्य हो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥४॥ इन्द्रिय नोइन्द्रिय आकरा ॥ साहेवजी ॥ दुर्जय नै दुर्दान्तहो ॥ निस्नेही ॥ तें जीता मन थिर करी ॥ साहेवजी ॥ धरि उपशम चित शांतहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥५॥ अंतर-जामी आपरो ॥ साहेवजी ॥ ध्यान धरू दिन रैनहो ॥ निस्नेही ॥ उवाही दिशा कद आवसी ॥ साहेवजी ॥ होसी उत्कृष्टो चैनहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥६॥ उग-णीसै पूनम भाद्रवी ॥ साहेवजी ॥ शीतल मिलवा काजहो ॥ निस्नेही ॥ शीतल जिनजीनें समरिया ॥ साहेवजी ॥ हियो शीतल हुओ आजहो ॥ निस्नेही ॥ सू० ॥ ७ ॥

श्री श्रेयांस जिन स्तवन ।

(पुत्र वसुदेवनो एदेशी)

मोक्षमार्गश्रेयशोभता ॥ धारया स्वाम श्रेयांस उदाररे ॥ जे जे श्रेय वस्तु संसारमें ॥ ते ते आप करी अङ्गीकाररे ॥ ते ते आपकरी अंगीकार श्रेयांस जिनेश्वरू प्रणमूँ नित्य वेकर जोड़रे ॥ १ ॥ समिति गुप्ति दुःधर घणा ॥ धर्म शुक्ल ध्यान उदाररे ॥ एश्रेय वस्तु शिव दायनो ॥ आप आदरी हर्ष अपाररे ॥श्रे०॥२॥तन चंचलता मेटनें ॥ पद्मासन आप बिराजरे ॥ उत्कृष्टो ध्यान तणो कियो ॥

आलम्बन श्रीजिनराजरे ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय विषय विकारथी ॥ नरकादिक रुलियो जीवरे ॥ किम्पाक फलनी उपमा ॥ रहिये दूर थी दूर सदीवरे ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ संयम तप जप शीलए ॥ शिव साधन महा सुखकाररे ॥ अनित्य अशरण अनंतए ॥ ध्यायो निर्मल ध्यान उदाररे ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ स्त्रियादिक ना संगते ॥ आलम्बनदुःख दातारे ॥ अशुद्ध आलम्बन छाडने ॥ धर्यो ध्यान आलम्बन साररे ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ शरणे आयो तुझ साहिबा ॥ करूं बारंबार नमस्काररे ॥ उगणीसे पूनम भाद्रवे ॥ सुझ वर्त्या जय जय काररे ॥श्रे०॥७॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ।

(इम जाए जपो थीनंघकार पदेशी)

द्वादशमा जिनवर भजिये ॥ राग द्वेष मच्छर माया तजिये ॥ प्रभु लालवरण तन छवि जाणी ॥ प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी ॥१॥ वनिता जाणी वैतरणी ॥ शिव सुंदर वरवा हंस घणी ॥ काम भोग तज्या किम्पाक जाणी ॥ प्र० ॥२॥ अञ्जन मञ्जन स्यूं अलगा ॥ वलि पुष्प विलेपन नही विलगा ॥ कर्म काप्या ध्यान मुद्रा ठाणी ॥ प्र० ॥३॥ इन्द्र थको अधिका ओपे ॥ करुणागर कदेइ नही कोपे ॥ वर शाकर दूध जिसी वाणी ॥ प्र० ॥ ४ ॥ रवी क्रोड पाशा दुर्दंता ॥ कह्या नरक निगोद तणा पथा ॥

इह भव परभव दुःखदाणी ॥ प्र० ॥ ५ ॥ गज कुम्भ दलै मृगराज हणी ॥ पिण दोहिली निज आत्मा दमणी ॥ इम सुण बहु जीव चेत्या जाणी ॥ प्र० ॥ ६ ॥ भाद्रवी पूनम उगणीसो ॥ कर जोड़ नमूँ वासुपूज्य इसो ॥ प्रभु गांतां रोम राय हुलसाणी ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री विमल जिन स्तवन ।

कांय न मांगा कांय न मांगा हो राणाजी मांगा पूर्ण प्रीत वीजूं
(कांय न मांगा हो पदेशी)

शरणे तिहारे हो विमलप्रभु ॥ सेवकनी अरदाश ॥ आयो शरण तिहारे हो ॥ विमल करण प्रभु विमलनाथजी ॥ विमल आप मल रहीत ॥ विमल ध्यान धरतां हुवे निर्मल ॥ तन मन लागी प्रीत ॥ साहिब शरणे तिहारे हो ॥ १ ॥ विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया ॥ तिण सूं हुआ विमल जगदीश ॥ विमल ध्यान वलि जे कोई ध्यासी ॥ होसी विमल सरीस ॥ सा० ॥२॥ विमल गृहवासे द्रव्य जिनंद्र था ॥ दीक्षा लियां भावे साध ॥ केवल उपना भावे जिनेश्वर ॥ भावे विमल आराध ॥सा०॥३॥ नाम स्थापना द्रव्य विमल थी कारज न सरे कोय ॥ भाव विमल थी कारज सुधरे ॥ भाव जप्यां शिव होय ॥ सा० ॥४॥ गुण गिरवो गंभीर धीर तूं ॥ तूं मेटण जम त्रास ॥ में तुम वयण आगम शिर धाख्या ॥ तूं मुझ पूरण आश ॥

सा० ॥५॥ तूंही कृपाल दयाल तूं साहेब । शिवदायक तूं जगनाथ ॥ निश्चल ध्यान करै तुज ओलख । ते मिले तुझ संघात ॥ सा० ॥ ६ ॥ अंतरजामी आप उजागर ॥ मैं तुम शरणो लीध ॥ संवत उगणीसै भाद्रवी पुंनम वंछित कार्य सिद्ध ॥ सा० ॥ ७ ॥

अनंत जिन स्तवन ।

('पायो युगराजपद पदेशी')

अनंतनाम जिन चउदमारे ॥ द्रव्य चोथे गुणठाण भलाजी काई द्रव्य० ॥ भावे जिन हुवे तेरमेरे ॥ इतले द्रव्य जिन जाण ॥ भलाजी काई इतलै द्रव्य जिन जाण ॥ पायो पद जिनराजनूंरे ॥ शुद्ध ध्यान निरमल ध्याय ॥ भला० पायो पद ॥ १ ॥ जिन चक्री सुर जुगलियारे ॥ वासुदेव-बलदेव भलां० वा० ॥ ए पञ्चमगुण पावे नहीरे ॥ ए रीत अनादि स्वमेव भला० ए० ॥ पा० ॥ २ ॥ संयम लीधो तिण समेरे ॥ आया सातमे गुण-ठाण भला० आ० ॥ अंतर मुहूर्त्त तिहा रहीरे ॥ छठे बहुस्थिति जाण भला० छ० ॥ पा० ॥३॥ आठमा थी दोय श्रेणीछेरे ॥ उपशम खपक पिछाण भला० उ० उपशम जाय इग्यारमैरे ॥ मोह दबावतो जाण भला० मो० पा० ॥४॥ श्रेणी उपशम जिन ना लहैरे ॥ खपक श्रेणी धर खंत म० ख० चारित्रमोह खपावतारे ॥

चढ़िया ध्यान अत्यन्त भ० च० ॥ पा० ॥ ५ ॥ नवमें आदि संजल विहुंरे ॥ अंत समे इक लोभ भ० अं० ॥ दशमे सूक्ष्म मात्रतेरे ॥ सागार उपयोग शोभ भ० सा० ॥ पा० ॥ ६ ॥ एकादशमो उलंघनेरे ॥ बारमें मोह खपाय ॥ भ० वा० ॥ त्रिकर्म एक समै तोड़तारे तेरमें केवल पाय ॥ पा० ॥ ७ ॥ तीर्थ थाप योग रुंधनेरे ॥ चउदमा थी शिवपाय भ० च० ॥ उगणीसे पुनम भाद्र वेरे ॥ अनंत रच्या हरषाय भ० अ० ॥ पा० ॥८॥

॥ ओ स्तवन नीचे लिखे मूजब चाल में भी गायो जावे है ॥

अनंत नाम जिन चवदमां, जिनरायारे ॥ द्रव्य चोथे गुण स्थान, स्वाम सुखदायारे ॥ भावे जिन हुवे तेरमें, जिनरायारे ॥ इतलै द्रव्य जिन जाण, स्वाम सुखदायारे ॥१॥

धर्म जिन स्तवन ।

(भिक्षुपटभारीमालभलके पदेशी)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी ॥ तटक मोहपाश नाख्या तोड़ी ॥ चरण धर्म आतम स्यूं जोड़ी अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ १ ॥ शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना ॥

संवेग रसे करी जिन भीना ॥ प्याला प्रभु उपशमना पीना ॥ ध० ॥२॥ जाण्या शब्दादिक मोह जाला ॥ रमणि सुख किंपाक सम काला ॥ हेतु नरकादिक दुःख थाला ॥ ध० ॥ ३ ॥ पुद्गल शिव अरि जाण्या स्वामी ॥ ध्यान थिर चित्त आत्म धामी ॥ जोडी युग केवलनी पामी ॥ ध० ॥ ४ ॥ थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायी ॥ आख्यो धर्म जिन आज्ञा मायी ॥ आज्ञा वाहिर अधर्म दुःखदायी ॥ ध० ॥५॥ व्रतधर्म धर्मजिन आख्याता ॥ अविरत कही अधर्म दुखदाता ॥ सावद्य निरवद्य जु जुआ कह्या खाता ॥ ध० ॥६॥ बहु जन तार मुक्ति पाया ॥ उगणीमै आसू धुर दिन आया ॥ धर्मजिन रटवे सुख पाया ॥ ध० ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवन ।

हु बलिहारी भीषणजी साधरी ।

शान्तिकरण प्रभु शान्तिनाथजी ॥ शिव दायक सुखकन्दकी ॥ वलिहारी हो शान्ति जिणन्दकी ॥१॥ अमृत वाणी सुधासी अनुपम॥ मेटण मिथ्या मन्दकी ॥ ॥ व० ॥२॥ काम भोग राग द्वेष कटुक फल ॥ विष वेलि मोह धन्दकी ॥ व० ॥३॥ राक्षसणी रमणी वैत-रणी पुतली अशुचि दुर्गंधकी ॥ व० ॥ ४ ॥ विविध उपदेश देइ जन तार्या ॥ हूं वारी जाऊं विश्वानंद

कौ ॥ व० ॥ ५ ॥ परम दयाल गोपाल कृपानिधि ॥ तुझ जप माला आनन्दकी ॥ व० ॥ ६ ॥ सम्वत उगणोसे आसू वदी एकम ॥ शान्ति लता सुख कन्दकी ॥ व० ॥ ७ ॥

श्री कुंथु जिन स्तवन ।

वाल्होतो भावनारो भूखो ।

कुंथु जिनेश्वर करुणा सागर ॥ त्रिभुवन शिर टीकोरे ॥ प्रभुको समरण कर नीकोरे ॥१॥ अद्भुत रूप अनूपम कुंथु जिन ॥ दर्शन जग पीयकोरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ वाणी सुधा सम उपशम रसनी ॥ वाल्हो जग जीकोरे ॥ प्र० ॥ ३ ॥ अनुकंपा दोय श्रीजिन दाखी ॥ धर्म यो समदृष्टिकोरे ॥ प्र० ॥ ४ ॥ असंयतीरो जीवणो वांछै ॥ ते सावद्य तहतीकोरे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ निरवद्य करुणा करी जन तारया ॥ धर्म ए जिनजीकोरे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सम्वत उगणोसे आसू वदी एकम ॥ शरणो साहिबजी-कोरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री अर जिन स्तवन

॥ देखो सहियां बनड़ोए नेमकुमार एदेशी ॥

अर जिन कर्म अरिनां हंता ॥ जगत उद्धारण जिहाज ॥ मोने प्यारा लागैछैजी अर जिनराज ॥

मोनेवालहा लागेछे जी अर महाराज ॥ २ ॥ परीषह उपसर्ग रूप अरि हण ॥ पाया केवल पाज मो० ॥२॥ नयन न धापे निरखताजी ॥ इन्द्राणी सुर राज ॥ मो०॥३॥ वारूंरे जिनेश्वर रूप अनुपम ॥ तूंसुगुणा शिरताज ॥ मो० ॥३॥ वाणी विशाल दयाल पुरुषनी ॥ भूख तृषा जावें भाज ॥ मो० ॥ ५ ॥ शरणे आयो स्वामरेजी ॥ अविचल सुखनें काज मो० ॥६॥ उगणीसे आमू वदी एकम ॥ आनद उपनो आज ॥ मो० ॥७॥

श्री मल्लि जिन स्तवन ।

जय गणेश ३ देवा तथा दीन दयाल जाण चरण ।

नील वर्ण मल्लिजिनेश्वर ॥ ध्यान निर्मल ध्यायो ॥ अल्प काल माही प्रभु ॥ परम ज्ञान पायो ॥ मल्लि जिनेश्वर काल समर तरण शरण आयो ॥ १ ॥ कल्प पुष्पमाल जेम ॥ सुगध तन सुहायो ॥ सुर वधु वर नयण भ्रमर ॥ अधिक ही लिपटायो ॥ म० ॥२॥ स्व पर चक्र विविध विघ्न ॥ मिटत तुझ पसायो ॥ सिघ नाद थकी गजेंद्र जेम दूर जायो ॥ म० ॥३॥ वाणी विमल निर्मल सुधा ॥ रस सवेग छायो ॥ नर सुरासुर त्रिय समझ ॥ सुणतहो हरषायो ॥ म० ॥४॥ जगदयाल तूंही कृपाल ॥ जनकज्यूं सुखसायो ॥ वत्सल नाथ स्वामसाहिब ॥ सुजश तिलक पायो ॥ म०

॥ ५ ॥ जप्त जाप खपत पाप ॥ तप्त ही मिटायो ॥ मल्लि देव त्रिविधि सेव ॥ जग अछेरो पायो ॥ ६ ॥ उगणीसे आसोज तीज कृष्ण सुदिन आयो ॥ कुम्भनंदन कर आनंद ॥ हर्षथी मैं गायो ॥ म० ॥ ७ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

शोरठ ।

भरतजी भूप भयाछो वैरागी ।

सुमित नंदन श्रीमुनिसुव्रत ॥ जगत् नाथ जिन जाणी ॥ चारित लेइ केवल उपजायो ॥ उपशम रसनी वाणीरा ॥ प्रभुजी आप प्रवल वड़ भागी ॥१॥ त्रिभुवन दीपक सागीरा ॥ प्र० ॥ आ० एआंकणी ॥ चौतीस अतिशय पेंत्रीस वाणी ॥ निरखत सुर इन्द्राणी ॥ संवेग रसनी वाणी सांभल ॥ हर्षस्युं आंख्यां भराणीरा ॥प्र० ॥ आ० ॥ २ ॥ शब्द रूप रस गंधनें स्पर्श प्रतिकूल न हुवै तुम आगै ॥ ज्युं पंच दर्शन थास्युं पग नहीं मांडे ॥ तिम अशुभ शब्दादिक भागैरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥३॥ सुरकृत जल स्थल पुष्प पुंजवर ॥ तैछांडी चित्त दीनो ॥ तुझ निश्वास सुगंध सुख परिमल मन-भ्रमर महा लीनोरा ॥ प्र० ॥ आ० ॥४॥ पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुमस्युं ॥ किम हुवै दुखदायो ॥ एकेन्द्री

अनिल तजे प्रतिकूल पणुं ॥ वाजे गमतो वायोरा ॥ प्र० आ० ॥५॥ राग द्वेष दुर्दंत ते दमिया ॥ जीत्या विषय विकारो ॥ दीन दयाल आयो तुझ शरणे ॥ तूंगति मति दातारोरा ॥ प्र० आ० ॥६॥ सम्वत उगणीसे आसोज तीज कृष्णा श्री मुनिसुव्रत गाया ॥ लाडनूं शहर माहि रूडी रीते आनंद अधिको पायारा ॥ प्र० आ० ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन ।

धरम गुरु पुज्यजी मुझ प्यारारे ।

नमिनाथ अनाथारानाथोरे ॥ नित्य नमण करूं जोडी हाथोरे ॥ कर्म काटण धीर विख्यातो ॥ प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारारे ॥ १ ॥ प्रभु ध्यान सुधारस ध्यायारे ॥ पद केवल जोडीपाया रे ॥ गुण उत्तम उत्तम आया ॥ प्र० ॥२॥ प्रभु वागरी वाण विशालोरे ॥ खीर समुद्रथी अधिक रसालोरे ॥ जगतारक दिन दयालो ॥ प्र० ॥३॥ थाप्या तीर्थ च्यार जिणंदोरे ॥ मिथ्या तिमिर हरणनें मुणंदोरे ॥ त्यानें सेवे सुर नर वृन्दो ॥ प्र० ॥ ॥४॥ सुर अनुत्तर विमाणना सेवेरे ॥ प्रश्नपूछ्या उत्तर जिन देवेरे ॥ अवधिज्ञान करी जाणलेवे ॥ प्र० ॥ तिहां बेठा ते तुम ध्यान ध्यावेरे ॥ तुम योग मुद्रा चित्त चाहवेरे ॥ ते पिण आपरी भावना भावे ॥प्र०॥६॥

उगणीसे आसोज उदारोरे कृष्ण चोथ गाया गुण धारोरे ॥ हुओ आनंद हर्ष आपारो ॥ प्र० ॥ ७ ॥

श्री अरिष्टनेमि जिन स्तवन ।

छिणगईरे ।

प्रभु नेमिस्वामी ॥ तूं जगनाथ अंतरजामी तूं तोरण स्युं फिरयो जिनस्वाम अद्भुत बात करी तें अमाम ॥प्रभु०॥१॥ राजिमती छांड़ी जिनराय॥ शिव सुन्दर स्युं प्रीत लगाय ॥ प्रभु० ॥२॥ केवल पाया ध्यान वर ध्याय ॥ इन्द्र शची निरखे हर्षाय ॥प्र०॥३॥ नेरिबा पिण पामें मन मोद ॥ तुझ कल्याण सुर करत विनोद प्र० ॥४॥ राग रहित शिव सुखस्युं प्रीत कर्म हणे वलो द्वेष रहित ॥प्र०॥५॥ अचरिज कारी प्रभु थारो चरित्र॥ हूं प्रणमूं कर जोड़ी नित्य ॥ प्र० ॥ ६ ॥ उगणीसे वदी चोथ कुमार ॥ नेमि जप्यां पायो सुखसार ॥प्र० ॥७॥

श्री पार्श्व जिन स्तवन ।

पूज्य भीखनजी तुमारा दर्शन ।

लोह कंचन करै पारस काचो ॥ ते कहो कर कुण लेवै हो ॥ पारस तूं प्रभु साचो पारस । आप समो कर देवै हो॥ पारसदेव तुमारा दर्शन। भाग भला सोई पावै हो ॥१॥ तुझ मुख कमल पासे चमरावलि!

चंद्र क्रान्तिवत सोहे हो॥ इस श्रेणि जाणे पंकज सेवे। देखत जन मन मोहे हो॥ पारस० ॥ २ ॥ फटिक सिंहासण सिंह आकारे। बैठ देशना देवे हो॥ वन मृग आवे वाणी सुणवा। जाणकि सिंह नें सेवे हो॥ पारस० ॥३॥ चन्द समो तुझ मुख महा शीतल। नयन चकोर हर्षावे हो॥ इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर रमणी। निरखत तृपति न पावे हो॥ पारस० ॥ ४ ॥ पाखण्डी सरागी आप निरागी। आपसमें इमगैरी हो॥ वैर भाव पाखण्डी राखे। पिण आप त्यांरा नहीं वैरी हो॥ पारस० ॥५॥ जिम सूर्य खद्योत उपरें। वैरभाव नहीं आणे हो॥ प्रभु पिण इण विधि पाखडिया नें। खद्योत सरीखा जाणे हो॥ पा० ॥ ६ ॥ परम दयाल कृपाल पारस प्रभु संवत उगणीसैं गाया हो॥ आसोज कृष्ण तिथि चोथ लाडणूं। आनन्द अधिको पाया हो॥ पारस० ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिन स्तवन ।

कपिरे प्रिया संदेशी कहे ।

चरम जिनेन्द्र चोवोसमा जिन। वधइणावा महावीर॥ बिकट तप वर ध्यान कर प्रभु। पाया भव जल तीर॥ नहीं इसो दूसरो जगवीर॥ उपसर्ग सहिवा अडिग जिनवर। सुर गिर जेम सधीर॥ नहीं ॥ १ ॥

संगम दुःख दिया आकरारे। पिण सुप्रसन्न निजर दयाल॥ जग उद्धार हुवै मो थकीरे। ए डूबे इण कात नहीं॥ २॥ लोक अनार्य बहु किया रे। उपसर्ग विविध प्रकार॥ ध्यान सुधारस लीनता जिन। मन में हर्ष अपार॥ नहीं॥ ३॥ इण पर कर्म खपाय नें प्रभु। पाया केवल नाण॥ उपशम रसमय वागरी प्रभु। अधिक अनुपम वाण॥ नहीं॥ ४॥ पुद्गल सुख अरि शिव तणारे। नरक तणा दातार॥ छोड़ि रमणि किंपाक बेलि। संवेग संयम धार॥ नहीं॥५॥ निन्दा स्तुति सम पणेरे। मान अनें अपमान॥ हर्ष शोक मोह परिहरयां रे। पामै पद निर्वाण॥ नहीं॥६॥ इम बहुजन प्रभु तारिया रे प्रणमूं चरम जिनेंद॥ उगणीसै आसोज चोथ वदी। हुओ अधिक आनन्द॥ नहीं॰ ॥७॥

इति श्रीभीखणजी स्वामी तस्य शिष्य भारीमालजी स्वामी, तस्य शिष्य ऋषिरायचन्दजी स्वामी तस्य शिष्य जीतमलजी स्वामी कृत चतुर्विंसति जिनस्तुति समाप्तः

॥ दुहा ॥

नमूं देव अरिहन्त नित्य जिनाधिपति जिनराय ॥
द्वादश गुण सहितजे वंदू मन वच काय ॥ १ ॥
नमू सिद्ध गुण अष्टयुत आचार्य मुनिराज ॥
गुण षट तीस सयुतजे प्रणमुं भव दधि पाज ॥ २॥
प्रणमूं फुन उवज्झाय प्रति गुण पणवीस उदार ॥
नमूं सर्व साधु निर्मल सप्तवीस गुण धार ॥ ३ ॥
द्वादश अठ षट तीस फुन वली पण वीस प्रगट ॥
सप्तवीस ए सर्वहो गुण वर इकसय अठ ॥ ४ ॥
नोकरवाली ना जिके मिणियां जगत् मझार ॥
एक २ जे गुण तणों एक २ मिणियोंसार ॥ ५ ॥

॥ णमो अरिहन्ताणं ॥

नमस्कार थावो अरिहंत भगवंतने ।

ते अरिहंत भगवंत कहवा छे १२ बारे गुणे करी सहित छे ते कहे छे अनन्तो ज्ञान १ अनन्तो दर्शण २ अनन्तो बल ३ अनन्तो सुख ४ देव ध्वनि ५ भा मण्डल ६ फटिक सिंघासण ७ अशोकवृक्ष ८ पुष्प विष्टी ९ देव दुंदवी १० चमरवींजे ११ छत्र धारे १२

॥ णमो सिद्धाणं ॥

नमस्कार थावो सिद्ध भगवंतने ।

ते सिद्ध भगवंत केहवा छै । आठ गुणे करी सहित छै ते कहै छे । केवल ज्ञान केवलदर्शण २ आत्मीक सुख ३ क्षायक समकित ४ अटल अवगाहणा ५ अमुर्त्तिभाव ६ अगुरुलघुभाव ७ अन्तराय रहित ८

॥ णमो आयरियाणं ॥

नमस्कार थावो आचार्य महाराजने ।

ते आचार्य महाराज केहवा छै । ३६ षट त्रीस गुणे करी सहित छै ते कहै छै । आरजदेश ना उपनां १ आरज कुल ना उपनां २ जातवंत ३ रूपवंत ४ थिर संघयेण ५ धीरजवंत ६ आलोवणां दूसरा पासे कहै नहीं ७ पोतेरा गुण पोते वर्णन न करे ८ कपटी न होवै ९ शब्दादिक पांच इन्द्री जीते १० राग द्वेष रहित होवै ११ देश ना जाण होवै १२ काल नां जाण होवै १३ तीक्षण बुद्धि होवै १४ घणां देशांरी भाषा जाणै १५ पांच आचार सहित १६ सूत्रांरा जाण होवै १७ अर्थरा जाण होवै १८ सूत्र अर्थ दोनोंरा जाण होवै १९ कपटकारी पूछै तो छलावै नहीं २० हेतुनां जाण होवै २१ कारणरा

जाण होवे २२ दिष्टान्त ना जाण होवे २३ न्यायरा जाण होवे २४ सीखर्ण समर्थ २५ प्राश्चितना जाण होवे २६ थिर परिवार २७ थाटेज वचन बोले २८ परीषह जीते २९ समय परसमय ना जाण ३० गंभीर होवे ३१ तेजवंत होवे ३२ पण्डित विचक्षण होवे ३३ सोम चन्द्रमाजिसा ३४ शूरवीर होवे ३५ बहु गुणी होवे ३६

पुनः

५ पाच इन्द्री जीते ४ च्यार कषायटाले नववाड सहित ब्रह्मचर्य पाले ५ पच महाव्रत पाले ५ पंच आचार पाले ज्ञान १ दर्शन २ चारित्र ३ तप ४ विर्य ५ ५ पच समिति पाले इर्या १ भाषा १ येषणा ३ आदान भड निक्षेपण ४ उच्चार पासवण ५ ३ तीन गुप्ती मन १ वचन २ कायगुप्ती ३

इति षट तीस गुण सपूर्ण।

॥ णमो उवज्झायाणं ॥

नमस्कार थावो उपाध्याय महाराजने।

ते उपाध्याय महाराज केहवा छे २५ पचवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे १ १४ चवदे पूरव ११ इग्यारे अंग भणे भणावे।

पुनः

११ इग्यारे अंग १२ बारे उपांग भणे भणावे ।

॥ णमो लोएसव्वसाहूणं ॥

नमस्कार थावो लोकने वषे सर्व साधु मुनिराजोंने ।

ते साधु मुनिराज केहवा छे सत्तवीस गुणे करी सहित छे ते कहे छे । ५ पंच महाव्रत पाले ५ इन्द्री जीते ४ च्यार कषाय टाले भाव संचेय १५ करण संचेय १६ जोग संचेय १७ क्षम्यावन्त १८ वैराग्यवन्त १९ मनसमांधारणीया २० वचन समांधारणीया २१ कायसमांधारणीया २२ नाणसंपणा २३ दर्शनसंपना २४ चारित्र संपना २५ वेदनी आयां समो अहियासे २६ मरणआयां समो अहियासे २७ ॥

इति संपूर्णम् ।

॥ सामायक लेणेकी पाटी ॥

करेमिभन्ते सामायियं सावज्जं जोगं ।

पच्चखामि जावनियम (मुहूर्त एक) पज्जवासामी दुविहिं तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसावायसा कायसा तस्स भन्ते पड़िक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥

॥ सामायक पारणेकी पाटी ॥

नवमा सामायक व्रतनें विषे ज्यो कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोऊ १ सामायकमे सुमता नकीधी विकथाकीधी हुवे अणपूरी पारी होय पारवो विसार्यो होय मन वचन कायाका जोग माठा परवर्ताया होय सामायकमे राज कथा देशकथा स्त्रीकथा भक्ताकथा करी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ अथ तिरखुताकी पाटी ॥

तिक्खुतो आयाहिण पयाहिण वन्दामि नमसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मगलं देव्वय चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वन्दामी ।

॥ अथ पंच पद वन्दणा ॥

पहले पदे श्री सीमधर स्वामी आदि देई जघन्य २० (वीस) तीर्थंकर देवाधिदेवजी उत्कृष्टा १६० (एकसो साठ) तीर्थंकर देवाधिदेवजी ५च महाविदेह क्षेत्राके विषे विचरेछे अनन्त ज्ञानका धणी अनत दर्शनका धणी अनन्त चारित्रका धणी अनन्त वल का धणी एक हजार आठ लक्षणाका धारणहार

चौसठ इन्द्रांका पूजनीक चौतीस अतिशय पैंतीस वाणी द्वादश गुण सहित विराजमान छै ज्यां अरिहन्ता से मांहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालुम होज्यो।

दूजे पदे अनन्ता सिद्ध पनरा भेदे अनन्ती चोवीसी आठ कर्म खपायनें सिद्ध भगवान मोक्ष पहुंता तिहां जनम नहीं जरा नहीं रोग नहीं सोग नहीं मरण नहीं भय नहीं संयोग नहीं वियोग नहीं दुःख नहीं दारिद्र नहीं फिर पीछा गर्भावासमें आवे नहीं सदा काल साश्वता सुखामें विराजमान छै इमा उत्तम सिद्ध भगवन्ता से मांहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालुम होज्यो।

तीजे पदे जघन्य दोय कोड़ केवली उत्कृष्टा नव कोड़ केवली पञ्चमाहविदेह क्षेत्रांमें विचरे छै केवल ज्ञान केवल दर्शनका धारक लोकालोक प्रकाशक सर्व द्रव्य क्षेत्र काल भाव जाणे देखे छै ज्यां केवलीजी से मांहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालुम होज्यो॥

चौथे पद गणधरजी आचार्यजी उपाध्यायजी स्थविरजी तेगणधरजी महाराज केहवा छै अनेक गुणे करी विराजमान छै आचार्यजी महाराज केहवा छै षटतीस गुणे करी विराजमान छै उपाध्यायजी महाराज केहवा-

छे पचवीसगुणे करी विराजमान छे स्थविरजी महाराज कीहवा छे धर्मसे डिगता हुआ प्राणीनें थिरकरी राखे शुद्ध आचार पाले पलावे ज्या उत्तम पुरुषा से म्हारी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालुम होज्यो।

पञ्चमे पदे म्हारा धर्म आचारज गुरु पूज्य श्री श्रीश्री १००८ श्रीश्रीकालूरामजी स्वामी (वर्त्तमान आचारजको नाव लेणो) आदि जघन्य दोय हजार कोड साधु साध्वी जाभेरा उत्कृष्टा नवहजार कोड़ साधु साध्वो अढाई द्वीप पन्दरै खेत्रामें बिचरै छे ते महा उत्तम पुरुष कीहवा छे पञ्च महाव्रतका पालणहार छव कायाना पीयर पञ्च समिति सुमता तीन गुप्ती गुप्ता नववाड सहित ब्रह्मचर्य्यका पालक-दशविधि यति धर्मका धारक बारै भेदे तपस्याका करणहार सतरै भेदे संयमका पालणहार बावीस परीषहका जीतणहार सतावीस गुणे करी सयुक्त बयालीस दोष टाल आहार पाणीका लेवणहार बावन अणाचारका टालणहार निरलोभी निरलालची ससारना त्यागी मोक्षना अभिलाषी ससारमे मूठा मोक्षसे स्हामा सचित्तका त्यागी अचित्तका भोगी - अस्वादीत्यागी वैरागी तेड़िया आवै नही नोतिया जीमै नही मोलकी वस्तु लेवे - नही कनक कामणीसे न्यारा वायरानी

परै अप्रतिबन्ध विहारी इसा महापुरुषांसे मांहरी वन्दना तिख्खुताका पाठसे मालूम होज्यो ।

॥ अथ पच्चीस बोल ॥

१ पहिले बोले गति च्यार ४

नर्कगति १ तिर्यंचगति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४

२ दूजे बोले जाति पांच ५

एकेन्द्री १ बेइन्द्री २ तेइन्द्री ३ चोइन्द्री ४ पचेंद्री ५

३ तीजे बोले काया छव

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वाउकाय ४ बनस्पतिकाय ५ त्रसकाय ६

४ चौथे बोले इन्द्री पांच

श्रोतइन्द्री १ चक्षुइन्द्री २ घ्राणइन्द्री ३ रसइन्द्री ४ स्पर्शइन्द्री ५

५ पांचमें बोले पर्याय ६

आहारपर्याय १ शरीरपर्याय २ इन्द्रियपर्याय ३ श्वासोश्वासपर्याय ४ भाषापर्याय ५ मनपर्याय ६

६ छठे बोले प्राण १०

श्रोतइन्द्रीबलप्राण १ चक्षुइन्द्रीबलप्राण २ घ्राणइन्द्रीबलप्राण ३ रसेन्द्रीबलप्राण ४ स्पर्शइन्द्रीबलप्राण ५ मनबलप्राण ६ बचनबलप्राण ७ कायाबलप्राण ८

श्वासोश्वासवलप्राण ९ आउषोवलप्राण १०

७ सातमे बोले शरीर पाच ५

औदारिक शरीर १ वैक्रियशरीर २ आहारिक शरीर ३ तेजसशरीर ४ कार्मणशरीर ५

८ आठवें बोले जोग पन्दराह १५

४ च्यार मनका

सत्यमनजोग १ असत्यमनजोग २ मिश्रमनजोग ३ व्यवहारमनजोग ४

४ च्यारवचनका

सत्यभाषा १ असत्यभाषा २ मिश्रभाषा ३ व्यवहार भाषा ४

७ सातकायाका

औदारिक १ औदारिक मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय मिश्र ४ आहारिक ५ आहरिक मिश्र ६ कार्मण जोग ७

९ नवमें बोले उपयोग बारह १२

५ पाच ज्ञान

मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५

३ तीन अज्ञान

मतिअज्ञान १ श्रुतिअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३

४ च्यारदर्शण

चक्षु दर्शण १ अचक्षु दर्शण २ अवधिदर्शण केवल दर्शण ४

१० दशमें बोलै कर्म आठ ८

ज्ञानावर्णी कर्म १ दर्शणावर्णी कर्म २ वेदनी कर्म ३ मोहनी कर्म ४ आयुष्य कर्म ५ नामकर्म ६ गोत्रकर्म ७ अंतरायकर्म ८

११ ग्यारमें बोलै गुण स्थान चौदाह १४

१ पहिलो मिथ्याती गुणस्थान ।

२ दूजो साहस्वादान समदृष्टि गुणस्थान ।

३ तीजो मिश्र गुणस्थान ।

४ चौथो अव्रती समदृष्टि गुणस्थान ।

५ पांचमो देशविरती श्रावक गुणस्थान ।

६ छट्ठो प्रमादी साधु गुणस्थान ।

७ सातवों अप्रमादी साधु गुणस्थान ।

८ आठवों नियट बादर गुणस्थान ।

९ नवमों अनियट बादर गुणस्थान ।

१० दशमो सुक्षम संप्राय गुणस्थान ।

११ इग्यारमूं उपशान्ति मोह गुणस्थान ।

१२ बारमूं क्षीण मोहनी गुणस्थान ।

१३ तेरमूं संयोगी केवली गुणस्थान ।

१४ चौदमूं अयोगी केवली गुणस्थान।

१२ बारमें बोलै पाच इन्द्रियाकी तेवीस विषय

श्रोतइन्द्रीकी तीन विषय—

जीव शब्द १ अजीव शब्द २ मिश्र शब्द ३

चक्षू इन्द्रीकी पाच विषय—

कालो १ पीलो २ धोलो ३ रातो ४ लीलो ५

घ्राण इन्द्री की दोय विषय—

सुगन्ध १ दुर्गन्ध २

रस इन्द्री की पाच विषय—

खट्टो १ मीठो २ कडवो ३ कसायलो ४ तीखो ५

स्पर्श इन्द्रीकी आठ विषय—

हलको १ भारी २ खरदरो ३ सुहालो ४ लूखो ५
चोपड्यो ६ ठढो ७ उन्हो ८

१३ तेरमें बोलै दश प्रकारका मिथ्याती।

१ जीवनें अजीव श्रद्धे ते मिथ्याती।

२ अजीवने जीव श्रद्धे ते मिथ्याती।

३ धर्मनें अधर्म श्रद्धे ते मिथ्याती।

४ अधर्मनें धर्म श्रद्धे ते मिथ्याती।

५ साधुने असाधु श्रद्धे ते मिथ्याती।

६ असाधुने साधु श्रद्धे ते मिथ्याती।

७ मार्गने कुमार्ग श्रद्धे ते मिथ्याती।

८ कुमार्गनें मार्ग श्रद्धे ते मिथ्याती।

९ मोक्षगयानें अमोक्षगया श्रद्धे ते मिथ्याती।

१० अमोक्षगयानें मोक्षगया श्रद्धे ते मिथ्याती।

१४ चौदमें बोले नवतत्वको जाग पणो तींका

११५ एकसौ पन्दराह बोल

१४ चौदाह जीवका—

सुक्ष्म एकेन्द्रीका दोय भेद—

१ पहिलो अपर्याप्तो २ दूसरो पर्याप्तो

बादर एकेन्द्रीका दोय भेदः—

३ तीजो अपर्याप्तो ४ चौथो पर्याप्तो

बेइन्द्रीका दोय भेदः—

५ पांचमूं अपर्याप्तो ६ छट्ठो पर्याप्तो

तेइन्द्रीका दो भेदः—

७ सातमूं अपर्याप्तो ८ आठमूं पर्याप्तो

चोइन्द्रीका दोय भेदः—

९ नवमूं अपर्याप्तो १० दशमूं पर्याप्तो

असन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

११ इग्यारमूं अपर्याप्तो १२ बारमूं पर्याप्तो

सन्नी पंचेन्द्रीका दोय भेदः—

१३ तेरमूं अपर्याप्तो १४ चौदमूं पर्याप्तो

१४ चौदे अजीवका भेदः—

धर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

अधर्मास्ति कायका ३ तीन भेदः—

खंध, देश, प्रदेश,

आकाशास्ति कायका ३ भेदः—

खन्ध, देश, प्रदेश,

कालको दशमूं भेद (ए दश भेद अरूपी छे)

पुद्गलास्ति कायका ४ च्यार भेदः—

खन्ध, देश, प्रदेश, परमाणु

९ पुन्य नव प्रकारेः—

अन्नपुन्य १ पाणपुन्य २ लेणपुन्य * ३ सयणपुन्य * ४ वत्थपुन्य ५ मनपुन्य ६ वचनपुन्य ७ कायापुन्य ८ नमस्कारपुन्य ९

१८ पाप अठारे प्रकारः—

प्राणाति पात १ मृषावाद * २ अदत्तादान ३ मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९ राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य* १४ परपरीवाद १५ रतिअरति १६ मायामृषा १७ मिथ्यादर्शन शल्य १८

---

*लेण जागा जमीनादिक *सयन पाट पाजोटा दिक
*वाद बोलना *पैशुन्य चुगली

२० बीस आस्रवका:—

मिथ्यात्व आस्रव १ अव्रत आस्रव २ प्रमाद आस्रव ३ कषाय आस्रव ४ जोग आस्रव ५ प्राणातिपात जीवकी हिंसा करैते आस्रव ६ मृषावाद झुठ बोलै ते आस्रव ७ अदत्तादान चोरी करैते आस्रव ८ मैथुन सेवै ते आस्रव ९ परिग्रह राखै ते आस्रव १० श्रुत इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव ११ चक्षु इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १२ घ्राण इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १३ रस इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १४ स्पर्श इन्द्री मोकली मेलै ते आस्रव १५ मनप्रवर्तावै ते आस्रव १६ वचनप्रवर्तावै ते आस्रव १७ कायाप्रवर्तावै ते आस्रव १८ भराडोपगरणमेलतांअजयणाकरै ❀ ते आस्रव १९ सुई कुसाग्रमात्र सेवै ते आस्रव २०

२० बीस संवरका :—

सम्यक् ते संवर १ व्रत ते संवर२ अप्रमाद ते संवर ३ अकषाय संवर ४ अजोग संवर ५ प्राणातिपात न करै ते संवर ६ मृषावाद न बोलै ते संवर ७ चोरी न करै ते संवर ८ मैथुन न सेवैते संवर ९ परिग्रह न राखै ते संवर १०

❀ अजयणा यत्नां

श्रुत इन्द्री वशकरै ते संवर ११ चक्षु इन्द्री वशकरै ते संवर १२ घ्राणइन्द्री वशकरै ते संवर १३ रसिइन्द्री वशकरै ते संवर १४ स्पर्शइन्द्री वशकरै ते संवर १५ मन वशकरै ते संवर १६ वचन वशकरै ते संवर १७ काया वशकरै ते संवर १८ भण्ड उपगरण मेलता अजयणा न करै ते संवर सुई कुसाग्र न सेवै ते संवर २०

१२ निरजरा बारै प्रकारै —

अणसण* १ उणोदरी* २ भिक्षाचरी ३ रसपरित्याग ४ कायाक्लेश ५ प्रतिसंलेषना ६ प्रायश्चित्त ७ विनय ८ वेयावच्च ९ सिज्झाय १० ध्यान ११ विउसग्ग १२

४ बंध च्यार प्रकारै —

प्रकृतिबंध १ स्थितिबंध २ अनुभाग बन्ध ३ प्रदेशबन्ध ४

४ मोक्ष च्यार प्रकारै:—

ज्ञान १ दर्शण २ चारित्र ३ तप ४

१५ पदरमें बोलै आत्मा आंठ:—

---

* अनसण उपवासादिक।
* उणोदरी कमखाना।
* विउसग्ग निर्ममत्वो।

द्रव्य आत्मा १ कषाय आत्मा २ योग आत्मा ३ उपयोग आत्मा ४ ज्ञान आत्मा ५ दर्शण आत्मा ६ चारित्र आत्मा ७ वीर्य आत्मा ८

१६ सोलमें बोलै डंडक चौवीस २४:—

७ सातनारकियां को एक दंडक

१० दशदंडक भवनपतिका:—

असुर कुमार १ नाग कुमार २ सोवन कुमार विद्युत कुमार ४ अग्निकुमार ५ दीपकुमार २ उदधिकुमार ७ दिसा कुमार ८ वायु कुमार ६ स्तनित कुमार १०

५ पांचथावरका पंच दंडक:—

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय २ तेउकाय ३ वायुकाय बनस्पतिकाय ५

१ बेइन्द्री को सतरमों

१ तेइन्द्री को अठारमों

१ चौइन्द्री को उगणीसमो

१ तर्यञ्च पंचेंद्री को बीसमों

१ मनुष्य पंचेंद्री को इकबीसमों

१ वाणव्यंतर देवतांको बावीसमों

१ ज्योतषी देवतांको तेंबीसमो

१ वैमांनिक देवतांको चौवीसमो

१७ सतरवें बोले लेश्या छ. ६ —

कृष्ण लेश्या १ नील लेश्या २ कापोत लेश्या ३ तेजुलेश्या ४ पद्म लेश्या ५ शुक्ल लेश्या ६

१८ अठारमे बोले दृष्टि ३ तीन:—

सम्यक् दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि २ समभिथ्या दृष्टि ३

१९ उगणीसमे बोले ध्यान ४ च्यार.—

आर्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४

२० वीसमे बोले षट द्रव्यको जाणपणो

धर्मास्तिकायनें पाचा बोला ओलखोजै —

द्रव्यथकी एक द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथकी जीव पुदगलने हालवा चालवाकी साभ, अधर्मास्तिकायने पाचा बोला ओलखोजे — द्रव्यथी एक द्रव्य खेतथो लोकप्रमाणे काल थकी आदि अन्त रहित भाव थी अरूपी गुणथी थिररहवानो साभ, आकाशास्तिकायनें पाचा बोलाकरी ओलखीजे :—द्रव्यथी एक द्रव्य खेतथी लोक अलोक प्रमाणे कालथी आदि अत रहित भाव थी अरूपी गुणथी भाजन गुण कालने पाचा बोला करी ओलखीजे —द्रव्यथी

अनन्ता द्रव्य खेतथी अढाई द्वीप प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी अरूपी गुणथी वर्त्तमानगुण पुद्गलास्तिकायने पांच बोलकरी ओलखीजे:--द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अन्त रहित भावथी रूपी गुणथी गले* मले, जीवा-स्तिकायनें पांच बोल करी ओलखीजे:—द्रव्यथी अनन्ता द्रव्य खेतथी लोक प्रमाणे कालथी आदि अंत रहित भावथी अरूपी गुणथी चैतन्य गुण।

२१ इकवीसमें बोलै राशि २ होय :—

जीवराशि १ अजीवराशि २

२२ बावीसमें बोलै श्रावक का १२ बारे व्रत:--

१ पहिला व्रतमें श्रावक स्थावर जीव हणवाको प्रमाण करै और त्रस जीव हालतो चालतो हणवाका सउपयोग त्याग करै।

२ दूजा व्रतमें मोटको झूठ बोलवाका सउपयोग त्याग करै।

३ तीजा व्रतमें श्रावक राजडण्डे लोकभण्डे इसी मोटकी चोरी करवाका त्याग करै।

---

* गले मले = घटै वधै अथवा जुदा एकत्र होय।

४ चौथा व्रतमे श्रावक मर्याद उपरात मैथुन सेवा का त्याग करै।

५ पाचमा व्रतमें श्रावक मर्यादा उपरात परिग्रह राखवाका त्याग करै।

६ छट्ठा व्रतकि विषै श्रावक दशों दिशिमे मर्यादा उपरान्त जावाका त्याग करै।

७ सातवा व्रतकि विषै श्रावक उपभोग परिभोग का बोल २६ छबीस कै जिणारो मर्यादा उपरात त्याग करै तथा पन्दराह कर्मादानकी मर्यादा उपरान्त त्याग करै।

८ आठमा व्रतकि विषै श्रावक मर्यादा उपरात अनर्थ दण्डका त्याग करै।

९ नवमा व्रतकि विषै श्रावक सामायकाकी मर्याद करै।

१० दशमा व्रतकि विषै श्रावक देसावगासी व्रतकी मर्याद करै।

११ इग्यारमू व्रत श्रावक पोसह करै।

१२ बारमूं व्रत श्रावक शुद्ध साधु निर्ग्रंथनें निर्दोष आहार पाणी आदि चउदे प्रकार दान देवै।

२३ तेवीसमे बोले साधुजीका पंच महाव्रत—

१ पहिला महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे जीव हिंसा करे नहीं करावे नहीं करतानें भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे।

२ दूसरा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकार झूठ बोले नहीं बोलावे नहीं बोलतां प्रते भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे।

३ तीजा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे चोरी करे नहीं करावे नहीं करतांप्रते भलो जाणे नहीं मनसे वचनसे कायासे।

४ चौथा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे मैथुन सेवै नहीं सेवावै नहीं सेवतां प्रते भलो जाणै नहीं मनसे वचनसे कायासे।

५ पंचमा महाव्रतमें साधुजी सर्वथा प्रकारे परिग्रह राखे नहीं रखावे नहीं राखतां प्रते भलो जाणै नहीं मनसे वचनसे कायासे।

२४ चौवीसमें बोले भांगा ४९ गुणचालः—

करण ३ तीन जोग ३ तीनसे हुवै।

करण ३ तीनका नाम—करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं, जोग ३ तीनका नाम— मनसा, वायसा कायसा।

आंक ११ इग्यारेकों भागा ६:—

एक करण एक जोगसे कहणा, करूं नहीं मनसा, करूं नहीं वायसा, करूं नहीं कायसा, कराऊं नहीं मनसा, कराऊं नहीं वायसा, कराऊं नहीं कायसा, अनुमोदूं नहीं मनसा, अनुमोदूं नहीं वायसा, अनुमोदू नहीं कायसा।

आंक १२ बाराको भागा ६:—

एक करण दोय जोगसे, करूं नहीं मनसा वायसा, करू नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा, कराऊ नहीं मनसा कायसा, कराऊ नहीं वायसा कायसा, अनुमोदू नहीं मनसा वायसा अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा।

आंक १३ तेराको भागा ३ तीन:—

एक करण तीन जोगसे, करूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

आंक २१ को भागा ६:—

दोय करण एक जोगसे, करू नहीं कराऊ नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा करूं नहीं

कराऊं नहीं कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा ।

आंक २२ बावीसको भांगा ९ नव:—

दोय करण दोय जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा ।

आंक २३ तेवीसको भांगा ३ तीन:—

दोय करण तीन जोगसे करूं नहीं कराऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा, कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा

आंक ३१ इकतीसको भांगा ३ तीन:—

तीन करणएक जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं कायसा।

आंक ३२ बत्तीसको भांगा ३ तीन —

तीन करण दोय जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा कायसा, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं वायसा कायसा।

आंक ३३ तेतीसको भांगो १ एक:—

तीन करण तीन जोगसे, करूं नहीं कराऊं नहीं अनुमोदूं नहीं मनसा वायसा कायसा।

२५ पचीसमे बोले चारित्र पांच.—

सामायक चारित्र १ छेदोपस्थापनीय चारित्र २ पडिहार विशुद्ध चारित्र ३ सूक्ष्म सापराय चारित्र ४ यथाख्यात चारित्र ५

॥ इति पचीस बोल सम्पूर्णम् ॥

अथ चौरासी लाख योनि

७सात लाख पृथ्वीकाय ७ सात लाख अप्पकाय ७ सात लाख वायुकाय ७ सात लाख तेउकाय १० दशलाख प्रत्येक बनस्पतिकाय १४ चौदे लाख साधारण बनस्पतिकाय २ दोय लाख बेन्द्री २ दोय लाख तेंद्री २ दोय लाख चौइन्द्री ४ च्यार लाख नारकी ४ च्यार लाख देवता ४ च्यार लाख तिर्यंच पंचेन्द्री १४ चौदह लाख मनुषकी जाति एवं च्यार गति चौरासी लाख जीवा योनी से बारम्बार खमत खामना ।

॥ अथ पानाकी चरचा ॥

१ जीव रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय कालो पीलो नीलो रातो धोलो ए पाच वर्ण नही पावे इण न्याय ।

२ अजीव रूपीकि अरूपी, रूपी अरूपी दोनूं ही छे किणन्याय धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काल ए च्यारूं तो अरूपी और पुद्गलास्तिकाय रूपी ।

३ पुन्य रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पुन्यते शुभ कर्म, कर्म ते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छे ।

४ पाप रूपीकि अरूपी, रूपी ते किणन्याय पापते अशुभ कर्म कर्मते पुद्गल पुद्गल ते रूपी ही छे ।

५ आस्रव रूपीकि अरूपी, अरूपी ते किणन्याय आस्रव जीवका परिणाम छे, परिणामते जीव छे, जीव ते अरूपी छे, पाच वर्ण पावे नही इण न्याय ।

६ सवर रूपीकि अरूपी अरूपी किणन्याय पाच वर्ण पावे नही ।

७ निर्जरा रूपीकि अरूपी अरूपी छै ते किणन्याय निर्जरा जीवका परिणाम छै पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय।

८ बंध रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय बंध ते शुभ अशुभकर्म छै, कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

९ मोक्ष रूपीकि अरूपी अरूपी छैते किणन्याय समस्त कर्मांसि मुकावे ते मोक्ष अरूपी ते जीव सिद्ध थया ते मां पांच वर्ण पावे नहीं इणन्याय।

॥ लड़ी दूजी सावद्य निर्वद्यकी ॥

१ जीव सावद्यकि निर्वद्य दोनूं ही छै ते किणन्याय चोखा परिणामां निर्वद्य खोटा परिणामा सावद्य छै।

२ अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

३ पुन्य सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं ही छै किणन्याय मिथ्यात्व आस्रव अव्रत आस्रव प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो एकान्त सावद्य छै,

शुभ जोगा से निरजरा होय जिण आसरी निर्वद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै।

६ संवर सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्मा नें रोकि ते निर्वद्य छै।

७ निरजरा सावद्यकि निर्वद्य निर्वद्य छै ते किणन्याय कर्म तोडवारा परिणाम निर्वद्य छै।

८ बंध सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नही ते किणन्याय अजीव छै इण न्याय।

९ मोक्ष सावद्यकि निर्वद्य, निर्वद्य, सकल कर्म सूकाय सिद्ध भगवंत थया छै निर्वद्य छै।

॥ छठी तोजी आज्ञा मांहि बाहिरकी ॥

१ जीव आज्ञा माहि कि बारे; दोनूं छै ते किणन्याय जीवका चोखा परिणाम आज्ञा माहि छै, खोटा परिणाम आज्ञा बाहिर छै।

२ अजीव आज्ञा माहि बाहिर, दोनूं नही अजीव छै।

३ पुन्य आज्ञा माहि बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै इणन्याय।

४ पाप आज्ञा माहि बारे दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव आज्ञा मांहिकी बारे; दोनूं छै, ते किण-न्याय, आस्रव नां पांच भेद छै तिणमें मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद कषाय ए च्यार तो आज्ञा बाहिर छै अने जोग नां दोय भेद शुभ जोग तो आज्ञा मांहि छै अशुभ जोग आज्ञा बाहिर छै।

६ संवर आज्ञा मांहिकी बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

७ निर्जरा आज्ञा मांहिकि बाहर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम आज्ञा मांहि छै।

८ बंध आज्ञा मांहि कि बाहिर, दोनूं नहीं ते किण-न्याय, आज्ञा मांहि बाहिर तो जीव हुवे ए बंध तो अजीव छै इणन्याय।

९ मोक्ष आज्ञा मांहिकि बाहिर, आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय, कर्म मुकाय सिद्ध थया ते आज्ञामें छै

॥ लड़ी चौथी जीव अजीवकी ॥

१ जीव ते जीव छै कि अजीव, जीव, ते किणन्याय सदाकाल जीवको जीव रहसी अजीव कदे हुवे नहीं

२ अजीव ते जीव छे के अजीव छे, अजीव छे अजीव को जीव किणा ही कालमें हुवे नहीं।

३ पुन्य जीव छे के अजीव छे, अजीव छे ते किण-न्यायपुन्यते शुभकर्म शुभ कर्मते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे।

४ पाप जीव छे के अजीव छे, अजीव छे किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे।

५ आस्रव जीव छे के अजीव छे जीव छे, ते किण-न्याय शुभ अशुभ कर्म ग्रहे ते आस्रव छे कर्म ग्रहे ते जीव ही छे।

६ संवर जीवके अजीव, जीव छे ते किणन्याय कर्म रोके ते जीव ही छे।

७ निर्जरा जीवके अजीव, जीव छे किणन्याय कर्म तोड़े ते जीव छे।

८ बंध जीवके अजीव छे, अजीव छे, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्मको बंध अजीव छे।

९ मोक्ष जीव के अजीव, जीव छे, किणन्याय समस्त कर्म मूकावे ते मोक्ष जीव छे।

छट्ठो पांचवों जीव चोरके साहूकार ॥

१ जीव चोरके साहूकार, दोनूं छे किणन्याय, चोखा परिणामा साहूकार छे माठा परिणामा चोर छे।

२ अजीव चोरके साहूकार, दोनूं नहीं किणन्याय चोर साहूकार तो जीव हुवे ये अजीव छै।

३ पुन्य चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ पाप चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ आस्रव चोरके साहूकार दोनूं छै किणन्याय च्यार आस्रव तो चोर छै, अनें अशुभ जोग पण चोर छै शुभ जोग साहूकार छै।

६ संवर चोरके साहूकार साहूकार छै किणन्याय कर्म रोकवारा परिणाम साहूकार छै।

७ निर्जरा चोरके साहूकार, साहूकार छै किणन्याय कर्म तोड़वारा परिणाम साहूकार छै।

८ बंध चोरके साहूकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

९ मोक्ष चोरके साहूकार साहूकार किणन्याय कर्म मूंकायकर सिद्ध थया ते साहूकार छै।

॥लडो छटो जीव छांडवा जोगके आदरवा जोगको॥

१ जीव छांडवा जोगके आदरवा जोग छांडवा जोग छै किणन्याय पोते जीवनूं भाजन करे अनेरा जीव पर ममत्व भाव न करे।

२ अजीव छाडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय अजीव छै।

३ पुन्य छाडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै ते किणन्याय पुन्य ते शुभ कर्म पुद्गल छै कर्म ते छाडवा ही जोग छै।

४ पाप छाडवा जोगकि आदरवा जोग, छाडवा जोग छै किणन्याय पाप ते अशुभ कर्म छै जीवनें दुख-दाई छै ते छाडवा जोग छै।

५ आस्रव छाडवा जोगकि आदरवा जोग, छांडवा जोग छै किणन्याय आस्रव द्वारे जीवरे कर्म लागे छै आस्रव कर्म आवाना बारणा छै तै छाडवा जोग छै।

६ सवर छाडवा जोगकि आदरवा जोग, आदरवा जोग छै किणन्याय कर्म रोकै ते संवर छै ते आदरवा जोग छै।

७ निर्जरा छाडवा जोगकि आदरवा जोग, आदरवा जोग छै किणन्याय देशथो कर्म तोडै देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छै ते आदरवा जोग छै।

८ बन्ध छाडवा जोगकि आदरवा जोग, छाडवा जोग छै, ते किणन्याय शुभ अशुभ कर्म नो बन्ध छांडवा जोग ही छै।

९ मोक्ष छांडवा जोगकि आदरवा जोग, आदरवा जोग ते किणन्याय सकल कर्म खपावे जीव निरमल थाय सिद्ध हुवे इणन्याय आदरवा जोग छै।

॥ षटद्रव्यपर लड़ी सातमी रूपी अरूपीकी ॥

१ धर्मास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

२ अधर्मास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

३ आकाशास्तिकाय रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

४ काल रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

५ पुद्गल रूपीकि अरूपी, रूपी किणन्याय पांच वर्ण पावे इणन्याय।

६ जीव रूपीकि अरूपी, अरूपी किणन्याय पांच वर्ण नहीं पावे इणन्याय।

॥ छवद्रव्यपर लड़ी आठमी सावद्य निरवद्यकी ॥

१ धर्मास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

२ अधर्मास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नही अजीव छे।

३ आकाशास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छे।

४ काल सावद्यकि निर्वद्य, दोनूं नही अजीव छे।

५ पुद्गलास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य दोनूं नही अजीव छे।

६ जीवास्तिकाय सावद्यकि निर्वद्य दोनूं छे खोटा परिणामा सावद्य छे चोखा परिणामा निर्वद्य छे।

छवद्रव्यपर लडी नवमी आज्ञामांहिबाहिरकी।

१ धर्मास्तिकाय आज्ञा माहिकि बाहिर दोनूं नही ते किणन्याय आज्ञा माहि बाहिर तो जीव छे। अने ए अजीव छे।

२ अधर्मास्तिकाय आज्ञा माहिकि, बाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छे।

३ आकाशास्तिकाय आज्ञा माहिकि बाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छे।

४ काल आज्ञा माहिकि बाहिर दोनूं नही किणन्याय अजीव छे।

५ पुद्गल आज्ञा मांहिकि वाहिर दोनूं नहीं किण-
न्याय अजीव छै ।

६ जीव आज्ञा मांहिकि वाहिर दोनूं छै किणन्याय
निर्वद्य करणी आज्ञा मांहि छै सावद्य करणी
आज्ञा बाहिर छै दूणन्याय ।

॥छवद्रव्यपर लडी दशमी चोर साहूकारकी॥

१ धर्मास्तिकाय चोर कि साहूकार दोनूं नहीं किण-
न्याय चोर साहूकार तो जीव छै ए धर्मास्तिकाय
अजीव छै दूणन्याय ।

२ अधर्मास्तिकाय चोर कि साहूकार दोनूं नहीं
अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय चोरकि साहूकार दोनूं नही
अजीव छै ।

४ काल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

५ पुद्गल चोरकि साहूकार दोनूं नहीं अजीव छै ।

६ जीव चोरकि साहूकार, दोनूं छै किणन्याय, माठा
परिणामा आसरी चोर छै चोखा परिणामां
आसरी साहूकार छै ।

॥ छवद्रव्यपर लडी इग्यारमी जीव अजीवकी ॥

१ धर्मास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै ।

२ अधर्मास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै ।

३ आकाशास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै।

४ काल जीवकि अजीव, अजीव छै।

५ पुद्गलास्तिकाय जीवकि अजीव, अजीव छै।

६ जीवास्तिकाय जीवकि अजीव, जीव छै।

॥छव द्रव्यपर लड़ी बारमी एक अनेक की॥

१ धर्मास्ति काय एक छै कि अनेक छै, एक छै, किणन्याय, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

२ अधर्मास्तिकाय एक छै कि अनेक छै एक छै, द्रव्यथकी एकही द्रव्य छै।

३ आकाशास्तिकाय एककि अनेक, एक छै, लोक अलोक प्रमाणे एकही द्रव्य छै।

४ काल एक छै कि अनेक छै, अनेक छै द्रव्यथकी अनंता द्रव्य छै इणन्याय।

५ पुद्गल एक छै कि अनेक छै, अनेक छै, द्रव्य थकी अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

६ जीव एक छै कि अनेक छै, अनेक छै अनन्ता द्रव्य छै इणन्याय।

॥ लड़ी तेरमी ॥

छवमें नवमेंकी चरचा।

१ कर्मांकोकर्त्ता छव द्रव्यमें कोण नव तत्वमे कोण

उत्तर छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ कर्मांको उपावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

३ कर्मांको लगावता छवमें कोण नवमें कोण उ० छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

४ कर्मांको रोकता छवमें कोण नवमें कोण उत्तर छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५ कर्मांको तोड़ता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

६ कर्मांको बांधता छवमें कोण नवमे कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

७ कर्मांको मुकावता छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लडी चौदमी ॥

१ अठारे पाप सेवे तो छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव आस्रव ।

२ अठारे पाप सेवाका त्याग करे ते छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ।

३ सामायक छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

४ व्रत छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमें जीव संवर।

५ अव्रत छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव आस्रव।

६ अठारे पापको वेहरमण छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव संवर।

७ पञ्च महाव्रत, छवमे कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव सवर।

८ पाच चारित्र छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव संवर।

९ पाच सुमति छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव निर्जरा।

१० तीन गुप्ति छवमें कोण नवमे कोण छवमें जीव नवमें जीव, संवर।

११ बारे व्रत छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमे जीव, सवर।

१२ धर्म छवमें कोण नवमे कोण छवमे जीव नवमें जीव, सवर निर्जरा।

१३ अधर्म छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव, नवमे जीव, आस्रव।

१४ दया छवमे कोण नवमे कोण छवमे जीव

नवमें जीव, संवर, निर्जरा ।

१५ हिन्सा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव, आश्रव ।

॥ लडो १५ पन्द्रहमी ॥

१ जीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा मोक्ष ।

२ अजीव छवमें कोण नवमें कोण छवमें पांच,नवमें अजीव, पुन्य, पाप बंध ।

३ पुन्य छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, बंध ।

४ पाप छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें अजीव पाप बंध ।

५ आसव छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

६ संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, संवर ।

७ निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, निर्जरा ।

८ बंध छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

९ मोच्च छवमें कोण नवमे कोण छवमें जीव, नवमें जीव, मोच्च।

॥ लड़ी १६ सोलहवी ॥

१ धर्मास्ति छवमे कोण नवमे कोण छवमें धर्मास्ति, नवमें अजीव।

२ अधर्मास्ति छवमें कोण नवमें कोण छवमें अधर्मास्ति, नवमें अजीव।

३ आकाशास्ति, छवमें कोण नवमे कोण छवमें आकाशास्ति, नवमें अजीव।

४ काल छवमे कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमे अजीव।

५ पुद्गल छवमें कोण नवमे कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव, पुन्य, पाप बंध।

६ जीव, छवमे कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव संवर, निर्जरा मोच्च।

॥ लड़ी १७ सतरहवीं ॥

१ लेखण (कलम) पूठो, कागदको पानों, लकड़ी की पाटी, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव।

२ पात्रो, रजोहरण, चादर चोलपट्टो आदि भंड उपगरण, छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल, नवमें अजीव ।

३ धानको दाणों, छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव ।

४ रूंख (वृक्ष) छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव ।

५ लाकड़ो कायां छवमें कोण नवमें कोण छवमें पुद्गल नवमें अजीव ।

६ दिन रात छवमें कोण नवमें कोण छवमें काल, नवमें अजीव ।

७ श्रीसिद्ध भगवान छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव, नवमें जीव मोक्ष ।

॥ लड़ी १८ अठारहवीं ॥

१ पुन्य और धर्म एकके दोय, दोय किणन्याय, पुन्य तो अजीव छे, धर्म जीव छे ।

२ पुन्य और धर्मास्ति एकके दोय, दोय, किणन्याय पुन्य तो रूपी छे धर्मास्ति अरूपी छे ।

३ धर्म और धर्मास्ति एकके दोय दोय, किणन्याय, धर्म तो जीव छे, धर्मास्ति अजीव छे ।

४ अधर्म और अधर्मास्ति एक के होय होय, किण-न्याय अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

५ पुन्य अनें पुन्यवान एक के होय होय, किणन्याय पुन्य तो अजीव छै पुन्यवान जीव छै।

६ पाप अनें पापी एकके होय होय, किणन्याय, पाप अजीव छै, पापी जीव छै।

७ कर्म अन कर्मा को करता एक के होय होय, किणन्याय. कर्म तो अजीव छै, कर्मांरो करता जीव छै।

॥ लडी १९ उन्नीसमी ॥

१ कर्म जीव के अजीव. अजीव।

२ कर्म रूपीकि अरूपी रूपी छै।

३ कर्म सावद्यके निर्वद्य, दोनूं नहीं अजीव छै।

४ कर्म चोरकि साहुकार, दोनूं नहीं अजीव छै।

५ कर्म आज्ञा माहिके बाहिर दोनूं नहीं अजीव छै।

६ कर्म छाडवा जोग के आदरवा जोग, छाडवा जोग छै।

७ आठ कर्मां में पुन्य कितना पाप कितना ज्ञाना-वर्णी, दर्शनावर्णी, मोहनीय, अन्तराय, ए च्यार

कर्म तो एकान्त पाप छै, वेदनी, नाम, गोत, श्रायु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छै।

॥ लड़ी २० बीसमीं ॥

१ धर्म जीव के अजीव जीव छै।
२ धर्म सावद्य के निर्वद्य निर्वद्य छै।
३ धर्म आज्ञा मांहि के बाहिर श्री वितराग देव की आज्ञा मांहि छै।
४ धर्म चोर के साहूकार साहूकार छै।
५ धर्म रूपी के अरूपी अरूपी छै।
६ धर्म छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।
७ धर्म पुन्य के पाप दोनूं नहीं किणन्याय धर्म तो जीव छै पुन्य पाप अजीव छै।

॥ लड़ी २१ इक्कीसवीं ॥

१ अधर्म जीव के अजीव जीव छै।
२ अधर्म सावद्य के निर्वद्य सावद्य छै।
३ अधर्म चोर के साहूकार चोर छै।
४ अधर्म आज्ञा मांहि के बाहिर बाहिर छै।
५ अधर्म रूपी के अरूपी रूपी छै।

६ अधर्म छाडवा जोग के आदरवा जोग छाडवा जोग छै।

॥ लड़ी २२ बाइसमीं ॥

१ सामायक जीव के अजीव जीव छै।

२ सामायक सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ सामायक चोर के साहूकार साहूकार छै।

४ सामायक आज्ञा माहि के बाहिर आज्ञा माहि छै।

५ सामायक रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ सामायक छाडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ सामायक पुन्य के पाप दोनूं नहीं, किणन्याय पुन्य पाप अजीव छै, सामायक जीव छै।

॥ लड़ी २३ तेवीसमी ॥

१ सावद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ सावद्य सावद्य छै के निरवद्य सावद्य छै।

३ सावद्य आज्ञा माहि के बाहिर बाहिर छै।

४ सावद्य चोर के साहूकार चोर छै।

५ सावद्य रूपी कि अरूपी अरूपी छै।

६ सावद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग छांडवा जोग छै।

७ सावद्य पुन्य के पाप दोनूं नहीं, पुन्य पाप तो अजीव छै, सावद्य जीव छै।

॥ लडी २४ चौबीसमी ॥

१ निरवद्य जीव के अजीव जीव छै।

२ निरवद्य सावद्य के निरवद्य निरवद्य छै।

३ निरवद्य चोर के साहूकार, साहूकार छै।

४ निरवद्य आज्ञा मांहि के बाहिर मांहि छै।

५ निरवद्य रूपी के अरूपी अरूपी छै।

६ निरवद्य छांडवा जोग के आदरवा जोग आदरवा जोग छै।

७ निरवद्य धर्म के अधर्म धर्म छै।

८ निरवद्य पुन्य के पाप पुन्य पाप दोनूं नहीं, किणन्याय· पुन्य पाप तो अजीव छै निरवद्य जीव छै।

॥ लडी २५ पचीसमी ॥

१ नव पदार्थ मे जीव कितना पदार्थ अने अजीव कितना पदार्थ जीव आस्रव, संवर, निर्जरा,

मोक्ष, ए पाच तो जीव छै, अनें अजीव, पुन्य, पाप, वंध, ए च्यार पदार्थ अजीव छै।

२ नव पदार्थ मे सावद्य कितना निरवद्य कितना जीव अनें आस्रव ए दोय तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, अजीव, पुन्य पाप, वंध, ए सावद्य निरवद्य दोनूं नही। संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन पदार्थ निरवद्य छै।

३ नव पदार्थ मे आज्ञा माहि कितना आज्ञा वाहिर कितना जीव, आस्रव, ए दोय तो आज्ञा माहि पण छै अने आज्ञा वाहिर पण छै। अजीव, पुन्य, पाप, वंध, ए च्यार आज्ञा माहि वाहिर दोनूं ही नही। संवर, निर्जरा मोक्ष, ए आज्ञा माहि छै।

४ नव पदार्थ में चोर कितना साहूकार कितना जीव, आस्रव, तो चोर साहूकार दोनूं ही छै। अजीव, पुन्य, पाप वध ए चोर साहूकार दोनूं नही. संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए तीन साहूकार छै।

५ नव पदार्थ में छाडवा जोग कितना आदरवा जोग कितना जीव, अजीव, पुन्य, पाप, आस्रव वध, ए छव तो छाडवा जोग छै, संवर, निर्जरा,

मोक्ष ए तीन आदरवा जोग छै, अने जाणवा जोग नवहीं पदार्थ छै।

६ नव पदार्थ में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, मोक्ष, ए पांच तो अरूपी छै, अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य, पाप, बंध रूपी छै।

७ नव पदार्थ में एक कितना अनेक कितना उ० अजीव टाली आठ पदार्थ तो अनेक छै, अने अजीव एक अनेक दोनूं छै, किणन्याय धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति ये तीनूं द्रव्य थकी एक एक ही द्रव्य छै।

॥ लड़ी २६ छबीसमीं ॥

१ छव द्रव्य में जीव कितना अजीव कितना एक जीव पांच अजीव छै।

२ छव द्रव्य में रूपी कितना अरूपी कितना जीव, धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति, काल, ए पांच तो अरूपी छै, पुद्गल रूपी छै।

३ छव द्रव्य में आज्ञा मांहि कितना आज्ञा बाहिर कितना जीव तो आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं छै, बाकी पांच आज्ञा मांहि बाहिर दोनूं नहीं।

४ छव द्रव्य मे चोर कितना साह्रकार कितना जीव तो चोर साह्रकार दोनूं छै, बाकी पाच द्रव्य चोर साह्रकार दोनू नही अजीव छै।

५ छव द्रव्य मे सावद्य कितना निरवद्य कितना एक जीव द्रव्य तो सावद्य निरवद्य दोनूं छै, बाकी पाच द्रव्य सावद्य निरवद्य दोनूं नही।

६ छव द्रव्य में एक कितना अनेक कितना धर्मास्ति अधर्मास्ति, आकाशास्ति, ए तीनो तो एक ही द्रव्य छै, काल, जीव, पुद्गलास्ति, ए तीन अनेक छै, इणाका अनन्ता द्रव्य छै।

७ छव द्रव्य मे सप्रदेशी कितना अप्रदेशी कितना एक काल तो अप्रदेशी छै, बाकी पाच सप्रदेशी छै।

॥ लड़ी २७ सत्ताइसमीं ॥

१ पुन्य धर्म के अधर्म दो नूं नही, किणन्याय धर्म अधर्म जीव छै पुन्य अजीव छै।

२ पाप धर्म के अधर्म दोनूं नही, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै पाप अजीव छै।

३ बंध धर्म कि अधर्म दोनूं नही, किणन्याय धर्म अधर्म तो जीव छै बध अजीव छै।

४ कर्म अनें धर्म एक के दोय दोय छै, किणन्याय, कर्म तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

५ पाप अनें धर्म एक के दोय दोय छै, किणन्याय पाप तो अजीव छै, धर्म जीव छै।

६ अधर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय अधर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

७ धर्म अनें धर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, धर्मास्ति अजीव छै।

८ धर्म अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय धर्म तो जीव छै, अधर्मास्ति अजीव छै।

९ अधर्म अनें धर्मास्ति एकके दोय, दोय किणन्याय अधर्म तो जीव, धर्मास्ति अजीव छै।

१० धर्मास्ति अनें अधर्मास्ति एक के दोय दोय, किणन्याय धर्मास्ति को तो चालवा नो सहाय छै, अनें अधर्मास्तिनो थिर रहवानों सहाय छै।

११ धर्म अनें धर्मी एक के दोय एक छै, किणन्याय धर्म जीव का चोखा परिणाम छै।

१२ अधर्म अनें अधर्मी एक के दोय एक छै, किणन्याय अधर्म जीव का खोटा परिणाम छै।

१ थारी गति कांई—मनुष्य गति ।

२ थारी जाति कांई—पचेन्द्री ।

३ थारी काय कांई—त्रसकाय ।

४ इन्द्रिया कितनी पावे—५ पाच ।

५ पर्याय कितनी पावे—६ छव ।

६ प्राण कितना पावे—१० दश पावे ।

७ शरीर कितना पावे—३ तीन—औदारिक, तेजस कार्मण ।

८ जोग कितना पावे—९ नव पावे च्यार मन का, च्यार बचनका, एक काया को, औदारिक ।

९ उपयोग कितना पावे—४ च्यार पावे मतिज्ञान १ श्रुतिज्ञान २ चक्षु दर्शन ३ अचक्षु दर्शन ४

१० थारे कर्म कितना ८ आठ ।

११ गुणस्थान किसो पावे—व्यवहारथी पांचमूं, साधु नें पूछे तो छट्ठो ।

१२ विषय कितनी पावे—२३ तेवीस ।

१३ मिथ्यात्वनां दश बोल पावे के नहीं, व्यवहारथी नहीं पावे ।

१४ जीवका चौदाह भेदांमें से किसो भेद पावे, १ एक चोदमूं पर्याप्ता सन्नी पंचेन्द्रीको पावे ।

१५ आतमां कितनी पावे श्रावकमें तो ७ सात पावे; अनें साधु में आठ पावे ।

१६ दण्डक किसो पावे—एक इक्कीसमूं ।

१७ लेश्या कितनी पावे—६ छव ।

१८ दृष्टि कितनी पावे—व्यवहारथी एक; सम्यक दृष्टि पावे ।

१९ ध्यान कितना पावे—३ तीन, शुक्ल ध्यान टालके ।

२० छवद्रव्यमें किसो द्रव्य पावे—१ एक जीव द्रव्य ।

२१ राशि किसो पावे—एक जीव राशि ।

२२ श्रावक का बारा व्रत श्रावक में पावें ।

२३ साधुका पञ्च महाव्रत पावे की नहीं—साधु में पावें श्रावक में पावे नहीं ।

२४ पांच चारित्र श्रावक में पावे के नहीं, नहीं पावें, एक देश चारित्र पावे ।

१ एकेन्द्री की गति काई—तिर्यंच गति।

२ एकेन्द्री की जाति काई—एकेन्द्री।

३ एकेन्द्री में काया किसी पावै—पाच थावरकी।

४ एकेन्द्री में इन्द्रिया कितनी पावै—एक स्पर्श इन्द्री।

५ एकेन्द्री मे पर्याय कितनी पावै—४ च्यार मन भाषा ए दोय टली।

६ एकेन्द्री में प्राण कितना पावै—४ च्यार पावै स्पर्श इन्द्रीय वलप्राण १ काय वलप्राण २ श्वासोश्वास वलप्राण ३ आयुषो वलप्राण ४।

७ मूरड माटी मुलतानी पत्थर सोनो चादी रतनादिक पृथ्वीकाय का प्रश्नोत्तर'—

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय किसी	पृथ्वीकाय
इन्द्रियां कितनी पावै	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी पावै	४ च्यार, मन भाषा टली
प्राण कितना	४ च्यार पावै, स्पर्श इन्द्री वल प्राण १ काय वल प्राण २ श्वासोश्वास वल प्राण ३ आयु बलप्राण ४

८ पाणी ओसादि अप्पकायकी—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	अप्पकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भापाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

९ अग्नी तेउकायनी—

प्रश्न	उत्तर—
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय किसी	तेउकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, मन भापाटली
प्राण कितना	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे

१० वायु कायकी—

प्रश्न	उत्तर—
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	एकेन्द्री
काय कांई	वायुकाय
इन्द्रियां कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	४ च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	४ च्यार ऊपर प्रमाणे

११ वृक्ष, लता, पान, फूल, फल, लीलण, फूलन आदि वनस्पतिकायनी—

प्रश्न	उत्तर
गति काई	तिर्यंच गति
जाति काई	एकेन्द्री
काय काई	वनस्पतिकाय
इन्द्रिया कितनी	एक स्पर्श इन्द्री
पर्याय कितनी	च्यार, ऊपर प्रमाणे
प्राण कितना	च्यार, ऊपर प्रमाणे

१२ लट गिडोला आदि बेन्द्रीकी—

प्रश्न	उत्तर	
गति काई	तिर्यंच गति	
जाती काई	बेइन्द्री	
काय काई	त्रस काय	
इन्द्रिया कितनी	२ दोय, स्पर्श, रस, इन्द्री	
पर्याय कितनी	५ पाच मन पर्याय टली	
प्राण कितना	६ छय, रस इन्द्री बल प्राण	१
	स्पर्श इन्द्री बल प्राण	२
	काय बल प्राण	३
	श्वासोश्वास बल प्राण	४
	आऊखो बल प्राण	५
	भाषा बल प्राण	६

१३ कीड़ी मकोड़ा आदि तेइन्द्रीका—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	३ तीन, स्पर्श १ रस २ घ्राण ३
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	७ सात, छव तो ऊपर प्रमाणे घ्राण इन्द्री वल प्राण वध्यो

१४ माखी मच्छर टीडी पतंगिया विच्छु आदि चौइन्द्री का—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यंच गति
जाति कांई	चौ इन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	४ च्यार, श्रुत इन्द्री टली
पर्याय कितनी	५ पांच, मन टली
प्राण कितना	८ आठ, सात तो ऊपर प्रमाणे एक चक्षू इन्द्री वल प्राण और वध्यो

१५ पंचेन्द्री का—

प्रश्न	उत्तर
गति कितनी पावै	४ च्यारूं ही पावै

जाति काई	पचेन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रिया कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	६ छवो ही पावै सन्नीमें, और असन्नीमें ५ पाव, मन टल्यो
प्राण कितना पावै	सन्नीमें तो १० दशू ही पावै, असन्नीमें ६ पावै मन टल्यो

१६ नारकी की पृच्छा—

प्रश्न	उत्तर
गति काइ	नरक गति
जाति काई	पचेन्द्री
काय काइ	त्रस काय
इन्द्रिया कितनी	पांचोंही
पर्याय कितनी	५ पाव, मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशोंही

१७ देवताकी पृच्छा—

प्रश्न	उत्तर
गति काई	देव गति
जाति काई	पचेन्द्री
काय काई	त्रस काय
इन्द्रिया कितनी	५ पाचोंही
पर्याय कितनी	५ मन भाषा भेली लेखवी
प्राण कितना	१० दशों ही

१८ मनुष्य की पूछा असन्नी की—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	तिर्यञ्च गति
जाति कांई	तेइन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	३॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं
प्राण कितना	७॥ श्वास लेवे तो उश्वास नहीं

१९ सन्नी मनुष्य की पूछा—

प्रश्न	उत्तर
गति कांई	मनुष्य गति
जाति कांई	पंचेन्द्री
काय कांई	त्रस काय
इन्द्रियां कितनी	५ पांच
पर्याय कितनी	६ छव
प्राण कितना	१०

१ तुमे सन्नीकि असन्नी ? सन्नी, किणन्याय मन छै।

२ तुमे सूक्ष्मकि बादर ? बादर किण० ? दीखूं छूं।

३ तुमे त्रसकि स्थावर ? त्रस, किण० हालूं चालूं छूं।

४ एकेन्द्री सन्नी कि असन्नी—असन्नी, किण० मन नहीं।

५ एकेन्द्री सूक्ष्म कि बादर—दोनूं ही छै किण०

एकेन्द्री दोय प्रकार की छे, दीखे ते बादर छे, नहीं दीखे ते सूक्ष्म छे।

६ एकेन्द्री त्रस के स्थावर—स्थावर छे, हालै चालै नहीं।

७ एकेन्द्री मे इन्द्रिया कितनी—एक स्पर्श इन्द्री (शरीर)

८ पृथ्वीकाय अप्पकाय तेउका वायुकाय वनस्पतिकाय।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	दोनू ही प्रकार को छै
त्रसके स्थावर	स्थावर छै

९ बेन्द्री तेन्द्री चौइन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै मन नहीं
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१० तिर्यञ्च पंचेन्द्री की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनू ही है
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

११ असन्नी मनुष्य चौदह स्थानक में उपजै ।

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	असन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१२ सन्नी मनुष्य ते गर्भ में उपजै जिणारी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै

१३ नारकी का नेरिया की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१४ देवताकी पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	सन्नी छै
सूक्ष्म के बादर	बादर छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै

१५ गाय, भैंस, हाथी, घोड़ा बलद, पक्षी आदि पशु जानवर की पृछा

प्रश्न	उत्तर
सन्नी के असन्नी	दोनू ही प्रकार का छै छिमो ञिमके मन नहीं, गर्भज के मन छै
सूक्ष्म के वादर	वादर है, नेत्रसे देखता में आवै छै
त्रस के स्थावर	त्रस छै हालै चालै छै

१ एकेन्द्री मे वेद कितना पावै एक नपुसक वेद पावै ।

२ पृथ्वी पाणी वनस्पति अग्नि वायरो या पाचा मे वेद कितना पावै—१ नपुंसक ही छै ।

३ वेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री मे वेद कितना पावै—एक नपुंसक वेद ही पावे छै ।

४ पंचेन्द्रीमें वेद कितना पावै—सन्नी मे तो तीनो ही वेद पावै छै, असन्नीमे एक नपुंसक वेदही छै ।

५ मनुष्यमें वेद कितना पावै—असन्नी मनुष्य चौदह थानक में उपजे जिणा में तो वेद एक नपुसक ही पावै छै, सन्नी मनुष्य गर्भमें उपजै जिणामे वेद तीनो ही पावै छै ।

६ नारकी मे वेद कितना पावै—एक नपुसक वेद ही पावै छै ।

७ जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर या पाच प्रकार का तिर्यचा में वेद कितना पावै—छिमो-

छिम उपजै ते असन्नी छै जिणांमें तो वेद नपुंसक ही पावै छै, अनें गर्भ में उपजै ते सन्नी छै जिणां में वेद तीनोंही पावै छै।

८ देवतामें वेद कितना पावै—उत्तर—भवनपती, वाणव्यन्तर, जोतिषी, पहिला दूजा देव लोक तांई तो वेद होय स्त्री १ पुरुष २ पावै छै, और तीजा देव लोक से स्वार्थ सिद्ध तांई वेद एक पुरुष ही छै।

९ चौबीस दण्डक का जीवां में कर्म कितना उगणीस दण्डकां का जीवांमें तो कर्म आठही पावै छै, अनें मनुष्य में सात आठ तथा च्यार पावै छै।

१ धर्म व्रत में कै अव्रतमें—व्रत में।

२ धर्म आज्ञा मांहि कै बाहिर श्रीवीतरागदेव की आज्ञा मांहि छै।

३ धर्म हिंसा में कै दया में—दया में।

४ धर्म मोल मिलै कै नहीं मिलै—नहीं मिलै, धर्म तो अमूल्य छै।

५ देव मोल मिलै कै नहीं मिलै—नहीं मिलै, अमूल्य छै।

६ गुरु मोल लिया मिले के नही मिले—नही मिले अमूल्य छे।

७ साधुजी तपस्या करे ते व्रत में के अव्रत में व्रत पुष्टको कारण छे अधिक निर्जरा धर्म छे।

८ साधुजो पारणो करे ते व्रत में के अव्रत में अव्रतमें नही, किणन्याय ? साधुके कोई प्रकार अव्रत रही नहीं सव सावद्य जोगका त्याग छे। तिणसं निरजरा थाय छे तथा व्रत पुष्टको कारण छे।

९ श्रावक उपवास आदि तप करे ते व्रतमें के अव्रत में—व्रत में।

१० श्रावक पारणो करे ते व्रत में के अव्रत में—अव्रत में किणन्याय ? श्रावक को खाणों पीणो पहरणो ए सर्व अव्रत में छे श्रीउववाई तथा सूयगडांग सूत्र में विस्तार कर लिख्या छे।

११ साधुजी नें सूजतो निर्दोष आहार पाणी दिया कांई होवे, व्रतमें के अव्रतमें—अशुभ कर्म क्षय थाय तथा पुन्य वधे छे, १२ सू व्रत छे।

१२ साधुजो ने असूजतो दोषसहित आहार पाणी दिया कांई होवे तथा व्रत में के अव्रतमें—श्रीभगवती सूत्र में कह्यो छे, तथा श्री ठाणांग सूत्र के तीजे

ठाणें में कह्यो छै अल्प आयुबंधे अकल्याणकारी कर्म बंधै तथा असूजतो दीधोतें वृत में नहीं। पाप कर्म बंधै छै।

१३ अरिहंत देव देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१४ साधु देवता कि मनुष्य—मनुष्य छै।

१५ देवता साधुनीं वंछा करै कि नहीं करै—करै साधु तो सबका पूजनीक छै।

१६ साधु देवताकी वंछा करैकि नहीं करै—नहीं करै।

१७ सिद्ध भगवान देवता कि मनुष्य—दोनूं नहीं।

१८ सिद्ध भगवान सूक्ष्म कि बादर—दोनूं नहीं।

१९ सिद्ध भगवान त्रसकि स्थावर—दोनूं नहीं।

२० सिद्ध भगवान सन्नी कि असन्नी—दोनूं नहीं।

२१ सिद्ध भगवान पर्याप्त कि अपर्याप्त—दोनूं नहीं।

॥ इति पानाकी चरचा ॥

अथः प्रतिक्रमण ।

अर्थ सहित ।

णमो अरिहन्ताणं णमो सिद्धाणं णमो
नमस्कार थावो श्री अरिहन्त भगवन्त नें नमस्कार थावो श्री सिद्ध भगवान नें नमस्कार थावो

आयरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लोए
श्री आचारज महाराज नें नमस्कार थावो श्री उपाध्याय महाराज नें नमस्कार थावो लोक के विषे

सव्व साहूणं ।
सर्व साधु मुनिराजों नें ।

॥ अथ तिक्खुता की पाटी ॥

॥ अर्थ सहित ॥

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वन्दामि नमं
तीनवार दाहिणा पासाथी प्रदक्षिणा देई वंदना करु सत्कार नमस्कार

सामी सक्कारेमि समाणेमि कल्लाणं मङ्गल'
करूं सत्कार देऊं सनमान करूं कल्याणकारी
मंगल कारी

देवयं चेइयं पज्जुवासामी मत्थएण वन्दामि
धर्म देव चित्त प्रसन्न सेवना करूं मस्तके करी वंदना
कारी ज्ञान नमस्कार
वंत करूं

इच्छामि पडिक्कमिओ इरिया वहियाए
इच्छूं, वाच्छूं प्रतिक्रमवोते मार्ग नें विषे ज्यो
निवर्त्तवो

विराहणा ए गमणागमणे पाणक्कमणे
विराधना हुई जातां आतां प्राणी वेन्द्रियादि नो
होय आक्रमण करणूं ते
दाबणूं

बीयक्कमणे हरियक्कमणे ओसा उत्तिंग पणग
बीजको दाणूं हरी लीली के ओस को कीड़ीका नीलण
दाणूं बिल फूलण

दग मट्टी मकड़ा संताणा संकमणे जे
पाणी को माट्टीका मकड़ी का जाला मर्द्दवो जो
दावलो जीव तोड्या होय

मे जीवा विराहिया एगिंदिया बेइंदिया
में जीव विराध्यो होय एकेन्द्री जीव बेइन्द्री जीव

तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया अभी
तेइन्द्री जीव चौइन्द्री जीव पंचइन्द्री जीव सनमुख

हया वत्तिया लेसिया सघाइया संघ
आताहण्या धूलसे रगडया घातन कसा सग्रह
वरती करी ढस्या
ट्टिया परियाविया किलामिया उद्दविया
क्रिया परिताप्या कीलामना उपजाई उपद्रव क्रिया
ठाणा उठाण सकामिया जीवियाश्रो वव
एक स्थानसे दूसरे स्थान पटक्या जीवत से
रोविया तस्समिच्छामि दुक्कड ॥ १ ॥
नास क्रिया तेहनो मिच्छामि दुक्कड ।

॥ अथ तस्सुत्तरी ॥

तस्सउत्तरी करणेण पायच्छित करणेणं
तेहनो उत्तर करवो प्रायश्चित्त करवो
प्रधान
विसोही करणेण विसल्ली करणेण
विशुद्धि करवो मल्य रहित करवो
पावाण कम्माण निरघाय णट्टाए
पाप कर्मका नास करवा निमित्त
ठामि करेमि काउसग्गं अन्नथ
थिर करु छू काय उत्सर्ग इण मुजब
हुई एतलो विशेष
ऊससिएण नीससिएण खासिएणं छीएणं
ऊ चाश्वास नीचाश्वास खासी छींक

जंभाइएणं उड्डुएणं वाय निसग्गेणं भमलीए
उवासी डकार अधोवायु भंवल
पित्तमुच्छाए सुहमेहिं अङ्गसंचालेहिं
पित्तकर मूर्च्छा सूक्ष्मपणे शरीरको हालवो
सुहमेहिं खेलसंचालेहिं सुहमेहिं दिट्ठीसंचालेहिं
सूक्ष्मपणें श्लेष्मको सचार सूक्ष्म दृष्टि चलावो
एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहो
इत्यादिक यह आघार से ध्यान भांगे नहीं विराधना
ण हुज्ज मे काउस्सग्गं जाव अरिहं
नहीं होज्यो मनें काउस्सग ते ध्यान जिहां तक अरि
ताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं नपारेमि
हन्त भगवन्तने नमस्कार करीने नहीं पारूं
ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं
तठेतांई शरीरसे स्थानसे मौनकरी ध्यान करी
अप्पाणं वोसरामि ॥ इति ॥
आतमां नें पापथका वोसराऊं ।

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोयगरे धम्म तित्थयरेजिणे
लोक के विषैं उद्योतकारी धर्म तीर्थं करता जिन
अरिहन्ते कित्तइस्सं चउविसंपि केवली
अरिहन्ताकी कीर्ति करूं चोवीस वे केवली

उसभ मजियं च वंदे संभव मभिनंदणं च
ऋषभ अजित पुन वंदू सम्भवनाथ अभिनन्दनजी पुन

सुमइं च पउमप्पहिं सुपासं जिण च चन्दप्पह
सुमति पुन पद्म प्रभु सुपार्श्व जिन पुन चन्द्र प्रभु
नाथजी

वंदे सुविहं च पुप्फदन्तं सीअल सिज्जंस
वंदू सुविध पुन दूसरो नाम शीतल श्रेयांस
पुष्पदंत

वासुपुज्ज च विमल मणंतं च जिणं धम्मं
वासुपूज्य पुनः विमलनाथ अनन्तनाथजिन धर्मनाथ

संति च वंदामि ३ कुंथुं अरिह च मल्लि
शान्ति पुन वंदू कुन्थु अर पुन मल्लिनाथ
नाथ नाथ

वंदे मुणिसुव्वय नमि जिण च वंदामि
वंदू मुनिसुव्रत नमि जिन पुन वंदू

रिट्ठनेमिं पासं तह वद्धमाणं च ४ एव
अरिष्टनेम पार्श्वनाथ तथारूप वर्द्धमान पुन वंदू यह

मये अभिथुआ विहुयरयमला पहीण ' जर
मैं स्तुति करि दूर किया कर्म रूप क्षीणभया जराम
रजमैल

मरणा चउवीसंपि जिणवरा तित्थयरा मे
मर्णजिणाका वहरा चौवीस जिन राज तिर्थंकर म्हारे

पसीयंतु ५ कित्तिय वंदिय महिया जे ए
प्रसन्नथावो कीर्तिकरी वंदू मोटा प्रते तेह ए
पुज्या ध्याय

लोगस्स उत्तमा सिद्धा आरुग्ग बोहिलाभं
लोकके विषै उत्तम सिद्ध छे रोग रहित समकित
बोध लाभ

समाहि वर मुत्तमं दिन्तु ६ चन्देसु निम्मल
समाधि प्रधान उत्तम देवो चंद्रमाथी निर्मल

यरा आइच्चेसु अहियं पयासयरा सागर वर
घणां सूर्यथी अधिक प्रकाशकारी समुद्र समान

गम्भीरा सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ७
गम्भीर एहवा सिद्ध सिद्धी मनैं देवो

॥ अथ नमोत्थुणां ॥

नमोत्थुणं अरिहन्ताणं भगवंताणं आइगराणं
नमस्कार थावो अरिहन्त भगवंत ने धर्म को आदि
करता

तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं
तीर्थ करता विना गुरू पोते प्रति पुरुषांमें उत्तम
बोध पाम्यां

पुरिस सिंहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरि
पुरुषांमें सिंह समान पुरुषां में पुंडरीक पुरुषां
कमल समान में

सन्नर गन्ध हत्थीण लोगुत्तमाण लोगनाहाणं
गध हाथी समान लोकमें उत्तम लोकका नाथ

लोगहियाण लोगपईवाण लोगपज्जोय गराण
लोकमें हित कारी लोकमें प्रदिप समान लोकमें उद्योत कारी

अभयदयाण चक्खु दयाण मग्गदयाण सरणदयाण
अभय दान दाता ज्ञान चक्षु दायक सुमार्ग दायक शरण दायक

जीवदयाण वोहिदयाण धम्मदयाणं धम्मदेश
सजम जीत्व दायक बोधदायक धर्म दायक धर्म देशना

याणं धम्मनायगाण धमसारहीणं धम्मवर
दायक धर्मका नायक धर्मका सारथी उत्तम धर्म कर

-चाउरत चक्कवट्टीण दीवोताण सरणगई पइटा
च्यार गतिका अतकारी चक्र द्वीपा समान शरणागत नें वर्त समान

अप्पडिहय वरनाण दसण धराण विअट्टछउ
अप्रतिहित प्रधान ज्ञान दर्शन धारक निवर्त्यो

माण जिणाण जावयाण तिन्नाण तारयाण
छद्मस्थ पणो जीत्या अने जीताने दूजाने पोते तया दूसराने तारे

वुद्वाणं बोहयाण मुत्ताणं मोयगाण सव्वन्नूणं
पोते प्रति बोध पाम्या दूजाने प्रति बोधे फर्मथी मुकाव्या दूजाने मुकावे सर्वज्ञान

सव्वदरिसीणं सिवमयल मरुग्र मणंत
सर्व दर्शण कल्याणकारी अचल अरुज अनन्त

मक्खय मव्वाबाह मप्पुणरावंती सिद्धिगई
अक्षय अव्याव्याधि फेरु आवै नहीं इसी सिद्धगति

नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं ॥इती॥
नामवाला स्थान प्राप्त हुआ ज्यां जिनेश्वरानें नमस्कार थावो

अथ आवस्सही इच्छामिणं भंते

आवस्सही इच्छामिणं भंते तुव्भेहिं अब्भणु
अवश्य इच्छूं छूं मैं हे भगवान तुम्हारी आज्ञासे

नायेसमाणे देवसी पडिक्कमणं ठाएमि देवसी
दिवस संवन्धी प्रति क्रमण करूं मैं दिवस संवन्धी

ज्ञान दर्शन चारित्व तप अतिचार चिंतवनार्थं
ज्ञान दर्शन चारित्र तप अतिचार चिन्तवना के अरथे

करेमि काउसग्गं ॥
करूं छं मैं काऊसग ते ध्यान

अथ इच्छामी ठामि काउसग्गं

इच्छामि ठामि काउसग्गं जो मे देवसिउ अइ
इच्छूं छूं ठाऊं काउसग ज्यो में दिवसमें अति

चार कन्नो काइनो वाइनो माणसिनो उस्सुतो
चार कोनों शरीरसे वचन से मनसे भूठा सूत्र
उमग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाओ दुव्वि
उनमार्ग अकल्पनीक नहीं करना जोग दुर ध्यान खोटी
चिंतिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो
चिन्तवना अणाचार नहीं इच्छवा जोग
असावगपाउग्गो नाणे तहदंसणे चरित्ताचरित्ते
श्रावकके नहीं कर ज्ञान दर्शन देश व्रत
वा जोग पाप ते
व्रत भगादि
सुए समाइए तिण्हं गुत्तीणं चउण्हं कसायाणं
श्रुत सामायक तीन गुप्ति च्यार कषाय
पचण्हं मणुव्वयाणं तिण्हं गुणं वयाणं चउण्हं
पाच अणुव्रत तीन गुण व्रत च्यार
सिक्खावयाणं वारस्स विहस्स सावग धम्मस्स
सिक्षा व्रत बारे विधि श्रावक धर्म को
जं खंडियं जं विराहियं तस्समिच्छामि
ज्यो खंडना करी ज्यो विराधना करी तेहनो मिच्छामि
दुक्कड ॥
दुक्कड

॥ अथ खमासमणो ॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए
इच्छू छू क्षमावत साधु वंदवा सचितादिछाडी निपाप
शरीरपणे हुई निर्जरा अर्थे

निसीहियाए अणुजाणह मेमि उग्गहं निसीहि
शरीर करी आज्ञा देवो मुझे मर्यादा, अशुभ जोग मांही निवर्तती

अहो कायं कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो
चर्ण फर्शवाकी म्हारी कायासे खमज्यो हे भगवान किलामना आज्ञा देवो तुमारा चर्ण फर्शतां

अप्पकिलंताणं बहुसुभेण मे दिवसोवइक्कंतो
थोड़ी किलामना बहुत समाधि भावकर, दिवस वीत्यो हुइ हुवेते तुम्हारो

जत्ता भे जवणिज्जं च मे खामेमि खमासमणो
संयम रूप इन्द्रीनोइन्द्रीना आपकुं खमाउं हे क्षमावंत यात्राथी तुमारा, उपशम थकी छूं साधु निरोग शरीर

देवसियं वइक्कमं आवसिआए पडिकमामि
दिवस सम्बन्धी व्यतिक्रम अवश्य करणी नां पडिकमूं छूं अतिचार थकी

खमासमणाणं देवसिआए आसायणाए
हे क्षमावंत श्रमण दिवस संबन्धी आंसातना

तेतीसन्नराए जं किंचिमिच्छाए मणदुक्कडाए
तेतीस मांहिली ज्यो कोई किंचित् मिथ्या मनसे दुकृत क्रिया करी किया

वयदुक्कडाए काायदुक्कडाए कोहाए माणाए
वचन से दुकृत काया से दुकृत क्रोधथी मानथी
मायाए लोभाए सव्वकालियाए सव्वमिच्छोवयराए
माया कपट लोभकरो सर्व कालमें सर्व मिथ्याउप
चारकिया
सव्वधम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे देवसिओ
सर्व धर्म क्रियाका पहवी आसातनाज्यो मे दिवस ने
उल्घन किया विषे
अइयारे कओ तस्स खमासमणो पडिक्कमामि
अति चारे किया तेहनों हे क्षमावंत श्रमण निवर्तूं छू
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ इति ॥
निन्दूं छूं गरहूं छू आतमाथी वोसराऊं छू

अथ: आगमें तिविहे पन्नत्ते ।

आगमे तिवहे पन्नत्ते तंजहा सुत्तागमे
आगम तीन प्रकारे प्ररूप्या ॥ ते कहे छै सूत्र आगम
अत्थागमे तदुभयागमे ॥ एहवा श्रीज्ञान ने
अर्थ आगम सूत्र अर्थ दोनू आगम
विषे अतिचार दोष लाग्यो होय ते आलोऊं—
जवाइध वच्चामेलिय हिनक्खरं अच्चक्खरं पयहीण
जे कोई वचन मिलाया हीणअक्षर अधिक पदहीण
होय अक्षर

विणयहीणं जोगहिणं घोसहिणं सुट्ठुदिणं
विनय हिण ते मन वचन उच्चारण चोखो सूत्र
अविनय काया हीण दीनूं अवनीतने

दुट्ठुपडिच्छियं अकालिकउ सिज्झाउ काले
खोटा सूत्रकी इच्छा विनाकाले सज्झाय करी सज्झा
करी यनां

न कउसिज्झाउ असिज्झाए सिज्झाए सिज्झाए
कालमें सज्झाय न असज्झाय में सज्झाय सज्झायमें
करी करी

न सिज्झाए भणतां गुणतां चितारतां चोखतां ज्ञानकी
सज्झाय न करी

ज्ञानवंत की आसातनां करी होवे तस्समिच्छामिदुक्कडं।
तेहनो मिच्छामि दुक्कडं

अथ: दंसणश्रीसमकित।

दंसणश्रीसमकित अरिहंतो महदेवो जावजीवं
शुद्धश्रद्धना ते समकित, तेह अरिहन्त मांहिरे, जाव जीव
दर्शन देव लग

सुसाहुणो गुरुणो जिणपन्नतं तत्तं इयसम्मत्तं
शुद्ध साधु गुरु जिन परूप्यो ते तत्व यह समकित
धर्म्म

मए गहियं।
मैं ग्रहणकियो

एहवा समकितने विषै जे कोई अतिचार लाग्या होय ते आलोऊं जिन वचन साचा न सरध्या होय, न प्रतित्याहोय न रुच्या होय, पर दर्शणरी आकांक्षा वच्छा कीधी होय, फल प्रते सशय सदेह आण्यो होय, पर पाषण्डी री प्रशसा करी हुवे साथवतो परिचय कीधो होय। एहवाथी समकित रूपी रत्न ऊपरे मिथ्यात्व रूप रज्ज मैल खेह लागी होय तस्समिच्छामि दुक्कड।

॥ अथ बारे व्रत ॥

पढमे अणुव्वए थूलाउ पाणाइवायाउ
प्रथम देशथी व्रत मोटको प्राणातिपात को
विरमणं, व्रत पाच बोले करी उलखीजे, द्रव्यथकी
निवर्तवो व्रत
त्रस जीव बेइन्द्री तेइन्द्री चौइन्द्री पंचेन्द्री विन अपराधे आकुटी हणवानी विधि करीनें सउपयोग हणूं नही हणाऊं नही मनसा वायसा कायसा। द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्र माहि कालथकी जावजीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारे पहला व्रतनें विषे जे कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

जीवनें गाढै बन्धन बांध्या होय १ गाढा घाव घाल्या होय २ चामड़ी छेदन किया होय ३ अति भार घाल्या होय ४ भात पाणीनां विच्छोहा कीनां होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

बीए अणुव्वए थूलाउ मूसावायाउ विरमणं
बीजो अणू व्रत स्थूलथी झूंठ बोलवो निवर्तवो

पांचें बोले करी ओलखीने द्रव्यथकी कनालिक १
कन्याके तांई झूठ

गोवालिक २ भौमालिक ३ थापण मोसो ४
गाय भेंसादि भूमि निमित लेकर नटवो
कारण झूठ झूठ

कूड़ीसाख ५
झूठी साखी

इत्यादिक मोटको झूठ मर्याद उपरांत बोलूं नहीं बोलाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहीज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हारै दूजा व्रतने विषै जो कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं ।

किणही प्रते कूड़ो आलदियो होय १
रहस्य छानी बात प्रगट करी होय २
स्त्री पुरुषनां मर्म प्रकाश्या होय ३

मृषा उपदेश दोधा होय ४

कूडो लेख लिख्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड

तइये अणुव्वय थूलाउ अदिन्ना दाणाउ विरमण

तीजो अणूव्रत स्थूलथको अणदियो लेनो ते चारीको निवर्तवो

पांचे वोले करी ओलखीजे द्रव्यथकी खात्र खणी गाठ खोली तालो पडकूंची करी वाटपाडी पडोवस्तु मोटकी सधणिया सहित जाणी इत्यादिक मोटकी चोरी मर्याद उपरात करूं नहीं कराऊं नही मनसा वायसा कायसा द्रव्यथ की एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रा मे, कालथकी जावजीवलगे, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे तीजा व्रतमें ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊ ।

चोरकी चुराई वस्तु लीधी होय १ चोरने सहाय दीधी होय २ राज विरुद्ध व्योपार कीधो होय ३ कूडा तोला कूडामापा किया होय ४ वस्तु में भेल सभेल कीधो होय ५ सखरी दिखाय नखरी आपी होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति ॥

चउत्थे अणुव्वए थूलाउ मेहुणाउ विरमणं
चौथो अणूव्रत स्थूलथकी मैथुनथी निवर्तवो

पांचो बोलांकरो ओलखोजे द्रव्यथकी तो देवता देवांगना सम्बन्धिया मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं, तिर्यंच तिर्यंचणी सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनुष्य सम्बन्धी मैथुन सेवूं नहीं सेवावूँ नहीं, मनुष्यणी सम्बन्धी मैथुन सेवाकी मर्याद कीधी छे तिण उपरांत सेवूं नहीं सेवावूं नहीं मनसा वायसा कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी सवर निर्जरा एहवा म्हारे चौथा व्रतमें ज्यो कोई अतिचार दोष लागो होय ते आलोऊं।

थोड़ा कालकी राखी परिग्रही सुं गमन कीधो होय १ अपरिग्रही सूं गमन कीधो होय २ अनङ्ग क्रीड़ा कीधी होय ३ परायानाता विवाह जोड़्या होय ४ काम भोग तीव्र अभिलाषासे सेव्या होय ५

तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

॥ इति ॥

——

पंचम अणुव्वए थूलाउ परिग्गहाउ विरमणं
पाचमू अणूव्रत स्थूलथकी परिग्रह ते धनको निवर्तवो

पाचा बोला करी ओलखीजे द्रव्य थकी खेतु
उघाडी जमीन

वत्थु यथा प्रमाण हिरण सुवन्न यथा प्रमाण
ढकी जमीन जेह प्रमाण कीधो चान्दी सोनाको जे प्रमाण कीधो

धन धान यथा प्रमाण द्विपद चउप्पद यथा प्रमाण
द्रव्य धाननों जेह प्रमाण कीधो दासदासी हाथी घोडा, जे प्रमाण
द्विक चोपद कीधो

कुंभी धातु यथा प्रमाण ।
ताम्रो पीतल लोहादि नो जेह प्रमाण

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य, क्षेत्रथकी सर्वं क्षेत्रामें कालथकी जावजीव लगे, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारा पाचवा अणुव्रत मे ज्यो कोई अतिचार लागो होय ते आलोऊं, खेत्तु वत्थुरो प्रमाण अतिक्रम्यू होय १ हिरण्य सुवर्णरो प्रमाण अतिक्रम्यू होय २ धन धानरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ३ द्विपद चउपदरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय ४ कुम्भी धातुरो प्रमाण अतिक्रम्युं होय तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

छट्ठो दिशि व्रत पांचां बोलां ओलखिजै द्रव्य थकी तो ऊंचो दिशारो यथा प्रमाण, नीचो दिशारो यथा प्रमाण, तिरछी दिशारो यथा प्रमाण, यां दिशारो प्रमाण कीधो तेह उपरान्त जायकर पंच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी तो एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जाव जीवलग भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा एहवा मांहरे छट्ठा व्रतके विषै जे कोई अतिचार दोषलागो हुवे तो आलाऊं ।

ऊंची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय १
नीची दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय २
तिरछी दिशारो प्रमाण अतिक्रम्यो होय ३
एक दिशा घटाई होय एक दिशा बधाई होय ४
पंथमें आधो संदेह सहित चाल्यो चलायो होय ५
तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

सातमूं उपभोग परिभोग व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजै, द्रव्यथकी छब्बीस बोलांकी मर्याद ते कहै छै

उलणीयां विहं १ दंतनविहं २ फल विहं ३
अंग पूछनादि विधि दांतन विधि फल विधि

अभिगण विह ४	उवट्टण विह ५	मज्जन विहं ६
तैलाभिगादि तेल मालिस	उवटणादि की विधि	स्नानकी विधि
वत्थ विह ७	विलेवण विहं ८	पुप्फ विह ९
वस्त्र विधि	विलेपन विधि	पुष्प विधि
आभरण विहं १०	धूप विहं ११	पेज विहं १२
गहणा पहरवा विधि	धूपकी विधि	दूध आदि पीवाकी विधि
भक्खण विहं १३	उदन विहं १४	सूप विहं १५
सूखडी आदि भक्षण की विधि	चावल की विधि	दालकी विधि
विगय विह १६	साग विहं १७	महुर विहं १८
विगयकी विधि	सागकी विधि	मधुर तथा केलादि फल
जीमण विहं १९	पाणी विहं २०	मुखवास विह २१
जीमणकी विधि	पाणीकी विधि	मुखवास तांबूलादि की विधि
वांहण विहं २२	सयण विह २३	पन्नी विहं २४
गाडी प्रमुखकी विधि	सोयाकि विधि पाट पुरसी आदिपर	पगरखी की विधि
सचित्त विहं २५	द्रव्य विहं २६	
सचित की विधि	द्रव्यकी विधि	

ए छवीस बोलांकी मर्यादा करी. जिण उपरान्त भोगवूं नहीं मनसा, वायसा, कायसा, द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामें, कालथकी जाव

जीवलग, भावथकी राग द्वेष रहित, उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा सांहरा सातमां व्रत के विषे जो कोई अतिचार दोष लागो हुवे ते आलोउं पच्चखाणां उपरान्त सचित्तरो आहार किनो होय १ पच्चखाणां उपरान्त द्रव्यरो आहार कीनो होय २ पच्चखाणां उपरान्त गहिणां अधिका पहर्या होय ॥ ३ ॥ पच्चखाणां उपरान्त कपड़ा अधिका पहर्या होय ॥ ४ ॥ पच्चखाणां उपरान्त उपभोग परिभोग अधिका भोगव्या होय । तस्समिच्छामि दुक्कडं ।

पंदरह करमादान जाणवा जोग छै पण आदरवा जोग नहीं ते कहै छै

इंगालकम्मे १ — अग्नि करि लुहारादि कर्म

वणकम्मे २ — वन कर्म ते वनमें घास, दरखातादि काटवो

साड़ीकम्मे ३ — सकट कर्म ते गाड़िप्रमुखनो कर्म

भाड़ी कम्मे ४ — भाड़ा कर्म

फोड़ी कम्मे ५ — लूपादि कर्म ते नारेल सुपारी पत्थर आदि फोड़वो

दन्तवाणिज्जे ६ — दांतको विणज ते व्योपार

लख्खवाणिज्जे ७ — लाख को वाणिज्य

रसवाणिज्जे ८ — रस व्यापार ते घी, तेल सहतादि

केसवाणिज्जे ९ — वाल चमरादि व्योपार

विषवाणिज्जे १०　　　जन्तु पिलणया कम्मे ११
जहरको व्यापार　　　कल प्राणी प्रमुख व्यापार
निलच्छणियां कम्मे १२　　'दवगीदावणिया कम्मे १३
कन्नी वध्रियादि कम ते　　　दावानलदेवो कर्म
ज्यानवरने बाधो कर्म
सर द्रह, तलाव सोसणिया कम्मे १४　　असइजण
सरोवर द्रह　तलाव सोषाया ते कम　　असजतीनें
पोसणिया कम्मे १५ ॥ इति ॥
पोषवा　नो कर्म

ए पन्दरे कर्मादान मर्याद उपरान्त सेव्या सेवाया होय तस्स मिच्छामि दुक्कड ॥ इति ॥

आठमूं अनर्थ दड विरमण व्रत पांचां बोलाकरी ओलखीजे, द्रव्यथकी अवज्भाणाचरिय १
भूंडा ध्यान नों आचरवो
पम्माय चरियं २　　हिंसपयाण ३　　पावकम्मोवएसं ४
प्रमाद करवो　　प्राण हिंसा　　पाप कर्मको उपदेश

ए च्यार प्रकारे अनरथ दंड आठ प्रकारका आगार उपरान्त सेऊ नहीं ते कहे छे।

आएहिउवा १　नाएहिउवा २ आवारिहिउवा ३
आपणे हित　　न्यातिके हित　　घरके हित
परिवारहिउवा ४　मित्तहिउवा ५　नागहिउवा ६
परिवार के हित　　मित्र के हित　　नाग देवता निमित्त

भूतहिउवा ७ जक्खहिउवा ८
भूत देवता जक्ष देवता
निमित्त निमित्त

द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रांमें कालथकी जाव जीव लग, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुणथकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा आठमां व्रत के विषे जे कोई अतिचार दोष लागोहुवे ते आलोऊं ।

कंदर्पनी कथा कीधी होय १ भंडकुचेष्टा कीधीहोय २
काम क्रीड़ाकी कथा करवो भांडनीपरै कुचेष्टाकरी होय
मुखसे अरि वचन बोल्या होय ३ अधिकरण
मुखसे खोटा वचन बोल्या होय नाताजोड़कर
जोड़ मुकाया होय ४ उपभोग परिभोग
तुड़ाया तथा स्त्री भरतार एकवार भोग बारम्बार भोग
नो विरह कियो में आवै ते में आवै ते
अधिक भोगव्या होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कडं
मर्याद उपरांत अधिक तो मिच्छामि दुक्कडं
भोग्या होय ते

॥ इति ॥

नवमो सामायक व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे
करेमि भन्ते सामाइयं सावज्जं जोगं पच्चखामि
करूं छूं मैं हे भगवंत सामायक सावद्य जोग पच्चखाण

सत्थ मुसलादि सावज्ज जोगरा पच्चखाण
शस्त्र मूसलादिक सावद्य जोग का पचखाण
इत्यादि पच्चखाण, करने द्रव्यरांख्या जिणा उपरान्त
पच आस्रव द्वार सेऊं नही सेवाऊ नही मनमा
वायसा कायसा द्रव्यथी एहिज द्रव्य क्षेत्रथी सर्व क्षेत्रा
में कालथकी (दिवस) अहो रात्रि प्रमाण भाव थकी
राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी सवर निर्जरा
एहवा म्हारे इग्यारमां वृतके विषे जे कोई अतिचार
दोष लागो होवे ते आलोऊं ।

सेज्जा संथारो अपडिलेहाहोय दुपडिलेहा
सोवाकी जगा बिसतरो पडिलेहा नही होय अच्छी तरह नहीं
होय १ अप्रमार्ज्यो होय दुप्रमार्ज्यो होय २
पडलेहना नहीं प्रमार्ज्या आच्छी तरह नही प्रमार्ज्य करी

उच्चारपासवणरी भूमिका अपडिलेहीहोय दुपडि
छोटी बडी नीतकी जमीन नहीं पडिलेही होय अथवा
लेहा होय ३ अप्रमार्जी होय दुप्रमार्जी होय ४
पोषहमें निन्दा विकथा कषाय प्रमादकरी होय ५
तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति ॥

बारमूं अतिथी सविभाग व्रत पाचां बोलाकरी
ओलखीजे द्रव्यथकी ।

समणे निग्गंथे फासू एसणीज्जेणं असणं १
श्रमण निग्रंथ ने फासुक निर्दोष आहार
अचित

पाणं २ खादिमं ३ स्वादिमं ४ वत्थ ५ पडिग्गह ६
पाणी मेवो लोंग सुपारी आदि वस्त्र पात्रो

कंबल ७ पाय पुच्छणं पाडियारा ८ पीढ
कांवलों पग पूंछणो जाचीनें पाछा पाटा
सोलावै ते

फलग १० सेज्या ११ संथारो १२ औषद १३
बाजोटादि जमीन जायगां त्रणादिक १ दवाई

भेषद १४ पडिलाभमाणे विहरामि ॥
चूर्णादि घणीं मिली प्रतिलाभ तो थको विचरूं

इत्यादिक चवदे प्रकारनूं दान शुद्ध साधुने देऊं देवाऊं देवता प्रतेभलो जाणूं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज कलपतो द्रव्य, क्षेत्रथकी कलपै तके क्षेत्रमें, कालथकी कलपै जिन कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित, गुण थकी संवर निर्जरा, एहवा म्हांरा बारमा बृतके विषै जे कोई अतिचार दोष लागो होवे ते आलोऊं सूजती वस्तु अचित पर मेली होय १ सचित्तथी ढांकी होय २ काल अतिक्रम्यो होय ३ आपणी वस्तु पारकी पारकी

जाव नियम (मुहूर्त्तं एक) पज्जवासामी दुविहंणं
यावन नियम एक मुहूर्त्त ते सेऊ छू दोय करण
दोय घडी

तिविहेणं नकरेमि नकारवेमि मनसा वायसा
तीन जोग नहीं करु नहीं कराऊं मनसे वचन से

कायसा तसभंते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि
शरीरसे तिणसू हे भगवान पडिकमू निन्दू छू ग्रहणा ते निषेधूं छू

अप्पाणं वोसरामि ॥
पाप ते आतमानेवोसराऊ छू

द्रव्यथकी कने राख्या ते द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रामे कालथकी एक मुहूर्त्त तांई भावथकी राग द्वेष रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा नवमा व्रतके विषे जे कोई अतिचार दोष लागी हुवै ते आलोऊं ।

मन वचन कायाका माठा जोग प्रवर्ताया होय १ पाडवा ध्यान प्रवर्ताया होय २ सामायक मे समता नहीं करी होय ३ अण पूगी पारी होय ४ पारवो विसार्यो होय ५ तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति ॥

दशमों देशाविगासी व्रत पाचा वोलाकरी ओल- खीजे द्रव्यथकी दिन प्रते प्रभातथी प्रारंभीनें पुर्वादि

छव दिशिरी मर्याद करी तिण उपरान्त जाई पांच आस्रव द्वार सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं तथा जेतली भोमिका आगार राख्या तिणमें द्रव्यादिकरी मर्याद करी तिण उपरान्त सेऊं नहीं सेवाऊं नहीं मनसा वायसा कायसा द्रव्यथकी एहिज द्रव्य क्षेत्रथकी सर्व क्षेत्रां में कालथकी जेतलो काल राख्यो भाव थकी राग द्वे रहित उपयोग सहित गुणथकी संवर निर्जरा एहवा म्हारे दशमा व्रतके विषै जे कोई अतिचार दोष लागोते आलोऊं।

नवीं भूमिका बारली वस्तु मगाई होवे १ मुकलाई होवे २ शब्दकरी आपो जणायो होय ३ रूप देखाई आपो जणायो होय ४ पुद्गल न्हाखी आपो जणायो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

॥ इति ॥

इग्यारमूं पोषद व्रत पांचां बोलांकरी ओलखीजे द्रव्यथकी।

असण पाण खादिम स्वादिमनां पच्चखाण

आहार पाणी मेवादिक पान सुपारीदिक को पच्चखाण

अवम्भनां पचखाण उमकमणी सुवन्ननां पच्चखाण

मैथुन सेवाका त्याग वोसरायो हुयो रत्न सोना का पच्चखाण

माला वणग विलेवन नां पच्चखाण

पुष्पमाला गुलाल रंगादिक चन्दनादिक नो विलेपनका त्याग

वस्तु आपणी कीधो होय ४ मार्गों वैठ साधु साध्वीया-
की भावना नहीं भावी होय तो मिच्छामि दुक्कड ।

॥ इति ॥

अथ संलेखणा की पाटी ।

इह लोगा संसह पउगो १ परलोगाससह
इह लोकको यशकी तथा पर लोकमें सुखकी
द्रव्यादिक की इच्छा
पउगो २ जीविया संसह पउगो ३ मर्णाउ संसह
वाछा जीवन की इच्छा मरण की
पउगो ४ काम भोगा ससहपउगो ५ माम
इच्छा काम भोगकी इच्छा ए मुजरें
त हुज्ज मरणान्ते ।
मर्णान्त तक मत होज्यो । ॥ इति ॥

अथ अठारे पाप ।

प्राणातिपात १ मृषावाद २ अदत्तादान ३
मैथुन ४ परिग्रह ५ क्रोध ६ मान ७ माया ८ लोभ ९
राग १० द्वेष ११ कलह १२ अभ्याख्यान १३ पैशुन्य
१४ पर परिवाद १५ रति अरति १६ माया मोसो १७
मिथ्या दर्शन सल्य ॥ इति ॥

तस्स सव्वसदेवसी यस्स आयारस्स दुचिन्तियं दुभासियं
ते सर्व दिवसनें अतिचार खोटी चिन्तवना खोटी भाषा

दूचिट्ठीयं आलोयंते पड़िक्कमामि निंदामि
खोटो चेष्टा कायाकी आलोऊं तेह पडिक्कमेऊं निन्दूं
गरिहामि अप्पाणं वोसरामि ॥
ग्रहणा करूं पाप कर्मथी आतमां नें वोसराऊं

॥ इति ॥

अथ तस्सधम्मस ।

तस्स धम्मस्स केवली पन्नत्तस्स अब्भुट्ठि एमि
तेह धर्म केवली परूप्यो तेहने विषै उठ्यो छूं
आराहणाए विरउमि विराहणाए सव्वेतिविहेणं
आराधन निमित्त निवर्तूं छूं वीराधनाथी अतिचार सर्व त्रिविध करी
पडिक्कंतो, वंदामि जिन चौवीसं ॥
पड़िकमूं छूं वांदूं छूं जिनराज चौवीस

॥ इति ॥

अथ मंगलिक।

चत्तारि मंगलं अरिहन्ता मङ्गलं सिद्धा मङ्गलं
च्यार मंगलिक अरिहन्त मंगल छे सिद्ध मंगलकारि छे
साहु मङ्गलं केवली पन्नत्तो धमो मङ्गलं ॥
साधु मंगल केवली परूप्यो धर्म ते मंगल
चत्तारिलोगुत्तमा अरिहन्ता लोगुत्तमा
ए च्यार लोकमें उत्तम जाणवा अरिहन्त लोकमें उत्तम
सिद्धा लोगुत्तमा साहुलोगुत्तमा केवली
सिद्ध लोकमें उत्तम साधु लोकमें उत्तम केवली

पन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमा चत्तारि सरणं
प्ररूप्यो धर्म ते लोक में उत्तम च्यार शरणा
पवज्जामि अरिहन्ता सरणं पवज्जामि सिद्धा
ग्रहणकरू अरिहन्तों का शरणा ग्रहण करता हू सिद्धाका
सरणं पवज्जामि साहु सरणं पवज्जामि केवली
शरणा लेता हू साधुका शरण हैं केवली
पन्नत्तो धम्मो सरणं पवज्जामि।
प्ररूपित धर्मका शरण ग्रहण करता हू

च्यारी सरणा एसणा अवर न सणो कोय जे भव प्राणी आदरे अक्षय अमर पद होय।

॥ इति ॥

अथ देवसी प्रायश्चित।

देवसी प्रायश्चित विसोद्धनार्थं करेमि काउसग्गं
दिवसनों प्रायश्चित शुद्ध करवाने अर्थे करू छू काउस्सग

॥ इति प्रतिक्रमण ॥

अथ पडिक्कमणां करने की विधि।

प्रथम चौवीस्था करणो जिणमें

१ इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी। २ तस्सुत्तरी की पाटी। ध्यानमें इच्छामि पडिक्कमेउ की पाटी मन में चितारकर एक नवकार गुणनो। ३ लोगस्सउज्जो-गरे की पाटी। ४ नमोत्थु णं की पाटी।

१ प्रथम आवसग्ग सामायक में ।

१ आवस्सई इच्छामिणं भंते ।

२ नवकार एक ।

३ करेमि भंते सामाईयं ।

४ इच्छामिठामि काउसग्गं ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें ९९ नन्नाणवे अतिचार ।

आगमें तिविहे पन्नंते की पाटी तिणमें ज्ञानका चवदे अतिचार ।

दंसण श्रीसमत्ते की पाटी तिणमें समकितका ५ अतिचार ।

बारे व्रतांका अतिचार ६० साठ तथा १५ पंदरह कर्मदान ।

इह लोग संसह पउगोकी पाटी अतिचार ५ संलेखणांका ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि आलोऊं जो मैं देवसी आयारकउ ए पाटी कहणी ।

एक नवकार कह पारलेणी ।

॥ इति प्रथम आवसग्ग समात ॥

दूसरा आवस्सग की आज्ञा ।

लोगस्सकी पाटी

॥ इति दूजो आवस्सग समाप्त ॥

तीजा आवस्सग की आज्ञा ।

दोय खमा समणां कहणा ।

॥ तीजो आवस्सग समाप्त ॥

चौथा आवस्सग की आज्ञा ।

उभाथकां ध्यानमे कह्या सो प्रगट कहणा ।

८ आठ पाटी बैठा थका कहणी जिणाकी बिगत ।

१ तस्स सव्वस्सकी पाटी ।

२ एक नवकार ।

३ करेमि भंते सामाईयं की पाटी।

४ चत्तारि मगल की पाटी ।

५ इच्छामि ठामि पडिक्कमेउ जो मैं देवसी ।

६ इच्छामि पडिमेक्कउ की पाटी ।

७ आगमे तिविहे की पाटी ।

८ दसण श्री समकीत्त की पाटी ।

ए आठ पाटी कही, बारे व्रत अतिचार सहित कहणा।

पाच सलेषणा का अतिचार कहणा ।

अठारे पाप स्थानक कहणा ।

इच्छामि ठामि पड़िक्कमेउ जो मैं देवसीकी पाटी कहणी तस्स धमस्स केवली पन्नतस्सकी पाटी, दोय खमासमणां कहणा ।

पांच पदांकी बंदणा कहणी ।

सातलाख पृथ्वीकाय सातलाख अपकाय इत्यादि खमत खामणाकी पाटी ।

॥ चौथो आवस्सग समाप्त ॥

पंचमा आवस्सग की आज्ञालई कहै ।

१ देवसी प्रायश्चित् विसोधनार्थं करेमि काउसग्ग

२ एक नवकार ।

३ करेमिभंते सामाईयं की पाटी ।

४ इच्छामि ठामि काउसग्ग की पाटी ।

५ तस्सुत्तरी की पाटी ।

ध्यानमें लोगस्स कहणाकी परमपराय रीतीसे ।

प्रभाते तथा सांझ वक्त ४ च्यार लोगस्सको ध्यान ।

पखीनें १२ बारे लोगस्स को ध्यान ।

चौमासी पखीनें २० बीस लोगस्सको ध्यान सम्वत्सरीने ४० चालीस लोगस्सको ध्यान ।

ध्यान पारी लोगस्सकी एक पाटी प्रगट कहणी ।

२ दोय खमासमणां कहणा ।

॥ इति पंचमूं आवस्सग समाप्त ॥

छट्ठा आवसग्गकी आज्ञालेई कहणा ।

तेहनी विगत ।

गये कालनूं पडिक्कमणो वर्तमान कालमें समता आगरों कालका पच्चखाण यथा शक्ति करणा ।

समाई १ चौवीसत्थो २ वंदना ३ पडिक्कमणो ४ काउसग्ग ५ पच्चखाण ६ या छव्ह आवसग्गा में ऊणो नीचो हिणो अधिको पाटी कही होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दोय नमोत्थु णं कहणा, जिणमें पहिला में तो सिद्धिगई नाम धेय ठाण सपताणं नमो जिणाणं ।

दूजा नमोत्थु णं में सिद्धिगई नाम धेय ठाणं संपवि-कामी नमो जिणाणं ।
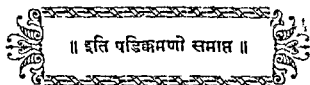
॥ इति पडिक्कमणो समाप्त ॥

❀ अथ तेरा द्वार ❀

प्रथम मूल द्वार ।

१ मूल १ दृष्टान्त २ कुण ३ आत्मा ४ जीव ५ अरूपी ६ निरवद्य ७ भाव ८ द्रव्य गुण पर्याय ६ द्रव्यादिक १० आज्ञा ११ विनय १२ तलाव १३ ए तेराद्वार जाणवा, प्रथम मूल द्वार कहै छै—जीव ते चेतना लक्षण, अजीव ते अचेतना लक्षण, पुन्य ते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म, कर्म ग्रहैते आस्रव, कर्म रोकै ते संवर, देशथकी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्वल थाय ते निर्जरा, जीव संघाते शुभाशुभ कर्म बंध्या ते बंध, समस्तकर्मां से मूकावे ते मोक्ष ।

॥ इति प्रथम द्वार सम्पूर्ण ॥

दूसरो दृष्टान्त द्वार ।

जीव चेतन का २ दोय भेदः—

एक सिद्ध, दूजो संसारी, सिद्ध कर्मां रहित छै, संसारी कर्मा सहित छै, तिणरा अनेक भेद छै—

सूक्ष्म अने बादर, त्रस ने स्थावर, सन्नी अनें असन्नो, तीन वेद, च्यार गति, पांच जाति, छव काय, चौदे भेद जीवनां, चौवीस दंडक, इत्यादिक अनेक भेद जाणवा, ते चेतन गुण ओलखावानें सोनांनो दृष्टान्त कहै छे, जिम सोनांनो गहणो भाजी भांजी नें और और आकारे घडावे तो आकार नो विनाशथाय पण सोनानों विनाश नथी, तिम कर्मों ने उदय थी जीव की पर्याय पलटै पण मूल चेतन गुण का विनाश नहो।

अजीव अचेतन तिणरा पांच भेद —

धर्मास्ति, अधर्मास्ति, आकाशास्ति, काल पुद्गलास्ति, तिणमें च्यारांकी पर्याय पलटै नहो एक पुद्गलास्ति की पर्याय पलटै ते ओलखावा नें सोनानों दृष्टान्त कहै छे जिम कोई सोनांनों गहणो भांजी भांजी और और आकारे घडावे तो आकारनों विनाश होय सोनानो विनाश नहो, ज्यूं पुद्गल की पर्याय पलटै पण पुद्गल गुण को विनाश नहो।

पुन्यते शुभ कर्म, पापते अशुभ कर्म ते पुन्य पाप ओलखावाने पथ्य अपथ्य आहारनो दृष्टान्त

कहै छै कदेक जीवके पथ्य आहार घटै और अ-
पथ्य आहार वधै, तो जीव के निरोगपणों घटै
अने सरोगपणों वधै. कदे जीवरे अपथ्य आहार
घटे पथ्य वधे तव जीवरे सरोगपणो घटै अने
निरोगपणों वधै पथ्य अपथ्य दोनूं घट जाय तो
प्राणी मरण पामें, ज्यों जीवके पुन्य घटै अरु पाप
वधैतो सुख घटै अने दुख वधै, कदे जीवरे पुन्य
घटै अरु पाप वधै तो सुख घटै अने दुख वधै,
पुन्य पाप दोनूं खय होय तो जीव मोक्ष पामें, कर्म
ग्रहते आस्रव ते ओलखावानें तीन दृष्टान्त पांच
कहण कहै छे ।

१ प्रथम कहण ।

१ तलाव रे नालो ज्यूं जीवरे आस्रव ।
२ हवेली के बारणों ज्यों जीवरे आस्रव ।
३ नाव के छिद्र ज्यों जीवरे आस्रव ।

२ दूजो कहण कहै छे ।

१ तलाव अने नालो एक ज्यूं जीव आस्रव एक।
२ हवेली बारणों एक ज्यों जीव आस्रव एक ।
३ नावं अने छिद्र एक, ज्यूं जीव आस्रव एक ।

३ कर्म आवे ते आस्रव ते ओलखावानैं ३ तीजो कहण कहे छै ।

१ पाणी आवै ते नालो ज्यों कर्म आवै ते आस्रव ।

२ मनुष्य आवे ते वारणो ज्यो कर्म आवै ते आस्रव ।

३ पाणी आवै ते छेद्र ज्यौं कर्म आवै ते आस्रव ।

४ इम कह्या थकां कोई कर्म अने आस्रव एक श्रद्धे तेहनैं दोय श्रद्धावाने चौथौ कहण कहे छै ।

१ पाणी अने नालो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

२ मनुष्य अने वारणो दोय ज्यों कर्म अने आस्रव दोय ।

३ पाणी छेद्र दोय ज्यो कर्म अने आस्रव दोय ।

५ विशेष ओलखावाने पांचमूं कहण कहे छै

१ पाणी आवे ते नालो पण पाणी नालो नहीं ज्यां कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं ।

२ मनुष्य आवे ते बारणा पण मनुष्य बारणों नहीं, ज्यों कर्म आवे ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

३ पाणी आवे ते छेद्र पण पाणी छद्र नहीं ज्यों कर्म आवै ते आस्रव पण कर्म आस्रव नहीं।

कर्म रोके ते संवर ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तालाव रो नालो रूंधे ज्यों जीवरे आस्रव रूंधे ते संवर।

२ हवेलीरो बारणों रूंधे ज्यों जीवरे आस्रव रूंधे ते संवर।

३ नावांरे छेद्र रूंधे ज्यूं जीवरे आस्रव रूंधे ते संवर।

देशथकी कर्म तोड़ी जीव देशथी उज्वल थायते निर्जरा ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छै।

१ तालावरो पाणी मोरीयांदिक करी ने काढै ज्यों जीव भला भाव प्रवर्त्तावी ने जीव रूपीयो तलावरो कर्म रूपीयो पाणी काढै ते निर्जरा।

२ हवेलीरो कचरो पूंजी पूंजी ने काढै ज्यों भला

भाव प्रावर्तावी ने जीव रूपणो हवेलीरो कर्म रूपीयो कचरो काढे ते निर्जरा ।

३ नावा को पाणी उलेची २ ने काढे ज्यूं जीव भला भाव प्रवर्तावी ने जीव रूपणी नावांको कर्म रूपीयो पाणी काढे ते निर्जरा ।

जीव संघाते कर्म बंधिया हुवाते बंध ते ओलखावाने छव बोल कहे छे ।

१ पहिले बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्मनो आदि छै ए बात मिले कि न मिले । गुरु बोल्या न मिले (प्रश्न) क्यूं न मिले गुरु बोल्या ए उपनो नही ।

२ दूजे बोले कहो स्वामीजी पहिलो जीव और पाछे कर्म ए बात मिले । गुरु बोल्या नही मिले प्रश्न—क्यों न मिले.—उ०—कर्म विना जीव रह्यो किहां मोक्ष गयो पाछो आवे नही यो न मिले ।

३ तीजे बोल कहो स्वामीजी पहलो कर्म और पाछे जीव ए मिले गुरु कहे नहा मिले ।

प्र०—क्यो न मिले । गुरु कहे कर्म कियां विना हुवे नहो तो जोव विना कर्म कुण किया

४ चौथे बोल कहो स्वामीजी जीव कर्म एक साथ उपना ए मिले गुरू कहै न मिले ।
प्र०—किणन्याय । उ०—जीव कर्म या दोयां ने उपजावण वालो कुण ।

५ पांच में बोल जीव कर्म रहित छै ए वात मिले गुरू कहै न मिले । प्र०—किणन्याय । उ०—ए जीव कर्म रहित होवे तो करणी करवारी खप (चूंप) कुणकरै मुक्त गयो पाछो आवै नहीं ।

६ छठे बोले कहो स्वामीजी जीव अने कर्म नों मिलाप किणा विधि थाय छे गुरू कहै अपच्छा न पूर्व पणे अनादि कालसे जीव कर्म नो मिलाप चल्यो आय छै ।

तिण बंधरा ४ च्यार भेद छै ।

प्रकृति बंध कर्म सभावरे न्याय १ स्थिति वन्ध काल व्यवहाररे न्याय २ अनुभाग वन्ध रस विपाकरे न्याय ३ प्रदेश वन्ध जीव कर्म लोली भूतरे न्याय ।

ते ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहै छै ।

१ तेल अने तिल लोली भूत ज्यों जीव कर्म लोली भूत ।

२ घृत दूध लोलो भूत ज्यूं जीव कर्म लोलो भूत ।
३ धातू माटी लोली भूत ज्यूं जीव कर्म लोलो भूत ।

समस्त कर्मासे मूकावे ते मोक्ष ओलखावाने तीन दृष्टान्त कहे छे ॥

१ घांणियांदिकनूं उपायकरी तेल खल रहित होवे ज्यूं तप सजमादि करी जीव कर्मा रहित होवे ते मोक्ष ।
२ भेरणादिक को उपायकरी घृत छाछ रहित होवे ज्यु तप संजमकरी जीव कर्मा रहित होवे ते मोक्ष ।
३ अग्नियादिकनूं उपायकरी धातु माटी अलग होवे ज्यूं तप संजमकरी जीव कर्मा रहित होवे ते मोक्ष ।

॥ तीजो कोण द्वार ॥

जीव चेतन छवद्रवामे कोण नव पदार्थों मे कोण छवद्रवां मे तो एक जीव नव पदार्थों मे पाच जीव १ आस्रव २ सवर ३ निर्जरा ४ मोक्ष ५

अजीव अचेतन छवमें कोण नवमे कोण:— छवमे ५ पांच, नवमे ४ च्यार, छव द्रवा में तो

धर्मास्ति १ अधर्मास्ति २ आकाशास्ति ३ काल ४ पुद्गलास्ति ५, नव पदार्थों में अजीव १ पुन्य २ पाप ३ वंध ४ ।

पुन्यते शुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण: छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन, अजीव १ पुन्य २ बंध ३

पाप ते अशुभ कर्म छवमें कोण नवमें कोण छवमें एक पुद्गल, नवमें तीन अजीव १ पाप २ वंध ३

कर्म ग्रह ते आस्रव छवमें कोण नवमें कोण: छवमें जीव, नवमें जीव १ आस्रव २

कर्मरोके ते संवर छवमें कोण नवमें कोण छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

देशथी कर्म तोड़ी देशथी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा छवमें कोण नवमें कोण:—छवमें जीव, नवमें जीव १ निर्जरा २

वंध छवमें कोण नवमें कोण—छवमें पुद्गल नवमें अजीव १ पुन्य २ पाप ३ वंध ४

मोक्ष छवमें कोण नवमें कोण—छवमें जीव नवमें जीव मोक्ष ।

चाले ते कोण चालवानो साझ किणरो:—चाले ते जीव पुद्गल, अनें साझ धर्मास्तिकायनो

थिर रहै ते कोण थिर रहवानों साझ किणरो—थिर रहै जीव पुद्गल, साझ अधर्मास्तिकायनो

वस्तु ते कोण भाजन किणरो:—वस्तु तो जीव पुद्गल, भाजन आकाशास्तिकायनो

वरते ते कोण वर्ते किण ऊपरे—वरते तो काल अने वरते जीव अजीव ऊपर

भोगवे ते कोण अने भोग मे आवे ते कोण—भोगवे ते जीव भोगमे आवे ते पुद्गल दोय प्रकारे एक तो शब्दादिक पणे दूजो कर्म पणे

कर्मा रा करता कोण कीधा होवे ते कोण:—करता तो जीव कीधा हुवा कर्म।

कर्मा रो उपाय ते कोण उपना ते कोण:—उपाय तो जीव उपना ते कर्म

कर्मा ने लगावे ते कोण लग्या हुआ ते कोण—लगावे ते जीव, लागे ते कर्म।

कर्म रोके ते कोण रुक्या ते कोण:—रोके तो जीव, रुक्या ते कर्म।

कर्मा ने तोडे ते कोण तूट्या ते कोण:—तोडे ते जीव अने तूट्या ते कर्म

कर्मा ने बांधे ते कोण बंध्या ते कोण बांधे ते जीव बंध्या ते कर्म।

कर्मा नैं खपावै ते कोण अने जयथया ते कोण खपावै ते जीव जयथया ते कर्म

॥ इति तृतीय द्वारम् ॥

॥ अथ चौथो आतमा द्वार कहे छै ॥

जीव चेतन ते आत्तमा छै अनेरो नहीं ।

अजीव अचेतन आत्तमा नहीं अनेरो छै ।

आत्तमारे काम आवे छै पण आत्तमा नहीं ।

कोण कोण काम आवैते कहै छै :—

धर्मास्तिकाय अवलम्ब ने चालै छै ।

अधर्मास्तिकाय अवलम्ब नें स्थिर रहै छै ।

आकाशास्तिकाय अवलम्ब ने वसै छै ।

काल अवलम्बने कार्य करै छै ।

पुद्गल खाय छै, पीवै छै, पहरे छै, ओढै छै इत्यादि अनेक प्रकारे आत्तमारे काम आवै छै पण आत्तमा नहीं । पुन्यते शुभ कर्म आत्तमारे शुभ पणों उदय आवैं छे पण आत्तमा नहीं ।

पापते अशुभ कर्म आत्तमारे अशुभ पणों उदय आवे छै पण आत्तमा नहीं ।

शुभाशुभ कर्म ग्रह ते आस्त्रव आत्तमा छै अनेरो नहीं ।

कर्म रोके ते संवर आत्मा छे अनेरो नहीं देशथकी कर्म तोडी देशथकी जीव उज्जल थाय ते निर्जरा आत्मा छे अनेरो नहीं ।

जीव समाते कर्म बधाणा ते बंध आत्मा नहीं अनेरो छे आत्मा ने बांध राखी छे पण आतमा नहीं ।

समस्त कर्मा से मूकावे ते मोक्ष आत्मा छे अनेरो नहीं ।

॥ इति चतुर्थं द्वारम् ॥

॥ अथ पांचमूं जीव द्वार कहे छे ॥

जीव ते चेतन तिण जीवने जीव कहीजे जीवने आस्रव कहीजे जीवने संवर कहीजे जीवने निर्जरा कहीजे जीव ने मोक्ष कहीजे ।

अजीव अचेतन न अजीव कहिजे पुन्य कहीजे पाप कहीजे बंध कहीजे ।

पुन्यते शुभ कर्म तेहने पुन्य कहीजे तेहने अजीव कहीजे तेहने बंध कहीजे ।

पाप ते अशुभ कर्म तेहने पाप कहीजे अजीव कहीजे बंध कहीजे ।

कर्म ग्रह ते आस्रव कहीजे तेहने जीव कहीजे ।

कर्म रोके ते संवर कहीजे जीव कहीजे ।

देशथकी कर्म तोड़ी देशथकी जीव उज्जलथाय तेहने निर्जरा कहीजे जीव कहीजे ।

जीव संघाते कर्म बंधाणा ते वंध कहीजे अजीव कहीजे । पुन्य कहीजे पाप कहीजे ।

समस्त कर्म मुकावै ते मोक्ष कहीजे जीव कहीजे हिवे एहनों ओलखणा न्याय सहित कहै छे ।

जीव ने जीव किणन्याय कहीजे, गये काल जीव छो वर्तमान काले जीव छे आगमे काल जीव को जीव रहसी इणन्याय ।

अजीव ने अजीव किणन्याय कहीजे, गये काल अजीव छो वर्तमान काले अजीव छे आगमे काल अजीव को अजीव रहसो ।

पुन्य ने अजीव किणन्याय कहीजे, पुन्य ते शुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते अजीव छे

पाप ने अजीव किणन्याय कहीजे, पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते अजीव छे ।

आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजे:—आस्त्रव तो कर्म ग्रहै छे कर्मांरो करता छै कर्मांरो उपाय छे उपाय ते जीव हो छे ।

१ मिथ्यात आस्त्रव ने जीव किणन्याय कहीजै

विपरीत सरधान ते मिथ्यात आस्त्रव विपरीत सर-
धान जीवरा परिणाम छे ।

२ अव्रत आस्त्रव ने जीव क्रिणन्याय कहीजे अत्याग
भाव ते जीवरी आशा वाक्षा अव्रत आस्त्रव छे ते
जीवरा परिणाम छे ।

३ परमाद आस्त्रव ने जीव क्रिणन्याय कहीजे अण
उत्साह पणो ते प्रमाद आस्त्रव छे ते जीवरा परि-
णाम छे ।

४ कषाय आस्त्रव ने जीव क्रिणन्याय कहीजे जोग
आत्तमा कही छे कषाय ते जीवरा परिणाम छे ते
जीव छे ।

जोग आस्त्रव ने जीव क्रिणन्याय कहीजे जोग आ-
त्तमा कही छे जोग ते जीवरा परिणाम छे जोग नाम
व्यापार तो, ही जीगारो व्यापार जीवरो छे ।

संवर ने जीव क्रिणन्याय कहीजे समाई पच्चखाण
संयम संवर विवेक विउसग्ग ये छउं आत्तमा कही छे
वलि चारित्र आतमा कही छे चारित्र जीवरा परिणाम
छे इणन्याय ।

निर्जरा ने जीव क्रिणन्याय कहीजे भला भाव प्रव-
र्तावी ने जीव देशथी उजलो हुवे ते जीव छे ।

बंधने अजीव किणन्याय कहीजे बंध तो शुभ अशुभ कर्म छै ते पुद्गल ते अजीव छै।

मोक्षने जीव किणन्याय कहीजे समस्त कर्म सूकावे ते मोक्ष कहीजे निर्वाण कहीजे सिद्धभगवान कहीजे सिद्ध भगवान ते जीव छै इणन्याय मोक्षने जीव कहीजे।

॥ इति पंचमूं द्वारम ॥

॥ अथः छट्टो रूपी अरूपी द्वार कहै छै ॥

जीव अरूपी छै अजीव रूपी अरूपी दोनूं छै पुन्य रूपी छै पाप रूपी छै आस्रव अरूपी छै संवर अरूपी छै निर्जरा अरूपी छै बंध रूपी छै मोक्ष अरूपी छै हिवै एहनो ओलखना कहै छै।

जीवने अरूपी किणन्याय कहीजे छव द्रवामें जीव ने अरूपी कह्यो छै पांच वर्ण पावे नहीं।

अजीव ने अरूपी रूपी दोनूं किणन्याय कहीजे अजीवका पांच भेद धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति काल, पुद्गल इणामें च्यार तो अरूपी छै यामें पांच वर्ण पावै नहीं एक पुद्गल रूपी छै।

पुन्य ने रूपी किणन्याय कहीजे पुन्य तो शुभकर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल ते रूपी छै।

पापने रूपी किणन्याय कहीजे पाप ते अशुभ कर्म छे कर्म ते पुद्गल छे पुद्गल ते रूपी छे।

आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे कृष्णादिक छऊ भाव लेश्या अरूपी कही छे।

मिथ्यात आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे मिथ्या दृष्टि अरूपी कही छे।

अव्रत आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे अत्याग भाव परिणाम जीवरा अरूपी कह्या छे।

प्रमाद आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे अण उत्साहपणों ते प्रमाद आस्रव छे जीवरा परिणाम छे ते जीव छे जीवते अरूपी छे।

कषाय आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे श्री-ठाणांग दशमे ठाणें जीव परिणामीरा दश भेदांमेकषाय परिणामी कह्यो छे अने ज्ञानदर्शन चारित परिणामी कह्या छे ए जीव छे तिम कषाय परिणामी जीव छे कषायपणें परिणमे ते कषाय परिणामी आस्रव छे, जीव छे जीव ते अरूपी छे।

जोग आस्रव ने अरूपी किणन्याय कहीजे तीनों हीं जोगारो उठाण कर्म बल वीर्य पुर्षाकार पराक्रम अरूपी छे।

संवर ने अरूपी किणन्याय कहीजे अठारे पाप

ठाणांरो तिरसमा अरूपी कह्यो छै।

निर्जरा ने अरूपी किणन्याय कहीजे कर्म तोड़-वारो उठाणा कर्म वल वीर्य पुरुषाकार प्राक्रम अरूपी छै।

बंधने रूपी किणन्याय कहीजे बंधते शुभाशुभ कर्म छै कर्म ते पुद्गल छै पुद्गल तो रूपी छै।

मोक्ष ने अरूपी किणन्याय कहीजे समस्त कर्मां से मूकावे ते जीव छै तेहने मोक्ष कहीजे सिद्ध भगवान कहीजे सिद्ध भगवान ते अरूपी छै।

॥ इति छट्ठो दारम् ॥

॥ अथ सातमूं सावद्य निर्वद्य द्वार ॥

जीव तो सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। अजीव सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं। पुन्य पाप सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं, अजीव छै। आस्रव का पांच भेद, मिथ्यात आस्रव, अव्रत आस्रव, प्रमाद आस्रव, कषाय आस्रव, ए च्यार तो सावद्य छै अशुभ जोग सावद्य छै शुभ जोग निर्वद्य छै। इणन्याय आस्रव सावद्य निर्वद्य दोनूं छै। संवर निर्वद्य छै। निर्जरा निर्वद्य छै बंध सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं अजीव छै। मोक्ष निर्वद्य छै।

॥ इति सप्तम द्वारम् ॥

॥ अथः आठमूं भाव द्वार कहे छै ॥

भाव ५ पाच—उदय भाव १ उपशम भाव २ क्षायक भाव ३ क्षयोपशम भाव ४ परिणामिक भाव ५

उदय तो आठ कर्मनों अने उदय निपन्नरा दोय भेद'--जीव उदय निपन्न १ दूजो जीवरे अजीव उदय निपन्न २ तिणमे जीव उदय निपन्नरा ३३ तेतीस भेद ते कहै छै ४ च्यार गति ६ छव काय ६ छव लेश्या ४ च्यार कषाय ३ तीन वेद एवं २३ मिथ्याती २४ अव्रती २५ असन्नी २६ अनाणी २७ आहारता २८ संसारता २९ असिद्ध ३० अकेवली ३१ छद्मस्थ ३२ सजोगी ३३

हिवे जीवरे अजीव उदय निपन्नरा ३० भेद ते कहै छे ५ पाच शरीर ५ पाच शरीरका प्रयोग परणम्या द्रव्य ५ पाच वर्ण २ दोय गन्ध ५ पांच रस ८ आठ स्पर्श एव तीस ।

उपशमरादोय भेद एकतो उपशम १ दूजो उपशम निपन्न भाव २ उपशम तो एक मोहनी कर्मनों होय उपशम निपन्नरा दोय भेद उपशम समकित १ उपशम चारित्र २

क्षायकरा दोय भेद, एक तो क्षायक दूजो क्षायक निपन्न, क्षायक तो आठ कर्मां को होय अने क्षायक निपन्नरा १३ भेद ते कहै छै।

केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २ आत्मिक सुख ३ क्षायक समकित ४ क्षायक चारित्र ५ अटल अवगाहना ६ अमूर्तिक पणों ७ अगुरु लघुपणों ८ दान लब्धि ९ लाभ लब्धि १० भोग लब्धि ११ उपभोग लब्धि १२ वीर्य लब्धि १३

क्षयोपशमरा दोय भेद, एक तो क्षयोपशम १दूजो क्षयोपशम निपन्न भाव २ क्षयोपशम तो च्यार कर्मको ज्ञानावर्णी दर्शणावर्णी मोहनी अंतराय, अने क्षयोपशम निपन्न भावरा ३२ बत्तीस बोल ते कहै छै।

ज्ञानावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें, केवल वरजी ४ च्यार ज्ञान ३ तीन अज्ञान १ एक भणबो गुणबो।

दर्शणावर्णी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें ५ पांच इन्द्री ३ तीन दर्शन केवल वरजी।

मोहनी कर्मरो क्षयोपशम होय तो आठ बोल पामें ४ च्यार चारित्र १ एक देशव्रत ३ दृष्टि।

अन्तराय कर्मरो क्षयोपशम होवे तो आठ बोल पामे ५ पाच लब्धि ३ तीन वीर्य ।

परिणामिकरा दोय भेद सादिया परिणामि १ अनादिया परिणामी २ अनादिया परिणामिकरा १० दश भेद, तिणमे ६ छव द्रव्य धर्मास्ति आदि ७ सातमूं लोक ८ आठमूं अलोक ६ नवमूं भवी १० दशमूं अभवी अने सादिया परिणामीरा अनेक भेद जाणवा । गाम नगर गढा पहाड पर्वत पताल समुद्र द्वीप भुवन विमान इत्यादि अनेक भेद आदि सहित परिणामिकरा जाणवा ।

जीव आश्री जीव परिणामीरा १० दशभेद ते कहै छे ।

गति परिणामी १ इन्द्रीय परिणामी २ कषाय परिणामी ३ लेश्या परिणामी ४ जाग परिणामी ५ उपयोग परिणामी ६ ज्ञान परिणामी ७ दर्शण परिणामी ८ चारित्र परिणामी ६ वेद परिणामी १०

होवे जीव आश्री अजीव परिणामीरा १० दश भेद कहे छे ।

बन्धन परिणामी १ गई परिणामी २ संट्ठाण परिणामी ३ भेद परिणामी ४ वर्ण परिणामी ५ गन्ध परिणामी ६ रस परिणामी ७ स्पर्श परिणामी ८ अगुरु

द्रव्य तो एक आकाशास्ति गुण भाजन पर्याय अनन्त पदार्थां नों भाजन तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो काल, गुण वर्त्तमान, पर्याय अनन्ता पदार्थां पर वर्ते तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो पुद्गल, गुण अनन्ता गले अनन्त मिले, तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो पुन्य, गुण जीवके शुभ पणे उदय आवे पर्याय अनंत प्रदेश शुभ पणे उदय आवे सुख करे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

द्रव्य तो पाप, गुण जीवरे अनन्त प्रदेश अशुभ पणे उदय आवै, अनंत दुःख करे तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो आस्रव गुण कर्म ग्रहवानों पर्याय अनंता कर्म प्रदेश ग्रहे तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो संवर गुण कर्म रोकवारो, पर्याय अनंता कर्म प्रदेश रोके तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो निर्जरा, गुण देशथकी कर्म प्रदेश तोड़ी देश थी जीव उज्जवलो थाय, पर्याय अनंत कर्म प्रदेश तोड़े तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो बंध, गुण जीवने बांधराखवारो, पर्याय अनंता कर्म प्रदेश करी बांधे तिणसूं अनंती पर्याय ।

द्रव्य तो मोक्ष, गुण आत्मिक सुख, पर्याय अनत कर्म प्रदेश क्षयहुया अनत सुख प्रगटे तिणसूं अनन्ती पर्याय ।

॥ इति नवमू द्वारम ॥

॥ अथः दशमूं द्रव्यादिकरो ओलखनाद्वार ॥

जीवने पाचा बोलांकरो ओलखोजे
द्रव्य थकी अनता द्रव्य, खेत्रथी लोक प्रमाण
कालथकी आदि अत रहित, भावथी अरूपी गुण
थी चेतन गुण

अजीवने पाचा बोलाकरी ओलखीजे
द्रव्य थकी अनंताद्रव्य खेत्रथी लोकालोक प्रमाण,
कालथकी आदि अत रहित, भावथी रूपी अरूपी
दोनूं, गुणथकी अचेतन गुण

पुन्य ने पाचा बोलाकरी ओलखीजे
द्रव्यथकी अनता द्रव्य, खेत्रथको जीवाकने, काल-
थकी आदि अत रहित, भावथको रूपी गुणथकी
जीव ने शुभ पणे उदय आवे

पाप नें पांचा बोलाकरी ओलखोजे

द्रव्य थकी अनंता द्रव्य खेत्रथी जीवांकने काल-
थकी आदि अंत रहित, भावथकी रूपी, गुणथकी
जीवरै अशुभ पणै उदय आवै

आस्रव ने पांचां बोलांकरी ओलखौज

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य खेत्रथी जीवांकने. काल-
थकोरा ३तीन भेदः—एकेक आस्रवरी आदि नहीं
अंत नहीं ते अभवी आसरी एकेक आस्रवरी आदि
नहीं पण अंत छै ते भवि आसरी, एकेक आस्रवरी
आदि छै अंत छै ते पड़वाई समदृष्टि आसरी तेह-
नीस्थिति जघन्य अंतर मुहूर्त उत्कृष्टो देश उणो
अर्द्ध पुद्गल प्रावर्तन, भावथकी अरूपी, गुणथकी
कर्म ग्रहवानो गुण

संवर ने पांचां बोलांकरी ओलखौज

द्रव्यथकी तो असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी जीवांकने,
कालथकी आदि अंत सहित, भावथी अरूपी, गुण-
थकी कर्म रोकवारो गुण

निर्जरा ने पांचां बोलांकरी ओलखौज

द्रव्यथकी अकाम निर्जराका तो अनंता द्रव्य
सकाम निर्जराका असंख्याता द्रव्य, खेत्रथी
जीवांकने, कालथकी आदि अंत सहित, भावथ
की अरूपी, गुणथकी कर्म तोडवारो गुण

बंधने पाचां बोला ओलखीजै

द्रव्यथी अनंता द्रव्य । खेत्रथी जीवांकने कालथकी आदि अंत सहित भावथकी रूपी । गुणथकी कर्म बंध रखवारो ।

मोक्षने पाचा बोलाकरी आलखीजै: । द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेत्रथी जीवांकने । कालथकी एकेक सिद्धारी आदि अंत नही तेघणा काल-सिद्धारे न्याय एकेक सिद्धारी आदि छै पण अंत नही । ते थोड़ाकाल सिद्धांरे न्याय भावथकी अरूपी । गुणथकी आत्मिक सुख ।

धर्मास्तिकायने पांचा बोलाकरी ओलखीजै । द्रव्यथकी एक द्रव्य । खेत्रथी लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी जीव पुद्गलने चालवारो साझ ।

अधर्मास्तिकाय ने पांचां बोलांकरी ओलखीजै । द्रव्यथकी एक द्रव्य । खेत्रथ लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अंतरहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी जीव पुद्गलने थिर रहवानो साझ ।

आकाशास्ति कायने पांचां बोलांकरी ओलखीजै । द्रव्यथकी एक द्रव्य । खेत्रथी लोक अलोक प्रमाणे ।

कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी गुणथकी भाजनगुण ।

काल नं पांचां बोलांकरी ओलखीजै ।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेत्रथी अढ़ाई द्वीप प्रमाणे । कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी अरूपी । गुणथकी वर्तमान गुण ।

पुद्गलास्तिकायने पांचां बोलांकरी ओलखीजै ।

द्रव्यथकी अनंता द्रव्य । खेतथी लोक प्रमाणे । कालथकी आदि अंत रहित । भावथकी रूपी गुणथकी गलै मलै ।

॥ इति दशम द्वारम् ॥

॥ अथः एकादशमूं आज्ञा द्वार कहै छै ॥

जीव आज्ञा मांही बाहर दोनूं छै, ते किणन्याय सावद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा बाहर छै । अने निर्वद्य कर्तव्य आसरी आज्ञा मांहि छै । अजीव आज्ञा मांहि के बाहर, अजीव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं नहीं, ते किणन्याय अजीव छै अचेतन छै जड़ छै ।

पुन्य पाप बंध ए तीनूं आज्ञा मांही बाहर नहीं अजीव छै ।

आस्रव आज्ञा मांहि बाहर दोनूं छै, किणन्याय आस्रवना पांच भेद मिथ्यात १ अव्रत २ प्रमाद ३

कषाय ४ ए च्यार तो आज्ञा बाहर छै जोग आस्रव का दोय भेद शुभ जोग वर्त्तता निर्जराहुवै तिण अपेक्षाय आज्ञा मांहि छै। अशुभ जोग आज्ञा बाहर।

संवर आज्ञा माहि छै, ते किन्याय संवरथी कर्म रुकै ते श्री वीतराग की आज्ञा मांहि छै।

निर्जरा आज्ञा माहि छै ते किन्याय कर्म तोड़-वारा उपाय श्री वीतराग की आज्ञा मे छै।

मोक्ष आज्ञा मांहि छै ते किणन्याय सकल कर्म खपावारी करणी श्रीवीतरागकी आज्ञा मांहि छै।

॥ इति एकादशम द्वारम् ॥

॥ अथः बारमूं झिनय द्वार कहे छै ॥

जीवने जीव जाणवो। अजीवने अजीव जाणवो। पुन्यने पुन्य जाणवो। पापने पाप जाणवो। आस्रव ने आस्रव जाणवो संवर ने संवर जानवो। निर्जरा ने निर्जरा जाणवो। बंधने बंध जाणवो। मोक्ष ने मोक्ष जाणवो। एह नव पदार्थ जाणवा योग कह्या छै। इणा में आदरवाजोग ३, तीन, संवर १ निर्जरा २ मोक्ष ३ बाकी छव छांडवा जोग छै।

जीवने छांडवा जोग किणन्याय कहीजै—आपरा जीवको भाजन करी किणा जीव ऊपर ममत्व भाव न करवो।

उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुलको संख्यातवों भाग उत्कृष्टी लाखजोजनजाजेरो ।

पहलो नरकके नेरिया की अवगाहनां उत्कृष्टी ७॥। धनुष्य ६ आंगुलको ।

दूजी नरककेनेरियां को अवगाहनां साढी पंदरा १५॥ धनुष और १२ आंगुलको ।

तीजी नरककेनेरियां कों अवगाहनां ३१। धनुष की ।

चौथी नरकके नेरियां की अवगाहना ६२॥ धनुषको ।

पांचवीं नरकके नेरियां की अवगाहनां १२५ धनुषको ।

छट्ठी नरकके नेरियां की अवगाहनां २५० धनुष की ।

सातवीं नरकके नेरियां को अवगाहनां ५०० धनुषको ।

जघन्य सातुंही नारकीकी आंगुलको असंख्यातवों भाग, उत्तर वैक्रिय करैतो जघन्य तो आंगुल को संख्यातवों भाग उत्कृष्टी आप आप सूं दूणी ।

देवतांकी अवगाहनां ।

१५ परमोधामी १० भुवनपती, वानव्यन्तर,

त्रिभृंमखा, ज्योतिषी, पहला तथा दूजा देवलोककी अवगाहना ७ हाथकी ।

तीसरा तथा चौथा देवलोककी ६ छव हाथकी ।

पाचवा तथा छठा देवलोक की अवगाहना ५ पाच हाथकी ।

सातवा तथा आठवा देवलोक का देवता की अवगाहना ४ च्यार हाथकी । नवमा, दशमा, ग्यारवां तथा बारवा की ३ तीन हाथकी अवगाहनां होय ।

९ नवग्रेवेग का देवा की २ दोय हाथकी ।

पाच अनुत्तर विमानका देवांकी अवगा० १ एक हाथकी ।

देवता उत्तर वेक्रिय करै तो जघन्य तो आगुल को संख्यातवो भाग, उत्कृष्टो लाख जोजन अवगाहना जाणो ।

बारवा देवलोकके ऊपरका देव वेक्रियकरै नही ।

च्यार थावर तथा असन्नी मनुष्यको जघन्य,उत्कृष्टो आगलको असंख्यातवों भाग ।

वनस्पतिकायकी अव० जघन्य तो आगुल को असंख्यातवो भाग, उत्कृष्टो हजार जोजन जाजेरी ते कमल फूलकी अपेक्षाय ।

बेइन्द्री की अव० १२ जोजनकी, उत्कृष्टो ।

तेइन्द्री की अवगा० ३ कोसकी उत्कृष्टो ।

चोइन्द्री की अवगा० ४ कोसकी, उत्कृष्टी ।

अने जघन्य सगले आंगल के असंख्यातवें भाग कहणी। तिर्यंच पंचेन्द्रीकी अवगाहना जघन्यतो आं-गुलनों असंख्यातवों भाग उत्कृष्टी:—

१ जलचर सन्नी असन्नी की १००० जोजनकी ।

२ थलचर सन्नो की ६ कोसकी, असन्नीकी पृथक् कोसकी ।

३ उरपर सन्नो की १००० जोजनकी असन्नी पृथक् जोजनकी ।

४ भुजपर सन्नी की पृथक कोसकी, असन्नीकी पृथक् धनुषकी ।

५ खेचर सन्नी असन्नी की पृथक् धनुषकी तिर्यंच पंचेन्द्री उत्तर वैक्रिह करे तो जघन्य आंगुलके संख्यातमें भाग उत्कृष्टी ९०० जोजनकी करे, मोटी अवगाहना वालो उत्तर वैक्रिय करे नहीं ।

असन्नी मनुष्यनों आवगाहना जघन्य उत्कृष्टी आंगुलके असंख्यातमें भाग ।

॥ सन्नी मनुष्यकी अवगाहना ॥

५ भरत ५ ऐरवत के मनुष्यां की, अवसर्पिणीके पहिले आरे लागतां ३ कोसकी उतरतां २ कोसकी,

दूजे आरे लागतां २ कोसको उतरता १ कोसको ३ तीजे आरे लागता १ कोसको उतरतां ५०० धनुषकी चौथे आरे लागता ५०० धनुषको उतरतां ७ हाथकी पांचवे आरे लागतां ७ हाथको उतरतां १ हाथकी छट्ठे आरे लागतां १ हाथको उतरतां १ हाथ मठेरी जाणवी ।

इसीतरें उत्सर्पिणीमें चढती कहणी । वैक्रिय लाख जोजन जाझेरी करे । ५ हेमवय ५ यरुणवयका युगलियां की १ कोसकी. ५ हरिवास ५ रम्यक वासका की २ कोसकी. ५ देवकुरु ५ उत्तर कुरुकांकी ३ कोसको, महा विदेह खेत्रका मनुष्याकी ५०० धनुष की, छप्पन अंतरधिपा युगलियांको ८०० धनुष की ।

सिद्धाकी जघन्य १ हाथ ८ आंगुलकी उत्कृष्टी ३३३ धनुष १ हाथ ८ आंगुलकी ।

॥ इति अवगाहण द्वारम् ॥

३ तीसरो संघयण द्वार ।

संघयण ६ तेहना नाव वज्र ऋषभनाराच १ ऋषभनाराच २ नाराच ३ अर्द्ध नाराच ४ कीलको ५ छेवटो ६ एवं ।

नारको सर्व देवता में संघयण पावे नहीं, ५ थावर. ३ विकलेंद्री असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच

में संघयण १ छेवटो गर्भज मनुष्य, तिर्यंच में संघयण पावै, ६ छउं हों।

युगलिया तिर्यंच मनुष्यमें संघयण १ वज्रऋषभ नाराच सिद्धा में संघयण पावै नहीं।

॥ इति संघयण द्वारम् ॥

चौथो संठाण द्वार।

संस्थान ६ तेहनां नाम समचोरंस १, निग्रव परिमंडल २ सादिज ३ वावन्य ४ कुब्ज ५ हुंडक ६

७ सात नारकी—

५ थावर, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंचमें संठाण हुंडक। तिणमें पांच थावरकी विगत। पृथ्वी काय को चंद मसूरकी दाल अप्प कायको बुदबुदो,

तेऊ कायको मूईको करनालो।

वाउ कायकोध्वजा पताका।

वनस्पतिका नाना प्रकारका।

सर्व देवता सर्व युगलिया तथा त्रेसठ श्लाघा पुरुषा में समचौरसं संस्थान।

गर्भज मनुष्य तिर्यंचमें ६ छउंहों, सिद्धामें पावै नहीं,

॥ इति संठाण द्वारम् ॥

५ पांचमूं कषाय द्वार।

कषाय ४ क्रोध, मान, माया, लोभ। २४ दंडकमें कषाय ४ पावे, मनुष्य अकषाईपणहोय सिद्धामें कषाय नहीं।

॥ इति कषाय द्वारम् ॥

६ छट्ठो संज्ञा द्वार।

संज्ञा ४ आहार सज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन सज्ञा ३ परिग्रह सज्ञा ४।२४ दंडकामें संज्ञा ४ पावे मनुष्य असज्ञी वहुता पणहोय, सिद्धामें सज्ञा नहीं।

॥ इति सज्ञा द्वारम् ॥

७ सातमूं लेश्या द्वार।

सात नारकी में पावे ३ माठी (द्रव्य लेश्या लेखवी) तेहनी विगत।

पहला दूसरा में पावें १ कापोत।

तीजीमें कापोत वाला घणा नील वाला थोड़ा चौथी में पावे १ नील।

पांचमी में नील वाला घणा कृष्ण वाला थोड़ा, छठी में पावे १ कृष्ण।

सातमी में पावे १ महाकृष्ण, भुवनपति, वान-व्यंतर, देवतां में लेश्या पावे ४ पद्म शुक्ल टली (द्रव्य लेखवी)

पृथ्वी अप्प वनस्पतिकायमें तथा सर्व युगलिया में लेश्या पावे ४ प्रथम।

तेऊ वाऊकाय, ३ विकलेंद्री, असन्नी मनुष्य तिर्यंच, में लेश्या पावे ३ माठी।

जोतषी, पहला दूजा देवलोक तथा पहिला किल्विषी में लेश्या पावे १ तेजू।

तीजा चोथा, पांचवां देवलोक तथा दूजा किल्विषी में पावे १ पद्म।

तीजा किल्विषी तथा छट्ठा देवलोक से सर्वार्थ सिद्धतांई पावे १ शुक्ल। केतलाइक मनुष्य अलेशी पण होय सिद्धा में लेश्या नहीं।

सन्नी मनुष्य तिर्यंच में लेश्या पावे ६ छउंही।

॥ इति लेश्या द्वारम् ॥

८ आठमूं इन्द्रिय द्वार।

इन्द्री ५ श्रोत, चक्षु, घ्राण, रस, स्पर्श एवं ५ ७ नारकी—सर्व देवता, गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यंच असन्नी मनुष्य में इन्द्री ५ पावे। ५ थावरमें इन्द्री

१ स्पर्श पावै, बेइन्द्रीमे २ इन्द्री होय, स्पर्श—रस, तेइन्द्रीमे ३ इन्द्री होय—स्पर्श. रस, घ्राण, चौइन्द्री मे ४ होय श्रोतेंद्री विना। मनुष्य नो इन्द्रिया पण होय सिद्धाके इन्द्री होय ही नही।

॥ इति इन्द्रिय द्वारम् ॥

९ नवमूं समुद्घात द्वार।

समुद्घात ७ वेदनी १ कषाय २ मरणान्त ३ वैक्रिय ४ तेजस ५ आंहारक ६ केवल ७।

७ सात नारकी वाऊकाय में ४ पहली समुद्घात पावै, भवनपति वानव्यन्तर जोतषी बारमा देवलोकताईका देवता गर्भज तिर्यंच में समुद्घात ५ आहारक केवल टली, ४ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच सर्व युगलिया बारवा से ऊपरका देवतामें समुद्घात ३ पावै पहली। गर्भज मनुष्यासे समुद्घात ७ सातो ही पावै। केवल्या में १ केवल समुद्घात पावै तीर्थंकर समुद्घात करै नहीं सिद्धाके समुद्घात नहीं।

॥ इति समुद्घात द्वारम् ॥

१० दशमूं सन्नी असन्नी द्वार।

सन्नी के मन असन्नी के मन नहीं होय।

७ नारकी सब देवता गर्भज मनुष्य, गर्भज तिर्यंच

युगलिया सन्नी होय। ५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य सम्मूर्छिम तिर्यंच ए असन्नी होय। मनुष्य नोसन्नी, नोअसन्नी पणहोय, सिद्दसन्नी असन्नी नहीं होय।

॥ इति सन्नी असन्नी द्वारम् ॥

११ इग्यारमूं वेद द्वार।

३—वेद स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३।

७ नारकी—५ थावर ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य असन्नी तिर्यंच में वेद १ नपुंसक होय। भवनपती वानव्यंतर जोतषी पहलो दूजो देवलोक पहला किल्विषी, सर्वयुगलिया में वेद २ स्त्री तथा पुरुष होय। तीजा देवलोक सूं सर्वार्थ सिद्धतांई वेद १ पुरुष होय। गर्भेज मनुष्य, गर्भेज तिर्यञ्च में वेद ३ तीनू होय, मनुष्य अवेदी पणहोय सिद्धांके वेद नहीं।

॥ इति वेद द्वारम् ॥

१२ बारमूं पर्याय द्वार।

पर्याय ६। आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासोश्वास ४ भाषा ५ मनपर्याय एवं ६।

७ नारकी देवतामें पावे ५ पर्याय ।

मनभाषा मेली लेखवी । ५ थावर से पर्याय ४ होय पहली असन्नी मनुष्यमें पर्याय ३॥, तीन तो पहली आधी मे श्वासलेवे तो उश्वास नहो, उश्वास लेवे तो श्वास नहीं, ३ विकलेन्द्री—मसुर्छिम तिर्यंच पचेन्द्री मे पर्याय ५ पावे मन टल्यो, सिद्धामें पर्याय पावे नहो । सन्नी मनुष्य तिर्यंच मे पर्याय पावे ६ ।

॥ इति पर्याय द्वारम् ॥

१३ तेरहमूं दृष्टि द्वार।

दृष्टि ३ सम्यक्दृष्टि १ मिथ्यादृष्टि २ समामिथ्यादृष्टि ३ एवं ३, होय ।

७ नारकी १२ बारमां देवलोक ताई देवता गर्भज मनुष्य गर्भज तिर्यञ्च में दृष्टि ३ तीनूं ही होय, ५ थावरमें असन्नी मनुष्य मे, ५६ अंतरद्वीप का युगलिया मे दृष्टि १ मिथ्या दृष्टि पावे, ९ ग्रैवेयकका देवतांम ३ विकलेन्द्रीमें, असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्रीमें ३० अकर्म भूमिका युगलियामें दृष्टि २ सम्यक् १ मिथ्या २ पावे । ५ अनुत्तर विमानका देवता, सिद्धा में दृष्टि १ सम्यक् पावे ।

॥ इति दृष्टि द्वारम् ॥

१४ चौदहमूं दर्शन द्वार ।

दर्शन ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि ३ और केवल एवं दर्शन ४ जाणो ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमें दर्शन ३ पावै चक्षु १ अचक्षु अवधि ३ । गर्भज मनुष्य में दर्शन ४ होय, ५ थावर वेइन्द्री, तेइन्द्री. समुच्छिम मनुष्य, सर्व युगलियामें दर्शन २ चक्षु १ अचक्षु २ । सिद्धा मे १ केवल दर्शन ही पावै ।

॥ इति दर्शन द्वारम् ॥

१५ पंद्रहमूं ज्ञान द्वार ।

ज्ञान ५ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनःपर्यव ४ केवल ज्ञान एवं ५ ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज तिर्यंचमें ज्ञान ३ पावै पहला । गर्भज मनुष्यां में ज्ञान ५ पावै । ५ थावर असन्नी मनुष्य ५६ अन्तरद्वीप का युगलिया में ज्ञान नहीं पावै । ३ विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री तिर्यंचमें, ३० अकर्म भूमिका युगलिया में ज्ञान २ पावै । मति श्रुत । सिद्धामें १ केवल ज्ञान ही पावै ।

॥ इति ज्ञान द्वारम् ॥

१६ सोलमूं अज्ञान द्वार ।

अज्ञान ३ मति अज्ञान १ श्रुत अज्ञान २ विभंग अज्ञान एवं ३ ।

७ नारकी ६ ग्रैवेयकतांई को देवता गर्भज तिर्यंच गर्भज मनुष्य में अज्ञान ३ ही पावै । ५ थावर ३ विकलेन्द्री, असन्नी मनुष्य, असन्नी तिर्यंच, पचेन्द्री, सर्वं युगलियामें अज्ञान २ पावे मति अ० १ श्रुत अ० २। ५ अनुत्तर का देवता में सिद्धा में अज्ञान पावै नहो ।

॥ इति अज्ञान द्वारम् ॥

१७ सतरमूं योग द्वार ।

योग १५ मनका ४ सत्य मन १ असत्य मन २ मिश्र-मन ३ व्यवहार मन एव ४ । वचनका जोग ४ सत्य वचन १ असत्य वचन २ मिश्र वचन ३ व्यवहार वचन एव ४। कायाका जोग ७ औदारिक १ औदारिक को मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रियको मिश्र ४ आहारिक ५ आहारिकको मिश्र ६ कार्मण ७ एवं १५

७ नारकी सर्वं देवता में योग पावै ११ मनका ४ वचनका ४ वैक्रिय ९ वैक्रियको मिश्र १० कार्मण सर्वं युगलिया मे योग पावे ११ मन का ४ वचनका

४ औदारिक ६ औदारिकको मिश्र १० कार्मण ११। वाऊकाय वरजीने, ४ स्थावर असन्नी मनुष्यमें योग पावै ३ औदारिक औदारिकको मिश्र कार्मण वाउकायमें जोग पावे ५ औदारिक १ औदारिकको मिश्र २ वैक्रिय ३ वैक्रिय को मिश्र ४ कार्मण ५। ३ विकलेंद्री असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रीमें पावै ४ औदारिक १ औदारिक मिश्र २ व्यवहार भाषा ३ कार्मण ४। गर्भेज तिर्यंज में पावै १३ आहारक आहारकको मिश्र टल्यो, गर्भेज मनुष्या में पावै १५ हौं, चौदमें गुणठाणे अजोगी होय। सिद्धांमें जोग पावै नहीं।

॥ इति योग द्वारम् ॥

१८ अठारमूं उपयोग द्वार।

७ नारकी ६ नवग्रैवेयकतांई का देवता गर्भेज तिर्यंचमें उपयोग पावै ६ ज्ञानतो ३ मति श्रुत अवधि, अज्ञान ३ मति अज्ञान श्रुत अज्ञान विभंग अज्ञान, दर्शन ३ चक्षु अचक्षु अवधि।

५ थावर में पावै ३ मति श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

असन्नी मनुष्य तथा ५६ अंतरद्वीप का युगलियां में उपयोग पावे ४ मति श्रुत अज्ञान तथा चक्षु अचक्षु दर्शन।

बेइन्द्री तेइन्द्रीमे उपयोग पावे ५ मति श्रुतज्ञान मति श्रुत अज्ञान तथा अचक्षु दर्शन।

चौइन्द्री—असन्नी तिर्यंच पचेन्द्री ३० अकर्म भूमि का युगलियामे पावे ६ मति श्रुत ज्ञान मति श्रुत अज्ञान चक्षु अचक्षु दर्शन एवं ६। पांच अणुत्तर विमाण मे पावे ६ तीन ज्ञान तीन दर्शन।

गर्भेज मनुषां में उपयोग पावे १२ सिद्धां मे उपयोग पावे २ केवल ज्ञान १ केवल दर्शन २।

॥ इति उपयोग द्वारम् ॥

१९ उगणीसमूं आहार द्वार।

उगणीस दण्डक का जीव तो छउंहो दिशा को आहार लेवे।

पांच थावर तीन च्यार पांच छव दिशिको आहार लेवे।

केतला मनुष्य अनआहारीक पण होय सिद्ध भगवन्त आहार लेवे नहीं।

॥ इति आहार द्वारम् ॥

उत्तर दिशिका ९ नौ निकायका देवतांकी जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि देश उणौं दोय पल्योपमकी देव्यांकी ज० १० हजार वर्षकी । उत्कृष्टि देश उणां १ पल्य० ।

वानव्यन्तर देवतांकी स्थिति ।

जघन्य १० हजार वर्षकी उत्कृष्टि १ पल्योपमकी, यांकी देव्यांकी जघन्य दश हजार वर्षकी उत्कृष्टि ॥ आधा पल्योपमकी तिर्यग्जृम्भक देवांकी भी इतनी ही ।

जोतषी देवांकी स्थिति ।

चन्द्रमांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि १ पल्योपम १ एक लाख वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि आधा पल्य ५० हजार वर्षकी, सूर्यकी जघन्य पाव पल्योपमकी उत्कृष्टि १ पल्योपम १ हजार वर्ष अधिक, यांकी देव्यांकी जघन्य पाव पल्यकी उत्कृष्टि आधी पल्य पांचसो वर्ष अधिक । ग्रहांकी ज० पाव पल्यकी उ० १ पल्यकी यांकी देव्यांकी ज० पाव पल्य उत्कृष्टि ॥ आधी पल्योपमकी ।

नक्षत्राकी ज० पाव पल्य उ० ॥ आधी पल्यकी याकी देव्याकी ज० पाव पल्य, उत्कृष्टि पाव पल्य जाझेरी।

ताराको ज० पल्यकी आठमूं भाग उ० पाव पल्य की याकी देव्याकी ज० अधपाव पल्य उत्कृष्टि अधपाव जाझेरी।

वैमानिक देवता की स्थिति।

१ पहला देवलोक मे ज० १ पल्योपम उत्कृष्टि २ सागर की याकी परिग्रहि देव्याकी ज० १ पल्य उ० ७ पल्य, अपरिग्रहि देव्यांकी ज० १ पल्य उ० ५० पल्योपमकी।

२ दूसरा देवलोक में ज० १ पल्य जाझेरी उ० २ सागर जाझेरी, यांकी देव्यांकी ज० १ पल्य जा-झेरी उ० परिग्रही की ९ पल्यकी अपरिग्रही की ५५ पल्योपमकी।

३ तीसरा देवलोकमे ज० २ सागर उ० ७ सागर की।

४ चोथा देवलोक को ज० २ सागर जाझेरो उत्कृष्टी ७ सागर जाझेरी।

५ पाचवाकी ज० ७ सागर उ० १० सागरकी।

६ छट्ठा देवलोक का देवतांकी ज० १० सागर उ० १४ सागर की ।
७ सातमां की ज० १४ उ० १७ सागर की ।
८ आठमां की ज० १७ उ० १८ सागर की ।
९ नवमां की ज० १८ उ० १९ सागर की ।
१० दशमां की ज० १९ उ० २० सागर की ।
११ इग्यारमां की ज० २० उ० २१ सागर की ।
१२ बारमां की ज० २१ उ० २२ सागर की ।
१३ पहिला ग्रैवेयक की ज० २२ उ० २३ ।
१४ दूसरा ग्रैवेयक की ज० २३ उ० २४ ।
१५ तीसरो ग्रैवेयक की ज० २४ उ० २५ ।
१६ चोथा ग्रैवेयक की ज० २५ उ० २६ ।
१७ पांचवां ग्रैवेयक की ज० २६ उ० २७ ।
१८ छट्ठा ग्रैवेयक की ज० २७ उ० २८ ।
१९ सातवां ग्रैवेयक की ज० २८ उ० २९ ।
२० आठवां ग्रैवेयक की ज० २९ उ० ३० ।
२१ नवमां ग्रैवेयक की ज० ३० उ० ३१ ।
२२ विजय, १ वैजयन्त, २ जयन्त ३ ।
२५ अपराजित, ४ ए च्यार अनुत्तर वैमातकी ज०३१ उ० ३३ सागर ।
२६ सर्वार्थ सिद्धका देवांकी ज० ३३ उ० ३३ सागर ।

नव लोकान्तिक देवताकी स्थिति ८ सागरकी ।

पाच स्थावरकी स्थिति ज० अन्तर मुहुर्त्तकी उत्कृष्टि पृथ्वी कायकी २२ हजार वर्ष की, अप्पकाय की ७ हजार वर्ष की, तेउकायकी ३ दिन रातकी, वाउकायकी ३ हजार वर्ष की, वनस्पति कायकी १० हजार वर्ष की ।

तीन विकलेन्द्री की ज० अन्तर मुहुर्त्त की उत्कृष्टी वेइन्द्री की १२ वर्ष की, तेइन्द्री की ४६ दिन रातकी, चौइन्द्री की ६ महीनाकी । तिर्यंच पचेंद्री की ज० अन्तर मुहुर्त्त की उत्कृष्टी जलचर की १ क्रोड पूर्व की जलचर सन्नीकी ३ पल्योपम की असन्नी की ८४ हजार वर्ष की, उरपुर असन्नीकी १ क्रोड पूर्वकी असन्नीकी ५३ हजार वर्ष की, भुजपुर सन्नीकी क्रोड पूर्व की असन्नी की ४२ हजार वर्ष की, खेचर सन्नीकी पल्योपमके असख्यातमू भाग असन्नीकी ७२ हजार वर्ष की । असन्नी मनुष्य की ज० उ० अन्तर मुहुर्त्तकी सन्नी मनुष्य की स्थिति ।

५ भरत ५ एरवतका मनुष्या की पहिलो आरो लागता ३ पल्यकी उतरता २ पल्यकी, दूसरो लागता २ पल्यकी उतरता १ पल्यकी, तीसरो लागता १ पल्यकी उतरता क्रोड पूर्वकी, चौथो

आरो लागतां क्रोड़ पूर्वकी उतरतां १२५ वर्षको पांचमूं लागतां १२५ वर्षको उतरतां २० वर्षको छट्ठो लागतां २० वर्षकी उतरतां १६ वर्षकी। उतसर्पिणी कालमें इमहिज चढ़ती कहणी

पांच महाविदेह खेत्रांकी जघन्य अन्तर मुहुर्त्त उत्कृष्टि १ क्रोड़ पूर्वकी स्थिति।

युगलियां की स्थिति।

५ हैमवय ५ अरुणावयकां की जघन्य देश उंणो एक, पल्यकी उत्कृष्टी १ पल्यकी।

५ हरीवास ५ रम्यकवासकां की जघन्य देश उंणो दोय पल्यकी उत्कृष्टी २ पल्यकी।

५ देवकुरु ५ उत्तरकुरुकां की जघन्य देशउंणी तीन पल्यकी उत्कृष्टी ३ पल्यकी।

५६ अन्तर द्वीपका युगलियाकी पल्योपम का असंख्यातमूं भाग की।

एक एक सिद्धांकी आदि नहीं अन्त नहीं एक एक की आदि छै पण अन्त नहीं।

इति स्थिति द्वारम्।

२२ बाइसमूं समोंह्या असमोंह्या द्वार।

समोह्यातो समुद्घात फोड़ी ताणावेजो करी मरै, असमोह्या विना समुद घाते गोलोका भड़ाकावत् मरै।

२४ दंडका का जीव दोनूं प्रकारका मरण करै। सिद्धामे मरण नहीं।

॥ इति समोहा असमोहा द्वारम् ॥

२३ मूं चवन द्वार।

६ नारकी आठमा देवलोक ताई का देवता पृथ्वी अप्प वनस्पति काय ३ विकलेन्द्री असन्नी मनुष्य मे चवन दोय गतिकी मनुष्य तिर्यंच की।

नवमा देवलोक से सर्वार्थ सिद्ध ताई का देवता मे चवन १ मनुष्य को सातमी नारकी मे तथा तेउ वायुमें चवन १ तिर्यंच गतिको।

गर्भज मनुष्य तिर्यञ्च, असन्नी तिर्यञ्च पचेन्द्री में चवन च्यारू ही गतिकी युगलियामे चवन १ देव गतिकी सिद्धा मे चवन पावे नहीं।

॥ इति चवन द्वारम् ॥

२४ मूं गतागति द्वार।

पहली से छट्ठी नारकी ताई गति २ दण्डक आगति २ दण्डका की मनुष्य तिर्यञ्च पचेंद्री।

सातमी नारकी की आगति २ दण्डक की मनुष्य तिर्यञ्च पचेंद्री की, गत एक तिर्यञ्चकी जाणवी।

भवनपति वानव्यंतर जोतषी पहिला दूजा देवलोक तथा पहिला कल्विषिक देवतांकी आगत २ दराडकांको (मनुष्य तिर्यंच की) गति ५ दराडकांकी (तिर्यंच मनुष्य तिर्यंच पृथ्वी अप्प वनस्पतिकी)

तीजा देवलोक से आठवां देवलोक तांई गतागत २ दराडकांकी (मनुष्य तिर्यञ्च) नवमां देवलोक से सर्वार्थ सिद्धि तांई गतागत १ मनुष्य की,

पृथ्वी अप्प वनस्पति कायकी आगत २३ दंडकांकी (नारकी टली) गति १० दराडकांकी ५ स्थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य ६ तिर्यंच एवं १० की,

तेउ वाउकायमें आगत १० दराडकांकी उपरवत् गति ९ दराडकांकी मनुष्य टल्यो ३ विकलेन्द्रीमें, १० की आगत १० की ऊपरवत् ।

असन्नी तिर्यंच पंचेंद्रीमें आगति १० दराडकांकी ऊपर वत् गति २२ दराडकांकी जोतषी वैमानिक टल्यो ।

सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रीमें आगति २४ की गति २४

असन्नी मनुष्य में आगत ८ दराडकांकी, पृथ्वी अप्प वनस्पति ३ विकलेन्द्री मनुष्य तिर्यंच एवं ८ अने गति १० दराडकांकी ऊपर वत् ।

गर्भज मनुष्य में आगति २२ दण्डकांकी तेउ वाउ टल्यो, गति २४ दण्डकांकी, ३० अकर्म भूमिका युगलियां मे आगति २ दण्डकांकी मनुष्य तिर्यंच गति १३ दण्डकांकी १० तो भवनपति का वानव्यतर ११ जोतषी १२ वैमानिक १३ एवं ।

५६ अंतर द्वीपका युगलियामें आगति २ दण्डकां की ऊपरवत् गति ११ दण्डकांकी १० तो भवन पति का १ वानव्यन्तर को ११ ।

सिद्धामें आगति मनुष्य की गति नहीं ।

॥ इति गतागत द्वारम् ॥

२५ मूं प्राण द्वार ।

७ नारकी सर्व देवता गर्भज मनुष्य तिर्यञ्चमें प्राण १० दशूं ही पावे, स्थावरमें प्राण ४ पावे स्पर्श इन्द्रीवल १ काया २ श्वासोश्वास ३ आउखो ४ एव ।

वेइन्द्रीमें पावे ६ तेइन्द्री में पावे ७ चौइंद्री में पावे ८ प्राण ।

असन्नी मनुष्य में पावे ७ ॥

असन्नी तिर्यंच पचेंद्री में ९ मन टल्यो ।

१३ मे गुणठाणे पावे ५ पाच इन्द्रियाका टल्या ।

१४ में गुणठाणे पावै १ आउखो बलप्राण सिद्धांमें प्राण पावै नहीं ।

॥ इति प्राण द्वारम् ॥

२६ मूं योग द्वार ।

नारकी देवता मनुष्य सन्नीतिर्यंच युगलिया में जोग पावै ३ मन बचन काय का ।

पांच स्थावर असन्नी मनुष्य में १ काया पावै ।

तीन विकलेन्द्री असन्नी पंचेन्द्री में जोग पावै २ बचन काया ।

केतला मनुष्य अयोगी होय सिद्धांमें जोग पावै नहीं ।

॥ इति लघुदण्डकम् ॥

—

❀ अथ गतागतका थोकड़ा ❀

जीवका ५६३ भेदकी विगत।

१४ सात नारकी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४८ तिर्यंचका।

४ सूक्ष्म बादर पृथ्वीकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर अप्पकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर वाउकायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

४ सूक्ष्म बादर तेउ कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ सूक्ष्म (बादर) प्रत्येक साधारण वनस्पति कायका पर्याप्ता अपर्याप्ता।

६ तीन विकलेन्द्री का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

२० जलचर थलचर उरपर भुजपर खेचर ए पाँच प्रकार का तिर्यंच सन्नी असन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

३०३ मनुष्यका—

२०२ सन्नी मनुष्य, १५ कर्मभूमि, ३० अकर्मभूमि, ५६ अन्तर द्वीप ए १०१ का पर्याप्ता अपर्याप्ता।

१०१ असन्नी मनुष्य ते सन्नी मनुष्य का मल मूत्रादि। चवदे स्थानक में उपजे ते अपर्याप्ता, अपर्याप्ता अवस्थामें मरे।

१९८ देवताका—

भुवनपति १०, परमाधामी १५, वाणव्यन्तर १६, तिर्यग्जृम्भका १०, ज्योतिषी १०, किल्विषिक ३, लोकान्तिक ९,

देवलोक १९ ग्रैवेयक ६, अनुत्तर विमान ५, एव ६६ जातिका पर्याप्ता अपर्याप्ता। ॥ इति ॥

सबतके त्रसमें ५१ पावै—

तिर्यञ्चका ४८ मनुष्य ३।

जम्बुद्वीप में ७५ पावै—

२७ भरतक्षेत्र १, एरावत १, देवकुरु १, उत्तरकुरु १, हरिवास १, रम्यकवास १, हेमवय १, अरणवय १, महाविदेह १, यह नव क्षेत्र का सन्नी मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता १८, तथा असन्नी मनुष्य ६

४८ तिर्यञ्चका

लवण समुद्रमें पावै २१६—

अन्तरद्वीप ५६ का तो १६८, तथा ४८ तिर्यञ्चका

धातुकी खण्ड में पावै १०२—

५४ मनुष्य का अठारह क्षेत्रों का त्रिगुण, ४८ तिर्यञ्चका

कालोदधि में पावै ४६—

तिर्यञ्चका ४८ में से बादर तेउका २ टल्या।

अर्ध पुष्कर वर द्वीप में पावै १०२—

धातकी खंडवत् जाणवो।

ऊंचा लोक में पावै १२२—

७६ देवताका।

४६ तिर्यञ्चका।

नीचा लोक में पावै ११५—

भुवनपति २०, परमाधामी ३०, नारकी १४, तिर्यञ्चका ४८, मनुष्यका ३ सर्व ११५।

तिर्छा लोक में पावै ४२३--

३०३ मनुष्यका ।

४८ तिर्यंच का ।

३२ वानव्यन्तर का ।

२० त्रिम्भूमका ।

२० जोतिष्या का ।

१	पहिली नारकी में	आगति २५	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यंच पंचेन्द्री ५ सन्नी ५ असन्नी पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि मनुष्य, तिर्यञ्च पंचेन्द्री ५ सन्नी का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४०
२	दूजी नारकी में	आगति २०	१५कर्म भूमि मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
३	तीजी नारकी मे	आगति १६	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ४ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता भुजपुर टल्यो
		गति ४०	उपरवत्
४	चौथी नारकी में	आगति १८	१५ कर्म भूमि मनुष्य, ३ सन्नी तिर्यंच पर्याप्ता (भुजपर १ खेचर १ टल्यो)
		गति ४०	उपरवत्
५	पांचवीं नारकी में	आगति १७	१५ कर्म भूमि मनुष्य, १ जलचर, १ उरपुर का पर्याप्ता
		गति ४०	उपरवत्
६	छठी नारकी में	आगति १६	१५ कर्म भूमि १ जलचर सन्नी का पर्याप्तो
		गति ४०	उपरवत्

७	सातमी नारकी में	आगति २६	१५ कम भूमि, १ जलचर सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता स्त्री बिना
		गति १०	५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता ५ अपर्याप्ता १०
८	१० भवनपति १५ पर्मा धामी १६ वानव्यतर १० त्रिभूमका ५१ जातिकामें	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी, ५ असन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता १११
		गति ४६	१५ कर्म भूमि, मनुष्य, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प, १ वनस्पतिका पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण बिना
९	जोतषी पहिला देवलोक में	आगति ५०	१५ कर्म भूमि, ३० अकर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१०	दूजा देवलोक में	आगति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च, अकर्म भूमि, का पर्याप्ता २० (५ हेमवय ऐरणवय, टल्या
		गति ४६	उपरवत
११	पहिला पल्यिविष में	आगति ३०	१५ कर्म भूमि,,, ५ सन्नी तिर्यञ्च ५, देवकुरु ५ उत्तरकुरु का पर्याप्ता
		गति ४६	उपरवत्
१२	दूजा तीजा पल्यिविषतीजा से आठमा तांई देवलोक में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता
		गति ४०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यञ्च पर्याप्ता अपर्याप्ता

१३	नवमांसे सर्वार्थ सिद्धितांई	आगति १५	१५ कर्म भूमि. मनुष्य का पर्याप्ता
		गति ३०	१५ कर्म भूमि, का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१४	पृथ्वी पाणी वनस्पति में	आगति २४३	१०१ असन्नी मनुष्य; ४८ तिर्यञ्च १५ कर्म भूमि, का पर्याप्ता अपर्याप्ता ३० एवं १७६ लड़ी का और ६४ जाति का देवता एवं सर्व २४३ थया
		गति १७६	लड़ी का
१५	तेऊ वाउ काय में	आगति १७६	लढ़ी का
		गति ४८	तिर्यञ्च का
१६	तीन विकलेंद्री मे	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	असन्नी तिर्यञ्च पंचेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति ३९५	१७६ तो लड़ीका, ५६ अन्तरद्वीप ५१ जातिका देवता. १ पहलो नारकी १०८ का पर्याप्ता अपर्याप्ता २१८ सर्वमिली ३९५
१८	सन्नी तिर्यंञ्च में	आगति २६७	१७६ तो लड़ीका, ८१ देवता ७ नारकी पर्याप्ता (नवमांसे सर्वार्थसिद्ध तांई टल्या)
		गति ५७२	(नवमांसे सर्वार्थ सिद्धतांईका टल्या)

१९	असन्नी मनुष्य में	आगति १७१	लडीका में से तेउ वाउका ८ टल्या
		गति १७६	लडीका
२०	सन्नो मनुष्य में	आगति २७६	१७१ तो लडीका में स, ९९ देवता ६ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२१	देवकुरु उत्तर कुरु का युगलिया में	आगति २०	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नो तिर्यंच
		गति १२८	१० भवनपति, १५ परमाधामी, १६ वाणव्यंतर, १० त्रिजृंभका, १० जोतषी, २ पहिलो दूजो देवलोक, १ पहिलो कल्विषिकएव ६४ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२२	हरीवास रम्यकवास का युगलिया में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२६	६४ जातिका देवता में से १ पहिलो कल्विषिक टल्यो
२३	हेमवय अरु णवय का युगलिया में	आगति २०	उपरवत्
		गति १२४	६४ जातिका देवामें कल्विषिक १ और दूजो देवलोक टल्यो
२४	५६ अन्तर-द्वीप युगलिया में	आगति २५	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नो, ५ असन्ना, तिर्यंच
		गति १०२	५१ जातिका देवाका पर्याप्ता अपर्याप्ता

२५	केवल्यांमे	आगति १०८	८१ देवता पर्मा ध्रम १५, कलिवपिक ३ टल्या) १५ कर्म भूमि, ४ पहली से चोथी नर्क, ५ सन्नी तिर्यंच १ पृथ्वी १ अप्प वनस्पति
		गति ०	मोक्षकी
२६	तिर्थंकरा में	आगति ३८	३५ देवता वैमानिक, ३ नरक पहली से
		गति ०	मोक्ष
२७	चक्रवर्त मे	आगति ८२	८१ जाति का देवता उपरवत्, १ पहली नरक
		गति १४	७ सात नारका में जाय पदवी मे मरतो
२८	वासुदेव में	आगति ३२	१२ देवलाक ९ नवग्रैवेयक, ९ लोकान्तिक तथा २ नारकी पहलो दूजी
		गति १४	७ नारकी मे जाय
२९	वलदेव में	आगति ८३	८१ जातिका देवता उपरवत् २, नारकी पहली दूजी
		गति ०	पदवी अ[illegible]र छे
३०	सम्यक दृष्टि मे	आगति ३६२	१७१ लडीका (तेउ वाउका टल्या) ९९ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी
		गति २५८	९९ देवता, १५ कम भूमि, ६ नारकी ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ५ असन्नी, ३ विकलेंद्री का अपर्याप्ता एवं २५८

३१	मिथ्या दृष्टिमें	आगति ३७१	१७१ लड़ीका ६६ देवता, ८६ युगलिया, नारकी ७ पच
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३२	समामिथ्या दृष्टिमें	आगति ३६३	समदृष्टि जिम
		गति ०	आजे गुणठाणें मरे नहीं
३३	साधु में	आगति २७०	१७१ लड़ीका, ९९ देवता ५ नारकी
		गति ७०	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता
३४	श्रावक में	आगति २७६	१७१ लड़ीका ९९ देवता, ६ नारकी पच
		गति ४२	१२ देवलोक, ९ लोकान्तिक, पर्याप्ता अपर्याप्ता
३५	पुरुष वेद में	आगति ३७१	मिथ्याती जिम आणजो
		गति ५६३	सर्व
३६	स्त्री वेद में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६१	सातमा नरक में नहीं जाय
३७	नपुंसक वेद में	आगति २८०	९९ देवता, १७१ लड़ीका, ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व

इति पहिलो गतागत सम्पूर्णम् ।

१	शुक्लपक्षी	आगति ३७१	१७९ तो लड़ीका, ६६ देवता ८६ युगलिया ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२	कृष्ण पक्षी में	आगति ३६६	३७१ में ५ अनुत्तर टल्या
		गति ५५३	५ अनुत्तरका पर्याप्ता अपर्याप्ता टल्या
३	अचर्म में	आगति ३६६	उपरवत्
		गति ५५३	उपरवत्
४	चर्म में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
५	वाल वीर्य में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तरका १० टल्या
६	पण्डितवीर्य में	आगति २९५	१७१ लड़ीका में से, ९९ देवताका, ५ नारकी, पहली से
		गति ७०	१२ देवलोक, लोकान्तिक, ९ नवग्रैवेयक ५ अनुत्तर वैमानका पर्याप्ता अपर्याप्ता

७	बाल पंडित वीर्य में	आगति २७६	१७१ तो लडोंका में से, ६६ देवता, नारकी ६ पहिली से
		गति ४७	१२ देवलोक, ६ लोकान्तिक, का पर्यासा अपर्यासा
८	मति श्रुति ज्ञान में	आगति ३६३	१७१ तो लडीका में से ६६ देवता, ८६ युगलिया, ७ नारकी एव ३६३
		गति २५८	६६ देवता, १५ कर्म भूमि,५ सन्नी तिर्यंच, ६ नारकी यह १२५ का पर्यासा अपर्यासा २५० और ५ असन्नी ति० ३ विकलेन्द्री का अपर्यासा सर्व २५८
९	अवधि ज्ञान में	आगति ३६३	उपरवत्
		गति २५०	६६ देवता का, १५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच ६ नारकी यह १२५ का पर्यासा अपर्यासा
१०	मति श्रुति अज्ञान में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५५३	५ अनुत्तर का पर्यासा अपर्यासा टल्या
११	विभग अज्ञान में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २४२	६४ देवता (अनुत्तर टल्या) १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच, ७ नारकी पर्यासा अपर्यासा
१२	चक्षु दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व

१३	निकेवल अचक्षु दर्शन में	आगति २४३	१७६ लड़ीका, ६४ जाति का देवता का पर्याप्ता
		गति १७६	लड़ी का
१४	समुचे अचक्षु दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
१५	अवधि दर्शन में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति २५२	६६ देवता, १४ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च ७ नारकी एवं १२६ का पर्याप्ता अपर्याप्ता
१६	सूक्षम एकेन्द्री में	आगति १७६	लड़ी का
		गति १७६	लड़ी का
१७	बादर एकेन्द्री में	आगति २४३	१७६ लड़ी का ६४ देवता
		गति १७६	लड़ी का
१८	संयोगी अणाहारिक	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ०	

१६	तेजस कारमाण में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२०	वैक्रे शरीर मूलका में	आगति १११	१०१ सन्नी मनुष्य, ५ सन्नी ५ असन्नी
		गति ४६	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी पृथ्वी १ पानी २ वनस्पति ३ ए २३ का पर्याप्ता अपर्याप्ता सूक्ष्म साधारण विना
२१	समुचैवेक्रे शरीर में	आगति ३७१	उपरवत्
		गति ५६३	सर्व
२२	औदारिक शरीर में	आगति २८०	१६६ लडीका, ६६ देवता ७ नारकी
		गति ५६३	सर्व
२३	कृष्ण लेश्याको कृष्ण लेश्यामें जावे तो	आगति ३१६	१७६ लडीका ५१ जातिका देवता ८६ युगलिया, ३ नारकी पाचवी छठी ७वी
		गति ४५६	५१ जातिका देवता ८६ युगलिया ३ नारकी इनका पर्याप्ता अपर्याप्ता २८० लडीका १७६ सर्व ४५६
२४	नील लेश्या को नीलमें जावे तो	आगति ३१६	१७६ लडीका, ५१ देवता ८६ युगलिया ३ नारकी तीजी चौथी पाचवी
		गति ४५६	उपरवत् (नारकी तीजी चौथी पाचवी)

२५	कापोत लेश्या को कापोत में जावे तो	आगति ३१६	उपरवत् पण नारकी पहली दूजी तीजी जाणो
		गति ८५६	उपरवत् (नारकी पहलीसे तीजी)
२६	तेजू लेश्या को तेजूमें जावे तो	आगति १६०	६४ जातिका देवता ८६ युगलिया का पर्याप्ता और १५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यञ्च का पर्याप्ता अपर्याप्ता
		गति ३४३	१०१ सन्नी मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच ६४ जाति देवता,का पर्याप्ता अपर्याप्ता पृथ्वी अप्प वनस्पति का अपर्याप्ता
२७	पद्म को पद्म लेश्या में जावे तो	आगति ५३	१५ कर्म भूमि मनुष्य ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ६ नवग्रेवेयक १ दूजो किल्विषी, ३ देवलोक पहिलासे) का पर्याप्ता
		गति ६६	१५ कर्म भूमि ५ सन्नी तिर्यंच, ६ लोकान्तिक ४ देवलोक (तीजे से) का पर्याप्ता अपर्याप्ता
२८	शुक्ल लेश्याको शुक्लमे जावे तो	आगति ६२	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच का पर्याप्ता अपर्याप्ता ४० और २१ देव-लोक छट्ठासे सर्वार्थ सिद्धताई) १ कल्विषिक का पर्याप्ता
		गति ८४	१५ कर्म भूमि, ५ सन्नी तिर्यंच २१ देवलोक उपरवत् १ तीजो कल्विषिक का पर्याप्ता अपर्याप्ता

इति दूजो गतागत को थोकड़ो

※ अथ अल्पा बोहत ※

१ सर्व थोडा गर्भज मनुष्य ।

२ तेहथी मनुष्यणी २७ गुणी ।

३,, बादर तेऊकाय का पर्याप्ता असंख्यातगुणा ।

४,, पाच अनुत्तरका देवता असंख्यात गुणा ।

५,, ऊपरला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा ।

६,, बीचला ग्रैवेयक का देवता संख्यात गुणा ।

७,, नीचला त्रिकका संख्यात गुणा ।

८,, १२ मा देवलोकका संख्यात गुणा ।

९,, तेहथी ११ मां देवलोकका संख्यात गुणा ।

१०,, १० मा का संख्यात गुणां ।

११,. ९ माका संख्यात गुणा ।

१२,. सातमी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१३,, छट्ठी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१४,, आठमा देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

१५,. सातमां देवलोक का देवता असंख्यात गुणा ।

१६ . ५ मी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा ।

१७,, छठ्ठा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां।

१८,, चोथी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणा।

१९,, पांचवां देवलोक का देवता असंख्यात गुणां।

२०,, तीजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां।

२१,, चौथा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां।

२२,, तीजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां।

२३,, दूजी नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां।

२४,, छमूर्छम मनुष्य असंख्यातगुणां।

२५,, दूजा देवलोक का देवता असंख्यात गुणां।

२६,, दूजाकी देव्यां संख्यात गुणीं।

२७,, पहला देवलोक का देवता संख्यात गुणां।

२८, पहलाकी देव्यां संख्यात गुणीं।

२९,, भवनपति देवता असंख्यात गुणां।

३०,, भवनपति की देव्यां संख्यात गुणीं।

३१,, पहली नारकी का नेरिया असंख्यात गुणां।

३२,, खेचर पुरुष असंख्यात गुणां।

३३,, खेचरणीं संख्यात गुणीं।

३४,, थलचर पुरुष संख्यात गुणां।

३५,, थलचरणी संख्यात गुणीं।

३६,, जलचर पुरुष संख्यात गुणां।

३७,, जलचरणी संख्यात गुणी ।

३८ वानव्यतर देवता सख्यात गुणा ।

३९,, वानव्यतर देवी संख्यात गुणां ।

४०, जोतिपी देवता सख्यात गुणा ।

४१,, जोतिपीनी देवी स ख्यात गुणी ।

४२, खेचर नपुंसक सख्यात गुणा ।

४३, थलचर नपुंसक स ख्यात गुणा ।

४४,, जलचर नपुंसक स ख्यात गुणां ।

४५,, चौरिन्द्रीका पर्याप्ता स ख्यात गुणा ।

४६,, पंचेन्द्रीका पर्याप्ता विशेषाईया ।

४७,, बेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईयो ।

४८,, तेन्द्री पर्याप्ता विशेषाईया ।

४९,, पंचेन्द्री अपर्याप्ता असख्यात गुणा ।

५०,, चौरिन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५१,, तेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५२,, बेन्द्री अपर्याप्ता विशेषाईया ।

५३,, बादर प्रत्येक वनस्पती पर्याप्ता असंख्यात गुणा ।

५४, बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यात गुणा

५५ बादर पृथवीका पर्याप्ता असख्यात गुणां ।

५६,, बादर अप्पकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५७.. बादर वायुकाय पर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५८,, बादर तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

५९,, बादर प्रत्येक शरीरी वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६०,, बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६१ ,, बादर पृथ्वीकाय का अपर्याप्तो असंख्यात गुणां ।

६२ ,, बादर अप्पकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६३ ,, बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६४ ,, सूक्ष्म तेऊकाय अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

६५ ,, सूक्ष्म पृथ्वी अपर्याप्तो विशेषाईया ।

६६ ,, सूक्ष्म अप्प अपर्याप्ता विशेषाईया ।

६७ ,, सूक्ष्म वायु अपर्याप्ता विशेषाईया ।

६८ ,, सूक्ष्म तेऊ पर्याप्ता संख्यात गुणां ।

६९ ,, सूक्ष्म पृथ्वी पर्याप्तो विशेषाईया ।

७० ,, सूक्ष्म अप्प पर्याप्ता विशेषाईया ।

७१ ,, सूक्ष्म वायु पर्याप्ता विशेषाईया ।

७२ ,, सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यात गुणां ।

७३ " सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यात गुणा ।
७४ " अभव्य जीव अनन्त गुणा ।
७५ " पडवाई समदृष्टी अनन्त गुणा ।
७६ " सिद्ध भगवत अनन्त गुणां ।
७७ " वादर वनस्पति पर्याप्ता अनन्त गुणा ।
७८ " बादर पर्याप्ता विशेषाईया ॥
७९ " बादर वनस्पति अपर्याप्ता असख्यात
गुणा ।
८० " बादर अपर्याप्ता विशेषाईया
८१ " सर्व बादर विशेषाईया ।
८२ " सूक्ष्म वनस्पति अपर्याप्ता असंख्यात
गुणां ।
८३ " सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाईया ।
८४ " सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्ता संख्यात गुणां ।
८५ " सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाईया ।
८६ " सर्व सूक्ष्म विशेषाईया ।
८७ " भव्य जीव विशेषाईया ।
८८ " निगोदीया विशेषाईया ।
८९ " वनस्पति विशेषाईया ।
९० " एकेन्द्री विशेषाईया ।
९१ " तिर्यंच विशेषाईया ।

९२ " मिथ्याती विर्गे पाईया ।

९३ " अव्रती विर्गे पाईया !

९४ " सकषाई विर्गे पाईया ।

९५ " छद्मस्थ विर्गे पाईया ।

९६ " संजोगी विर्गे पाईया ।

९७ " संसारी जीव विर्गे पाईया ।

९८ " सर्व जीव विर्गे पाईया ।

॥ अथ बावनबोल को थोकड़ो ॥

१ पहिले बोले ८ आत्मा मे कर्मा री करता किसी ? रोकता किसी ? तोडता किसी आत्मा ? करता तो ३ तीन आत्मा—कषाय, जोग, दर्शन। रोकता २ दोय आत्मा—दर्शन चारित्र। तोडता एक जोग आत्मा।

२ दूजे बोले ८ आत्मा मे द्रव्य जीव कीती ? भाव-जीव कीती ?

१ द्रव्य जीव एक द्रव्य आत्मा।

७ भाव जीव सात आत्मा।

३ तीजे बोले आठ आत्मा मे उदय भाव कीती ? यावत परिणामी भाव कीती आत्मा?

३ उदय भाव तीन—कषाय, जोग, दर्शन।

२ उपसम भाव दोय—दर्शन, चरित्र।

६ चायक च्योपशम छव आत्मा द्रवा कषाय टली

८ परिणामिक भाव आठ आत्मा।

४ चोथे बोले आठ आत्मा में साम्वती कीती ? असाम्वती कीती ?

१ साम्वती तो एक द्रव्य आत्मा।

७ असाम्वती सात आत्मा।

५ पांचमें बोलै आठ आत्मा में सावद्य केती ? निर्वद्य केती ?

१ द्रव्य आत्मा तो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं;

१ कषाय आत्मा सावद्य छै।

२ जोग तथा दर्शन आत्मा सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

४ ज्ञान, चारित्र, वीर्य, उपयोग, ए च्यार आत्मा निर्वद्य छै।

६ छटे बोलै आठ आत्मा मे जाणे किसी ? देखै किसी ? सरधै किसी आत्मा ?

जाणे तो ज्ञान तथा उपयोग आत्मा,

देखै उपयोग आत्मा।

सरधै दर्शन आत्मा।

कर्त्ता जाणे उपयोग आत्मा, करै जोग आत्मा, कर्म रोकै चारित्र आत्मा, तोड़ै जोग आत्मा, शक्ति वीर्य आत्माकी॥

७ सातमें बोलै उदयका ३३ (तेतीस) बोलामें सावद्य केता ? निर्वद्य केता ?

१६ सोलै बालतो सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं; ते कहै छै च्यार गति ४. छव काय १०. असन्नी ११, अन्नाणी १२, संसारता १३, असिद्ध १४, अकेवली १५, छद्मस्थ १६।

३ तीन भली लेश्या निर्वद्य छै ।

१२ बारे सावद्य छै, तीन माठी लेश्या ३, च्यार कषाय ७, तीन वेद १०. मिथ्याती ११ अव्रती १२,

२ आहारता, संजोगी, ए दोय सावद्य निवद्य दोनूं ही छै ।

८ आठमे बोले जीव पदार्थ किसे भाव ? यावत मोक्ष पदार्थ किसे भाव ?

१ जीव पदार्थ भाव पाचो ही पावे ।

४ अजीव, पुन्य पाप, बन्ध, ए च्यार पदार्थ भाव १ एक परिणामिक ।

१ आस्रव पदार्थ भाव दोय उदय परिणामिक ।

१ संवर पदार्थ भाव च्यार उदय बरजीने ।

१ निर्जरा पदार्थ भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम, परिणामिक ।

१ मोक्ष भाव दोय—क्षायक, परिणामिक ।

९ नवमे बोले उदयका ३३ (तेतीस) बोल किसे किसे कर्मका उदय से तथा किसी आत्मा ?

१३ तेरा बोलतो नाम कर्मके उदयसे, तिण मे च्यारगति, ४, छव काय, १० तीन भली लेश्या १३ ।

१२ बार बोल मोहनीय कर्म के उदय से च्यार

कषाय, ४, तीन वेद, ७, तीन माठी लेश्या, १० मिथ्याती, ११ अव्रती एवं ।

२ दोय बोल ज्ञानावरणी कर्मके उदय से—असन्नी अन्नाणी ।

२ आहारता, संजोगी, ए दोय बोल मोहनीय, नाम, कर्मना उदयसे ।

२ छद्मस्थ, अकेवली, ए दोय बोल ज्ञानावरणी, दर्शणावरणी, अतराय, यां तीन कर्मका उदयसे ।

२ संसारता, असिद्धता, ए दोय बोल, च्यार अघातिक कर्मका उदयसे, हिवे आत्मा कहैछै ।

१७ सतरे बोलतो अनेरो आत्मा—

च्यार गति ४, छव काय १० अव्रती ११, असन्नी १२, अन्नाणी १३, संसारता १४, असिद्ध १५, अकेवली १६ छद्मस्थ १७ ।

८ आठ बोल जोग आत्मा—

छव लेश्या ६, आहारता ७, संयोगी ८ ।

४ च्यार कषाय कषाय आत्मा ।

३ तीन वेद कोई कषाय कहै कोई अनेरो कहै ।

१ मिथ्याती दर्शन आत्मा ।

१० दशमे बोलै जीवनें जीव जाणै यावत मोक्षनें मोक्ष जाणै ते किसे भाव ?—क्षायक, क्षयोपशम, परि-

णामिक. ए तीन भाव।

११ इग्यारमे बोले जीवनें जीव जाणे, यावत मोक्षने मोक्ष जाणे, ते किसी आत्मा ? उपयोग अने ज्ञान आत्मा।

१२ बारमे बोले जीव पदार्थ केती आत्मा ? यावत मोक्ष पदार्थ केती आत्मा। जीवमे आत्मा पावै आठोंही। अजीव, पुन्य, पाप, बन्ध, आत्मा नहीं। आस्रव (तीन) आत्मा-कषाय, जोग दर्शन। संवर २ (दोय) आत्मा-दर्शन, तथा चारित्र। निर्जरा (५) पाच आत्मा द्रव्य, कषाय, चारित्र, टली। मोक्ष पदार्थ अनेरी आत्मा।

१३ तेरमे बोले —छव मे नव मे कोण ?

उदय छव में कोण, नवमें कोण ?—छवमे पुद्गल, नव में च्यार—अजीव. पुन्य, पाप, बन्ध। उपशम छवमें कोण नव मे कोण ?—छव मे पुद्गल, नव में तीन अजीव, पाप बध। क्षायक छवमें कोण ? नवमे कोण ?—छवमें पुद्गल, नव म च्यार—अजीव, पुन्य, पाप बध। क्षयोपशम छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमे तीन—अजीव, पाप, बन्ध।

परिणामिक छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमें छव, नवमें नव ।

१४ चौदमें बोले उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ?—यावत परिणामिक निपन्न छवमें नवमें कोण ?—

उदय निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छव में जीव; नवमें जीव, आस्रव । उपशम निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमें जीव; नवमें जीव, संवर । चायक निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमें जीव, नवमें ४ जीव संवर, निर्जरा मोच्त । चयोपशम निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण—छवमें जीव; नवमें ३ जीव, संवर, निर्जरा ।

परिणामिक निपन्न छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें छव, नवमें नव ।

१५ पंदरमें बोले आठ कर्मनों उदय, छवमें, नवमें कोण ?—ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अंतराय ए चयार कर्मनों उदय तो छवमें पुद्गल, नवमें तीन;—अजीव, पाप, बंध । बेदनी, नाम गोत, आयु ए च्यार कर्मनों उदय छवमें पुद्गल, नवमें च्यार, अजीव; पुन्य, पाप, बंध ।

१६ सोलमें बोलै मोहनीय कर्मनों उपशम, छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें, पुद्गल, नवमें तीन, अजीव, पाप बंध । बाकी सात कर्मनो उपशम होवे नही ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्मनों क्षायक; छवमे कोण ? नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप बंध ।

वेदनी नाम गोत ए तीन कर्मनो क्षायक, छवमे कोण ? नवमें कोण ?—छवमें पुद्गल नवमें च्यार—अजीव, पुन्य, पाप, बंध ।

आयुषको क्षायक छवमे कोण ?—नवमे कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन—अजीव पुन्य, बंध ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, मोहनीय, अन्तराय ए च्यार कर्मनों क्षयोपशम, छवमें कोण ? नवमें कोण ? छवमें पुद्गल, नवमें तीन—अजीव, पाप, बंध । बाकी च्यार कर्मरो क्षयोपशम होवे नही ।

१७ सतरमें बोलै आठकर्मना निष्पन्ननौं बिगत ।

छव कर्मनो उदय निपन्न; छवमें कोण ? नवमें कोण ?—छवमे जीव, नवमे जीव ।

मोहनीय, नाम, ए दोय कर्म नो उदय निष्पन्न, छवमें जीव, नवमें जीव, आस्रव ।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं; एक मोहनीय कर्म नों उपशम निष्पन्न होवे, ते छवमें जीव, नवमें जीव संवर ।

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्मरो क्षायक निष्पन्न छवमें जीव, नवमें जीव निर्जरा । एक मोहनीय कर्मरो क्षायक निष्पन्न छवमें जीव, नवमें जीव, संवर, निर्जरा । बाकी च्यार अघातिक कर्मको छवमें जीव, नवमें जीव, मोक्ष । च्यार अघातिक कर्मरो तो क्षयोपशम निष्पन्न होवे नहीं । ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, यां तीन कर्मको क्षयोपशम निष्पन्न तो छवमें जीव नवमें जीव, निर्जरा । मोहनीय कर्मको क्षयोपशम निष्पन्न छवमें जीव; नवमें जीव संवर, निर्जरा ।

१८ अठारमें बोले आठ कर्म नों बंध आदिसत्ता, किसे किसे गुण ठाणें—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, नाम, गोत ए पांच कर्मनों बंध पहिला गुण ठाणांसे दसमां गुण ठाणां ताईं ।

मोहनीय कर्मनो बंध पहिला गुण ठाणासे नवमा गुण ठाणा ताईं।

आयु कर्मनो बंध पहिला गुण ठाणासे सातमा ताईं। तीजो गुण ठाणों टालो।

वेदनी कर्मनों बंध तेरमा गुण ठाणा ताईं। ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्मनो उदय अने उदय निष्पन्ननी सत्ता बारमां गुणठाणां ताईं।

वेदनी नाम, गोत्र, आयुष ए च्यार कर्मनों उदय अन उदय निष्पन्ननी सत्ता चौदमा गुण ठाणा ताईं।

मोहनीय कर्मनो उदय निष्पन्न पहिला गुण ठाणा से दशमा गुणठाणां ताईं। अने सत्ता इग्यारमा गुणठाणां ताईं।

१९ उगणोसमे बोले चौदे गुणठाणां को उदय उपशम खायक क्षयोपशम निष्पन्न कहे छे, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय, ए तीन कर्मनों उदय निष्पन्न तो पहिलासे बारमां ताईं।

दर्शन मोहनीयनों उदय निष्पन्न पहिला से सातमा ताईं।

चारित्र मोहनीय नों उदय निष्पन्न पहिला से

दशमा तांई ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयुष, ए च्यार कर्म नों उदय निप्पन्न पहिला से चौदमा तांई ।

सात कर्म नों तो उपशम निपन्न होवे नहीं, एक मोहनीय कर्मनों होय । तिणमें दर्शन मोहनीयनों उपशम निप्पन्न तो चौथा से इग्यारमा तांई । चारित्र मोहनीयको इग्यारमें गुण ठाणेहो । ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अन्तराय ए तीन कर्मनों क्षायक निप्पन्न तेरमें चौदमें गुण ठाणे तथा श्री सिद्ध भगवान में । दर्शन मोहनीय को क्षायक निपन्न चौथा गुण ठाणां से चौदमा तांई । अनें चारित्र मोहणी को बारमा से चौदमा तांई तथा श्री सिद्ध भगवान मांहि ।

वेदनी, नाम, गोत्र, आयु ए च्यार कर्मनों क्षायक निप्पन्न गुणठाणा में पावे नहीं; श्री सिद्ध भगवान में पावे ।

ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अन्तराय ए तीन कर्मनों क्षयोपशम निपपन्न तो पहिला से बारमा गुण ठाणां तांई ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निपन्न पहिला से सातमा गुण ठाणां तांई ।

चारित्र मोहनीयनो क्षयोपशम निपन्न पहिला से दशमा गुण ठाणा ताई ।

च्यार अघाति कर्मनो क्षयोपशम निपन्न होवे नहीं ।

२० वीशमे बोले आठ कर्मांमे पुन्य कितना पाप कितना तथा पुन्य कितना से लागे पाप कितना से लागे ?—

ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी मोहनीय अन्तराय ए च्यार कर्म तो एकान्त पाप छे ।

वेदनी, नाम गोत्र आयु ए च्यार कर्म पुन्य पाप दोनूं ही छे ।

मोहनीय कर्म से तो पाप लागे अने नाम कर्म से पुन्य लागे बाकी छव कर्म से पुन्य पाप दोनूं नहीं लागे ।

२१ इकीस में बोले आस्रवना बीस भेद तथा सवर ना बीस भेद किसे किसे गुणठाणें कितना कितना पावे ?

आस्रव के २० बीस भेदों की विगत ।

पहिले तथा तीजे गुणठाणे तो बीस पावे, दूजे चौथे पांचमे गुणठाणा १९ उगणीस पावे ।

मिथ्यात टल्यो । छठे गुणठाणे १८ अठारे पावै, मिथ्यात्व तथा अव्रत आस्रव टल्यो । सातमा से दशमा गुणठाणां तांई ५ पांच आस्रव पावै कषाय, जोग मन वचन, काया, ए पांच जाणवा । इग्यारमें बारमें तेरमें च्यार पावे कषाय टली । चौदमें आस्रव पावे नहीं । हिवे संवरकी बीस बोलांकी विगत—पहिलासे चउथा गुणठाणां तांई तो संवर पावै, नहीं, पांचमें गुणठाणें एक समकित संवर पावे सम्पूर्ण व्रत ते संम्बर पावे नहीं ।

देश व्रत पावे ते लेखव्यो नहीं ।

छट्टे गुणठाणें २ (दोय) पावे समकित व्रतते, सातमासे दशमा गुणठाणां तांई १५ [पंद्रह] संवर पावे । अकषाय, अजोग, मन, वचन, काया, ए पांच टल्या ।

चौदमें गुणठाणें २० बीसूं ही संवर पावे ।

२२ बाईस में बोल चौदागुणठाणां किस्यो भाव किसो आत्मा ?

पहिलो दूजो तीजो गुणठाणों तो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मादर्शन । चोथो

गुणठाणो भाव च्यार—उदय, वरजीनें आत्मा दर्शन ।

पांचमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा देश चारित्र ।

छट्ठासे दशमा गुणठाणां तांई भाव दोय—क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा चारित्र । इग्यारमूं गुणठाणो भाव दोय—उपशम परिणामिक, आत्मा उपशम चारित्र ।

बारमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा क्षायक चारित्र ।

तेरमूं गुणठाणो भाव दोय—क्षायक परिणामिक, आत्मा उपयोग ।

चउदमों गुणठाणो भाव परिणामिक आत्मा अनेरी ।

२३ तेवीसमें बोले धर्म अधर्म किस्यो भाव किसी आत्मा ?

धर्म भाव ४ (च्यार) उदय टाली, आत्मा तीन दर्शन, चारित्र, जोग । अधर्म भाव दोय उदय परिणामिक, आत्मा ३ तीन, कषाय, जोग, दर्शन

२४ चोवीसमें बोले दया हिंसा किस्यो भाव किसी आत्मा ।

दृथा भाव ४ (च्यार) उदय बरजीने आत्मा २ (दोय) चारित्र, जोग।

हिन्सा भाव २ (दोय) उदय परिणामी आत्मा जोग. छवमें नवमें का बोल कहना।

२५. पच्चीसमें बोलै शुभ जोग अशुभ जोग किस्योभाव किसी आत्मा।

शुभ जोग तो भाव च्यार—उपशम, बरजीने, आत्मा जोग।

अशुभ जोग भाव दोय—उदय परिणामी, आत्मा जोग। छवमें नवमें का बोल कहणा।

२६ छवबीसमें बोलै व्रत अव्रत किस्यो भाव किसी आत्मा ?

व्रत भाव ४ (च्यार) उदय, बरजीनें, आत्मा, चारित्र। अव्रत भाव २ (दोय) उदय परिणामि आत्मा अनेरी।

२७ सत्तावीसमें बोलै पंच महाव्रत पंच सुमति तीन गुप्त किसो भाव किसी आत्मा ?

पंच महाव्रत तीन गुप्त तो भाव ४ (च्यार) उदय बरजी, आत्मा चारित्र।

पांच सुमति भाव तीन—क्षायक, क्षयोपशम परिणामिक, आत्मा, जोग।

२८ अठावीसमे बोल १२ (बारे) व्रत किसो भाव किसो आत्मा ?

भाव क्षयोपशम परिणामी आत्मा देसचारित्र

२९ उगणतीसमें बोल समकित मिथ्यात्व किसो भाव किसो आत्मा ? समकित भाव च्यार— उदय वरजीने, आत्मा, दर्शन । मिथ्यात्व भाव उदय परिणामी, आत्मा दर्शन ।

३० तीसमे बोल ज्ञान अज्ञान किसो भाव किसो आत्मा—

ज्ञान भाव ३ (तीन) क्षायक क्षयोपशम परिणामी, आत्मा, उपयोग, ज्ञान । अज्ञान भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामिक आत्मा उपयोग

३१ इकत्तीसमे बोल द्रव्यजीव भावजीव किसे भाव किसो आत्मा ।

द्रव्य जीव भाव एक परिणामिक, आत्मा द्रव्य । भाव जीव भाव पांचोही, आत्मा द्रव्य वरजीने सात । छअमे नवमे का बोल कह्या ।

३२ बत्तीसमें बोल अठारे पाप ठाणारो उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम छअमे कोण नवमें कोण ।

छअमे पुद्गल, नवमें तीन अजीव, पाप, बंध ।

३३ तेतीसमं बोल अठारे पाप ठाणारो उदय उप-
शम क्षायक क्षयोपशम निप्पन्न कुवमें कोण नवमें
कोण।
उदय निप्पन्न कुवमें जीव नवमें जीव आ-
स्रव।
उपशम निप्पन्न कुवमें जीव नवमें जीव संवर।
सतरा (१७) कोतो क्षायक निप्पन्न कुवमें जीव
नवमें जीव संवर, एक मिथ्या दर्शन सल्य को
कुवमें जीव नवमें जीव संवर निर्जरा क्षयोपशम
निप्पन्न कुवमें जीव नवमें जीव संवर
निर्जरा।

३४ चोतीसमें बोल बारह व्रत को द्रव्य खेत काल
भाव राखे तेहनो विगत।
पहिला व्रतसे आठमां व्रत तांई तो द्रव्य थकी
आघार राखे ते द्रव्य उपरान्त त्याग, खेतथी
सर्व खेतमें, काल थकी जावजीव, भाव थकी
राग द्वेष रहित, उपयोग सहित, गुणथको संवर
निर्जरा। नवमं व्रत द्रव्य खेत्र उपर परिमाणे,
कालथकी एक महुरत भाव थी रागद्वेष रहित,
उपयोगसहित, गुण थकी संवर निर्जरा।
दसमूं व्रत द्रव्य खेत भाव गुणतो उपर परि-

माणे, कालथकी रात्युं जितनो काल । इग्यारमौ व्रत को द्रव्य खेत भाव गुणतो उपर परिमाणे कालथकी अहोरात्रि परिमाण ।

बारमृ व्रत को द्रव्य थकी साधुजी नें कल्पे ते चौदह प्रकारनो द्रव्य, खेत्र थकी कल्पे ते खेत्र मे कालथकी कल्पे ते कालमें, भावथकी राग द्वेष रहित, गुणथकी सवर निर्जरा ।

३५ पैंतीसमें बोलें नव पदार्थ में निजगुण कितना परगुण कितना ।

निज गुणतो पाच । जीव, आस्रव, सवर, निर्जरा मोक्ष ।

परगुण ४ (चार) । अजीव पुन्य, पाप, बन्ध ।

३६ छत्तीसमें बोलें दर्शन मोहनीय कर्मको उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम कितना गुणठाणापावें ।

दर्शन मोहनीय को उदय निष्पन्न पहिला गुणठाणांमें सातमा ताईं, चारित्र मोहनीय को उदय निष्पन्न पहिलासे दशमां ताईं ।

चारित्र मोहनीयको उपशम निष्पन्न एक इग्यार मे वों गुणठाणे ।

दर्शन मोहनीय को उपशम निष्पन्न चौथा से इग्यारमें गुणठाणा ताईं ।

दर्शन मोहनीय को क्षायक निप्पन्न चौथा से चौदमें गुणठाणे तथा सिद्धांमें ।

चारित्र मोहनीय को क्षायक निप्पन्न बारमें तेरमें चौदमें गुणठाणे ।

दर्शन मोहनीय को क्षयोपशम निप्पन्न पहिला से सातमां गुणठाणे तांई ।

चारित्र मोहनीयको क्षयोपशम निप्पन्न पहिला से दशमां गुणठाणे तांई ।

३७ सैंतीसमें बोलैं आठ आतमांमें मूलगुण कितनी उत्तर गुण कितनी—

मूल गुण एक चारित्र आत्मा, उत्तर गुण एक जोग आत्मा । बाकी दोनूं नहीं ।

३८ अड़तीसमें बोलैं आठ आत्मा किसे भाव किसी आत्मा—आत्मा तो आप आपरी, द्रव्य आत्मा तो भाव एक परिणामी, कषाय आत्मा भाव दोय उदय परिणामी, जोग आत्मा भाव च्यार उपशम वरजीने, उपयोग ज्ञान वीर्य ए तीन आत्मा भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक दर्शन आत्मा भाव पांचोंही ।

चारित्र आतमां भाव च्यार उदय वरजी ।

३६ गुणचालीस में बोले आठ आत्मा छवमें कोण नवमे कोण।

द्रव्य आत्मा छवमे जीव नवमे जीव कषाय आत्मा छवमें जीव नवमे जीव आस्रव। जोग आत्मा छवमे जीव नवमें जीव आस्रव निर्जरा। उपयोग, ज्ञान वीर्य ये तीन आत्मा छवमें जीव नवमे जीव निर्जरा।

दर्शन आत्मा छवमे जीव नवमें जीव आस्रव संवर निर्जरा।

चारित्र, आत्मा, छवमें जीव नवमें जीव संवर।

४० चालीसमे बोले आस्रवका (बीस) २० बोल किसे भाव किसी आत्मा।

भाव तो उदय परिणामिक बीसूं ही बोल। मिथ्याति दर्शन आत्मा, अव्रत प्रमाद अनेरी-आत्मा। कषाय कषाय आत्मा बाकी सोले आस्रव योग आत्मा।

४१ एकचालीसमें बोले संवरना २० (बीस) बोल किसे भाव किसी आत्मा।

अकषाय संवर भाव तीन उपशम क्षायक परि-णामिक, आत्मा अनेरी।

अजोग मन वचन काया ए च्यार संवर भाव

एक परिणामिक आत्मा अनेरी। सम्यक ते संवर भाव ४ (च्यार) उदय वरजीनें, आत्मा दर्शन। अप्रमादि संवर भाव च्यार उदय-वरजी आत्मा अनेरी। बाकी १३ (तेरा) संवर का बोल भाव ४ (च्यार) उदय वरजीनें आत्मा चारित्र।

४२ बयालीसमें बोलै पंद्रह जोग किसे भाव किसी आत्मा, जीव, अजीव तथा रूपी अरूपी की विगत।

भाव की विगत।

सत्यमन जोग सत्य भाषा व्यवहार मन व्यवहार भाषा, औदारिक ए पांच जोग भाव च्यार उपशम वरजीनें।

औदारिककी मिश्र, कार्मण ए दोय जोग भाव तीन उदय चायक परिणामिक।

असत्यमनजोग, मिश्रमनजोग, असत्य भाषा, मिश्र भाषा वैक्रियनोमिश्र आहारिकनूं मिश्र ए छव जोग भाव दोय उदय परिणामिक, आहारिक वैक्रै ए दोय जोग भाव ३। उदय चयोपशम परिणामी

सावद्य निर्वद्य कितना ।

असत्य मन योग असत्य भाषा मिश्रमन योग मिश्र भाषा, आहारिकनं मिश्र, वैक्रिय नं मिश्र ए छव योग तो सावद्य छै बाकी नव योग सावद्य निर्वद्य दोनं छै।

पनरह जोग जीव कि अजीव द्रव्य अजीव भावे जीव

पनरह योग रूपी कि अरूपी द्रव्य रूपी भावे अरूपी ।

४३ तयालीसमें बोले पांच इन्द्रिया की पूछा पांच इन्द्री जीव कि अजीव ? द्रव्ये अजीव भावे जीव । पाच इन्द्री रूपीकि अरूपी ? द्रव्ये रूपी भावे अरूपी । पाच इन्द्रिया में कामी कितनी भोगी कितनी ? कामी तो दोय श्रुत इन्द्री, चक्षु इन्द्री, अने भोगी बाकी तीन इन्द्रियां । पांच इन्द्रिया में छेवी कितनी अछेवी कितनी ? एक स्पर्श इन्द्री तो छेवी बाकी च्यार इन्द्रियां अछेवी ।

द्रव्यथी इन्द्री कितनी भावथी कितनी ? द्रव्यथी तो आठ तें कहे छे दोय कान, दोय आंख, नाक,

जीह्वा, स्पर्श । भाव थी पांच श्रुत चक्षु घ्राण रस स्पर्श एवं, छवमें कोण नवमें कोण ? भाव इन्द्रीं छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा ते किण-न्याय दर्शनावरणी कर्म क्षय उपशम थयां थी जीव इन्द्रीय पणों पाम्यो इण न्याय।

४४ चमालीसमें बोल जीव परिणामीरा १० बोल किसे भाव किसी आत्मा।

गतिपरिणामी भाव दोय, उदय परिणामी, आत्मा अनेरी। कषाय परिणामी भाव उदय परिणामिक आत्मा कषाय वेद परिणामी भाव उदय परि-णामी आत्मा कषाय तथा अनेरी। योग परिणामी लेशपरणामी भाव च्यार उपशम वरजो ने आत्मा योग। इन्द्रिय परिणामिक भाव दोय, क्षयोपशम परिणामी, आत्मा उपयोग। ज्ञान परिणामिक उपयोग परिणामिक भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामी आत्मा आप आपरी। दर्शन परिणामी भाव पांचों हो, आतमां दर्शन। चारित्र परिणामी भाव च्यार उदयवरजीने आत्मा, चारित्र।

४५ पैंतालीस में बोल जीव परिणामीरा १० (दश) बोल छवमें कोण नवमें कोण।

गति परिणामी छवमें जीव नवमे जीव, जाणवो वेद परिणामी कषायपरिणामी छवमे जीव नवमे जीव आस्रव। योग लेश परिणामी छवमे जीव नवमे जीव आस्रव निर्जरा। दर्शन परिणामी छवमे जीव नवमे जीव आस्रव संवर निर्जरा। इन्द्रिय उपयोग ज्ञान परिणामी छवमे जीव नवमे जीव निर्जरा। चारित्र परिणामी छवमे जीव नवमे जीव संवर।

४६ छयालीसमे बोलै चौदह गुणठाणावाला में शरीर कितना पावै।

पहिला मे पांच गुणठाणा तांई तो शरीर ४ च्यार पावे आहारिक टल्यो छठे गुण ठाणे शरीर पावे पांचो ही, सातमां गुणठाणा से चौदमा गुणठाणा तांई शरीर पावे ३ (तीन) औदारिक तैजस कार्मण। पांच शरीर चौ स्पर्शी कि आठ स्पर्शी? च्यार शरीर तो आठ छे कार्मण चौ स्पर्शी छे।

पांच शरीर जीव कि अजीव? अजीव छे।

४७ सैतालीसमे बोले २४ (चौवीस) दण्डक में लेश्या कितनी पावै।

सात नारकी १ तेउ २ वायु ३ वेइन्द्री ४ तेइन्द्री ५ चौइन्द्री ६ असन्नी मनुष्य ७ असन्नी तिर्यञ्च ८ यांमें तो ३ माठी लेश्या पावै ।

पृथ्वीकाय १ अप्पकाय १ वनस्पतिकाय १ भवन पतिका १० वानव्यन्तर, १ यां चौदह दण्डकां में लेश्या पावै ४ पद्म शुक्ल वरजीनें । जोतषी अनें पहिला दूजा देवलोक का देवता में लेश्या पावै १ तेजू । तीजा मे पांचमा तांई पद्म । छट्ठा देवलोक से सरवार्थ सिद्ध तांई पावै १ शुक्ल सन्नी मनुष्य सन्नी तिर्यञ्च में लेश्या पावै छव । सर्व जुगलिया में ४ च्यार पद्म शुक्ल टली ।

४८ अड़चालीस में बोलै अजीव नां चौदह भेद ऊंचा नीचा तिरछा लोक में कितना ? ऊंचो लोक अने अढ़ी द्वीप बारै १० पावै । धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्तिको खंध अनें काल ए च्यार टल्या ।

नीचो लोक अढ़ाई द्वीप में ११ (इग्यारे) पावै काल और बध्यो । ऊंचो दिशिमें ११ (इग्यारे) पावै नीचो दिशिमें १० पावै ।

४९ अगुणचासमे बोलै (च्यार) गति ४ (पांच) जाति ६, छव काय १५ चौदह भेद जीवका

२६, चौवीस दण्डक एवं ५३ सूक्ष्म ५४ बादर ५५ त्रस ५६ स्थावर ५७ पर्याप्ता ५८ अपर्याप्ता ५६ ए गुणषट बोल किसो भाव किसो आत्मा ? भाव उदय परिणामो, आत्मा अनेरो, छवमे कोण नवमें कोण ? छवमे जीव नवमे जीव। तथा सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

५० पचासमे बोलें २२ (बाईस) परीषह किसे किसे कर्म के उदय तथा छवमे कोण नवमें कोण ।

११ इग्यारे परीषह तो वेदना कर्मना उदय से ।

२ दोय ज्ञाना वरणो कर्मना उदय से ।

८ आठ मोहनीय कर्मना उदय से ।

१ अन्तराय कर्मका उदय से ।

छवमे जीव नवमे जीव निर्जरा ।

५१ इक्यावनमे बोलें तेवीस पदवी किस्यो भाव किसो आत्मा ।

१९ उगणीस पदवी तो भाव २ (दोय) उदय परिणामिक आत्मा अनेरो ।

१ केवली महाराज की पदवी भाव दोय क्षायक परिणामिक आत्मा उपयोग ।

१ साधूजी महाराज की पदवी भाव ४ (च्यार) उदय वरजी आत्मा चारित्र ।

१ श्रावक की पदवी भाव २ (दोय) क्षयोपशम परिणामी आत्मा देश चारित्र ।

१ समदृष्टि की पदवी भाव ४ च्यार उदय वरजी आत्मा दर्शन ।

उगणीस पदवी तो छवमें जीव नवमें जीव समदृष्टि की अने केवली की पदवी छवमें जीव नवमें जीव निर्जरा । साधू श्रावक की पदवी छवमें जीव नवमें जीव संवर ।

५२ बावनमें बोलें नव तत्वका ११५ (एकसह पंदरह) बोल की ।

जीव कितना—जीव तो ७० सत्तर तेहनी विगत जीवका १४, आस्रवका २०, संवरका २०, निर्जराका १२, मोक्षका ४, एवं ७० ।

अजीव ४५ तेहमें अजीव का १४, पुन्यका ९, (नव,) पापका १८ (अठारा,) बंधका ४ (च्यार) एवं ४५ ।

सावद्य कितना निर्वद्य कितना ।

निर्वद्य तो ३६, तिणमें निर्जरा का १२ संवर का २०, मोक्षका ४, ए छवतीस ।

सावद्य १६ तिणमें आस्रव का १६ (मन वचन)

काया योग ए च्यार टल्या)।

दोनूं नहीं १६ तिणमें ४५ अजीवका चौदह जीवका ए सावद्य निर्वद्य दोनूं नहीं।

च्यार आस्रव मन वचन काया जोग ए सावद्य निर्वद्य दोनूं छै।

आज्ञा माहो कितना—ऊपर परमाणे।

आज्ञा बाहर कितना—आस्रवका।

आज्ञा माहि बाहर कितना—४ च्यार मन वचन काया योग ए च्यार आस्रव का।

५६ बोल आज्ञा माहो बाहर दोनूं नहीं।

रूपी कितना अरूपी कितना ?

अरूपी तो ८० (असी) तिणमें ७० सत्तर तो जीवका, १० अजीव का (पुद्गल का च्यार टल्या) ६ (नव) पुन्यका, १८ (अठारा) पापका ४ (च्यार) बन्धका। यह ३५ रूपी छै।

एकसह पंदरह बोलासे छाडवा आदरवा जाणवा योग कितना।

जाणवा योग तो ११५ एकसह पंदरह, आदरवा योग ३६ (छवतीस) निवद्य कह्यो सो अनें छाडवा योग ७६ तिणमें अजीव का ४५, जीवका १४, आस्रवका २० एव थया।

॥ किसे भाव ॥

४५ अजीवका तो भाव एक परिणामिक १४ जीवका २० आस्रवका ए चौतीस बोल भाव दोय उदय परिणामिक।

संवरका २० (वीस) बोलांमें से १५ पंद्रह तो भाव च्यार उदय वरजीनें, अनें अकषाय संवर भाव ३ (तीन) उपशम क्षायक परिणामिक, अ-योग मन वचन काया ऐ च्यार भाव एक परि-णामिक।

निर्जराका १२ बोल भाव ३ तीन क्षायक क्षयो पशम परिणामिक।

४ मोक्ष का यामें से ज्ञान तप ए दोय तो भाव तीन क्षायक क्षयोपशम परिणामिक, अने दर्शन चारित्र ए दोय भाव च्यार उदय वरजीनें।

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

अथ जिन कल्पी साधुकी ढाल लिख्यते।

जिन कल्पी कष्ट उदैरिने लेवै। परिसाहा सहै सम परिणामोंरे॥ आक्रोश त्रिविध प्रकारना उपजै। तोइ उदेरि न जावे तिण ठामोरे॥ शूरा वीरारा ओ शुद्ध मारग ॥१॥ मास मास खमण कोइ करे निरन्तर। इतरा कर्म कटै एक छिनमेंरे॥ बचन कुवचन सहै सम भावे। राग द्वेष न आणै मुनि मनमेंरे॥ शू० ॥२॥ मास सवा नव जीव रह्यो गर्भमे। तो ए दुःख कितरा दिनकोरे॥ एम विचार सहै सम भावे। शूर मुनि द्रढ मनकोरे॥ शू० ॥३॥ लाभ अलाभ सहै समभावे। वले जीतव मरण समानोरे॥ निन्दा स्तुति सुख दुःख समचित। सम-गिणे मान अपमानोरे॥ शू० ॥४॥ वाइस तेतीस सागर ताइ। जीव वसियो नरक मझारोरे॥ तो किंचित दुःखस्यूं सुं दलगिरो। एम बिमासि अण

गारोरे ॥ शू० ॥ ५ ॥ मेघ सरिषा मोटा मुनि-
श्वर । कियो पादुप गमण संथारोरे । खोली मे जीव
छतां तन त्याग्यो । एक मास पहली गुण धारोरे ॥
शू० ॥ ६ ॥ सालिभद्र ने धनै सरीषा । ज्यांरो सुख
माल तन श्रीकारोरे ॥ त्यांपिण मास मास खमण
तप कीधा । वली पादुप गमण संथारोरे ॥ शू० ॥ ७ ॥
रोग रहित तीर्थंकरनो तन । ते पिण लेवै कष्ट
उदिरोरे ॥ तो सहजांही रोगादिक उपना आइ ।
तो सम परिणामां सहै शूर वीरोरे ॥ शू० ॥ ८ ॥
इत्यादिक मुनि म्हामां देखो । ते कष्ट पड्यां नहीं
काचारे ॥ अल्पकाल में शिव सुख पामें । शूर
शिरोमणी साचारे ॥ शू० ॥ ९ ॥ नरकादिक दुःख
तीव्र वेदना । जीव सहि अनन्ती वारोरे ॥ तो किंचित
वेदनो उपनो महामुनि । सहै आणी मन हर्ष
अपारोरे ॥ शू० ॥१०॥ ए वेदना थी हुवै कर्म निर्जरा
ए वेदना थी कटै कर्मोंरे ॥ पुन्यरा थाट बंधे शुभ
जोगे । वली हुवै निर्जरा धर्मोंरे ॥ शू० ॥ ११ ॥
समचित वेदन सुखरो कारण । ए वेदन थी कटै
कर्मोंरे ॥ सुर शिव ना सुख लहै अनोपम । वली हुवै
निर्जरा धर्मोंरे ॥ शू० ॥१२॥ सम भावे सह्यां होवै
निर्जरा एकान्त । असम भावे सह्यां होवे पाप

एकतोरे ॥ ठाणा अंग चौथे ठाणे श्रीजिन भाख्यो । इमि जाणो समचित मढे संतारे ॥ शू० ॥ १३ ॥

॥ इति सम्पूर्णम् ॥

श्रावक शोभजी कृत—

श्रीभिन्नूगणीके गुणाकी ढाल ।

मोटो फद इण जीवरेरे । कनक कामणी दोय । उलभ रह्यो निकल सकूं नहींरे । दर्शणरो पड्योरे विछोग ॥ स्वामीजीरा दर्शण किण विध होय ॥ १ ॥ कुटम्ब ऋद्धिस्यूं राचियोरे । अन्तराय सुजोय ॥ मंगलीक दर्शण श्रीपूज्यनारे । मुगत पहुंचावे सोय ॥ स्वा० ॥ २ ॥ संसाररा सुख दुःख भोगव्यांरे । कर्म तणो बंध होय ॥ दर्शण नन्दण वन जिसोरे । कर्म चिन्ता टेवे खाय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ दान दया बोध बोजमेरे । हिरदे में दीज्यो पोय । परदेशां गुण विस्तरेरे । ज्यूं सोमेमें रत्तन जडोय ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ चोरी जारी आदि औगण तजोरे । इण भव परभव दोय ॥ स्वर्गा पूरब भव तणोरे । श्रीपूज बिना कुण पुगोय ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ साचे मोतीज्यूं

राजियोए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने यश गाजियोए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयल न काची राची नहीं विषया रसेए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाये, नाम लेतां मन उल्लसेए ॥ ९ ॥ राम रघुवशी तेहनी कामिनी, जनक सुता सीता सतीए ॥ जग सहु जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवा थकी जल काढियुं ए ॥ कलंक उतारवा सतिय सुभद्रा, चंपा वार उघाडियुं ए ॥११॥ सुर नर वंदित शीयल अखंडित शिवा शिव पद गामनीए ॥ जेहने नामे निर्मल थइये, बलिहारि तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुर पांडु रायनी, कुन्ता नामे कामिनी ए ॥ पांडव माता दसे दसार नी, बहेन पतिव्रता पद्मिनी ए ॥ १३ ॥ शीयलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जपंता पातक जाए, दर्शण दुरित निकंदीय ए ॥ १४ ॥ निषधानगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पड़तां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ति जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जग जन पूजिता, पुष्पचुला ने प्रभावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित दाता, सोलमी सती पद्मावती ए ॥१६॥ वीरे भाखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदाए ॥ वहाणु

वहतां जे नर भणसे, ते ले से सुखसपदाए ॥१७॥ इति॥

जयाचार्य कृत—

श्रीभिखणजी स्वामीके गुणाको ढाल ।

नन्दण वन भिक्षु गणस वन्योरी । हेजी प्राण जावे तोइ पग मे खीसोरी ॥ नन्दण ॥ १ ॥ गण माहि ज्ञान ध्यान शोभेरी । हेजी दीपक मंदिर मांहि जिसोरी ॥ नन्दण ॥ २ ॥ श्रवनीतकी देशनो न दीपेरो । हेजी गणिका तणो शिणगार जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ३ ॥ टालोकडरो भणवो न शोभेरी । हेजी नाक विना मोती मुखडो जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ४ ॥ दुःखदाइ खुद्र जीवा सरीषोरी । हेजी नन्दक टालोकड वमण जिसोरी ॥ नन्दण ॥ ५ ॥ शासण में रङ्ग रत्ता रहोरा । हेजी सुर शिव पद मांहि वास बसोरी ॥ नन्दण ॥ ६ ॥ भागबले भिखु गण पायोरा । हेजी रतन चिन्तामण पिण न इसोरी ॥ नन्दण ॥ ७ ॥ गणपति कोपा गाढ़ा रहोरो । हेजी समचित शासण माहे हुलसोरी ॥ नन्दण ॥ ८ ॥ पाड होड चित्त में म पायोरी । हेजी मोह कर्म रो तज दो न सोरी ॥ नन्दण ॥ ९ ॥ खित खीलाग्यारा याद करो री ।

हे जी अचल रहो पिण मतिरे सुसोरी ॥ नन्दण ॥१०॥ बार बार सु ं कहिय तुनेरो । हे जी अडिग पणे थेता गणमें वसोरी ॥ नन्दण ॥ ११ ॥ उगणोसे गुणतीस फागुणारो । हेजी जयजश आगाम सुख विलसोरी ॥ नन्दण ॥ १२ ॥

श्रीकालूगणीके गुणाकी ढाल ।

❀ कवित्त ❀

केइ मारवाड़हु के केइ मेदपाटहु के, केइ देश मालव के सुकृत विभागी है । केइ हरियानके ढूंढार के थलीके केइ, कच्छ गुजरातहुके धर्म अनुरागी है । श्रावक वो श्राविका लुभाये पद पंकजमें, हर्ष हर्ष आये चित्त स्वाम लिव लागी है । सोहन कहत सवे सूरति निहारे तेरी, कालू गणधारी तूं तो सखर सौभागी है ।

॥ ढाल १ लो ॥

अपने मोलाकी मैं योगन बनूंगी योगन बनूंगी
वैरागन बनूंगी अ० (भैरवी)

स्वाम चरन मेरो शीश धरूंगा, शीश धरूंगा मैं मुक्ति वरूंगा स्वाम० ॥ ए आंकड़ो ॥ आदनाथ जिम याद करैया, भ्रम हरैया भारी । पाखण्ड दमन रपन

जिन मतमे, भिक्षु भये अवतारी ॥ मै शीश धरूंगा ॥ १ ॥ जिन आज्ञा सिरधार गच्छाधिप, सीमा बहु विध वाधी। जिन प्रतिवोधी स्वर्ग सिधायो, साठे अनसन साधी ॥ २ ॥ भिक्षु पाट गहु घाट थाट कर, गुण मणि माट दयालू । कोगा नन्द चन्द जिम शीतल, भवि पङ्कज विकसालू ॥ मैं पाय परूंगा मूल नन्दके मैं पाय परूंगा ॥ पाय परूंगा मैं शीश धरूंगा स्वाम चरण ॥ ३ ॥ गिरा अपूरव धाराधर सम, वरषावत गनधारी। उन्मूलत वंबूल कुमिथ्या सिचत गनवन क्यारी ॥ मै पाय० ॥ ४ ॥ कोप रोप कर कीर्ति तिहारी, फैली जक्त मझारी। जैसे जल विच तेल विंदुवो, दुग्ध मध्य जिम वारी ॥ ५ ॥ ग्रहण सूर शशि वेग तेग धर, गमन करत गगनारी। वश नहिं आवी तब ते दोनूं वैठे हाथ पसारी ॥ ६ ॥ इन्द्र कहै ए जगकी लक्षी, लोक कहै इन्द्रानी। संशय हरन कहैं ज्ञानी ए, कालू कीरति जानी ॥ ७ ॥ जश नामी ए तेरी कीरति, अवो रहो ध्रुवतारी चिरंजीवा प्रभु कोटि दिवारी, अरजी एह हमारी ॥ ८ ॥ शुभ वरसर शर अश्व तपा सित, सप्तमी उत्सव मेरी। चतुर गढमे चतुर चग चित, सोवन रूप घणेरा ॥ मैं पाय परूंगा ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥

वाह २ खुब खुली है गोरे तनपर काली चुन्दड़ी वाह २ सीताके खोलमें हणुमन्त न्हाखी मुन्दरी (एदेशी)

मनड़ो लाग्योहा अन्नदाता आपरे नाम में जी। कृपा कर मुज ने ले चालो शिवपुर धाममें जी ॥ मैंतो अरज करूं शिर नामी। अबतो श्रवण करो तुम स्वामी ढील न किजे अन्तरयामी१। ए आंकड़ो ॥ श्रीभिक्षु बसु पाटे ओपताजी। ए तो गणिवर गुणनिधि कालू। निशदिन रस काया प्रतिपालु. दीन उद्धारण परम दयालु ॥ मन ॥ जननी छोगां कुक्षे जनमियाजी। बप्पा मूल शशी सुत निको, वारू कोठारी कुल टीको, शहर सखर छापुरगढ़ तीखो ॥ २ ॥ लघुवय माता साथे संजम लियोजी। उद्यम ज्ञान ध्यान वर कीधो, वारू समय बांच रस लीधो, डालगणि लख गणपद दोजो ॥ म० ॥ ३ ॥ वरषत वाणी सघन सुहामणीजी। बहु विध मनवंछित सुखकरणी, आतो पाप पंक परहरणी, चित धर सुनत तास दुःख टरणी ॥४॥ कीर्ति वेलो फेली दशों दिशाजी, ग्रहण पुरन्दर निज वधू म्हेली, ते कहे मम पति पे चाल सहेली. तिहां आपां रमस्यां विहुं भेली ॥ ५ ॥ कीर्ति बोली तूंतो भोली पूरंदरीहे, मैं तो तुम साथे नहीं आवूं, अहो निश

सुमति सग सुख पावूं, गणपति छाड किहा नही जावूं ॥६॥ सुण इन्द्राणी वदन कुमलावणीजो, आवी पतिने एम प्रकाशी तेतो नही आवे तुम पासे, इम सुण हरि थयो अधिक उदासे ॥७॥ प्रभुता इन्द्र तणी पर आपणीजी, शीतलता शशिहर सम जानी, काठ रजत सारद सुखदाना, पाणी विच कमला लहराणी ॥८॥ निशदिन वंछा तुम दरशण तणीजी, लाग रही मुझ तनमन मायो, दिवस गिणत हिवे दरशन पायो, आज तो हूं वड वखत कहायो ॥ ९ ॥ तुम गुण सिंधु मुझ मति चिदुवोजी । मैं तो पार कदे नही पाऊं, पिण निज मनना हूंस पूराऊं, किंचित गुणकरी तोय रिझाऊं ॥ १० ॥ युग मुनि वरसर सुचि क्रण अष्टमीजी । आयो सोहन शरण तिहारो, मस्तक कर धर द्यो रिझवारो, प्रभु अपनो विरुद विचारो ॥ ११ ॥

अथ अनाथी मुनिको स्तवन ।

राय श्रेणिक बाडी गयो । दीठो मुनि एकत । रूप देखी अचरज थयो । राय पूछे रे कुण वृतान्त ॥ श्रेणिक रायहूं रे अनाथी निग्रंथ । मैं तो लीधोरे साधुजी री पंथ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हुतो । पितासुज प्रवल धन ॥ पुत्र परवार भर

पुरस्यूं तिणशी हूँ कुंवर रत्तन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना उपनी । मो स्यूं खमियन जाय । मात पिता भूरया घणा । न सक्यारे मुज वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे । खरच्या वहोना दाम ॥ तो पिण वेदना गई नहीं । एहवोरे अथिर ससार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे । धरती दुःख अथाय । उपावतो किया घणा । पिण म्हारेरे सुख नहिं थाय ॥ श्रेणिक ॥५॥ थाय बन्धु पिण म्हारे हुंता । एक उदरना भाय ॥ औषध तो बहु विध किया । पिण कारी न लागी काय ॥ श्रेणिक ॥ ६ ॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती । बड़ी छोटी ताय । बहुविध लूण उवारती पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरड़ी मन मोरड़ी । गोरड़ी अबला बाल । देख वेदना म्हायरी न सकीरे मुझ वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंख्यां बहु आंसु पड़े । सिंच रही मुझ काय ॥ खाण पाण विभूषा तजी । पिण म्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥९॥ प्रेम विलुधी पदमणी । मुझस्यूं अलगी न थाय ॥ बहु विध वेदना मैं सही । वनिता रहीरे विललाय ॥ श्रेणिक ॥ १० ॥ बहु राजवैद्य बुलावियां । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिण म्हारेरे

समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥ ११ ॥ जगमें कोई किणरो नहो । तव म थयोरे अनाथ ॥ वितरागजीरे धर्म विना । नहो । कोईरे सुगतिरो साथ ॥ श्रेणिक ॥ १२ ॥ वेदना जावे मांहरी । तो लेऊ संजम भार । इम चिन्तवता वेदना गई, प्रभातेरे थयो अणगार ॥ श्रेणिक ॥ १२ ॥ गुण सुण राजा चिन्तवै । धन २ एह अणगार ॥ राय श्रेणिक समकित लीवो । वान्दी आयोरे नगर मझार ॥ श्रेणिक ॥ १४ ॥ अनाथीजीरा गुणगावता । कटे कर्मा रो जोड । गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्यांने वन्दुरे वेकरजोड ॥ श्रेणिक ॥ १५ ॥

करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल ।

भव्य जीवा आदि जिनेश्वर विनऊ सतगुरु लागूं पाय । भव्य जीवा मन वचन काया वश करो, छाण्डो चार कषाय । भव्य जीवा करणी हो कीज्यो चित्त नर्मले ॥ १ ॥ (आंकड़ी) भव्य जीवा मनुष्य जमारो दोहिलो, सूत्र सुणवो सार । भव्य जीवा साची श्रद्धा दोहिली. उत्तम कुल अवतार । भ० ॥ २ ॥ भव्य

भव्य जीवा जन्म मरण युग पूरियो. ज्ञान विना नवि अन्त । भ० ॥ ३ ॥ भवा जीवा भिकियो इण संसार- में, ज्यों भड़भूजारी भाड़ । भवा जीवा निग्रन्थ गुरु जीवा मोह मिथ्यात्वरी नींदमें सूतो काल अनन्त । हेला दिये, अवतो आंख उघाड़ ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवा जीवा नरक तणा दुःख दोहिला, सुणतां थड़हड़ थाय । भवा जीवा पापकर्म एकठा किया, मार अनन्ती खाय भ० ॥ ५ ॥ भवा जीवा चन्द्र सूर्यरो दर्शन नहीं, दीसै घोर अंधार । भवा जीवां न्हामण नें सैरी नहीं जहां देखे जहां मार । भ० ॥ ६ ॥ भवा जीवा आम्बो जीमण रातरो, करतां जीव मराय । भवा जीवा भोभर विष्ठा जेहने, चापे मूंढा मांय । भ० ॥ ७ ॥ भवा जीवा परमाधामी देवता, ज्यांरी पन्द्रह जात । भवा जीवा मार देवे एकण जीवने, करै अनन्ती घात । भ० ॥ ८ ॥ भवा जीवा अर्थ अनर्थ धर्म कारणे, जल ढोल्यो विन ज्ञान । भवा जीवा वाहिर शुचि बहुला किया, माहें मैल अज्ञान । भ० ॥ ९ ॥ भवा जीवा वैतरणी लोही राधनो तिणरो तीखो नीर । भवा जीवा तिणने डुबोवै तेहमें छिन छिन होय शरीर । भ० ॥ १० ॥ भवा जीवा ढांढा ज्यों चरता सदा नहीं जाण्यो तिथीं वार । भवा जीवा पानफूल रूंख

छेदतो दया न आणी लिगार ।। भ० ॥ ११ ॥ भवा जीवा तत्त तहा कूड सांभली तिणरे वसाण छाय। भवा जीवा पान पडे तरवारमा टूक टूक होय जाय। भ० ॥ १२ ॥ भव्य जीवा धस्या मे रहतो रहे नातो घररे भार। भव्य जीवा लोह तणो रथ जोतरे, धरतो धूप अगार। भ० ॥ १३ ॥ भव्य जीवा परनी झातो दाह दे, चोरया वित्त बहुवार। भव्य जीवा धन खाधो कुटुम्बिया, सहे एकलो मार। भ० ॥ १४ ॥ भवा जीवा हाथ पाव छेदन करे, न्हाखे अंग शरीर। भव्य जीवा पुकार करे किण आगले, वहा नही किणरो जोर। भ० ॥ १५ ॥ भव्य जीवा रङ्गरातो मातो फिरे परनारी प्रसङ्ग। भव्य जीवा अग्निवर्णी लोह पूतली, चैढे तिणरे अङ्ग। भ० ॥ १६ ॥ भवा जीवा पाप कर्म बोहला किया, कर-कर मनरो जोश। भवा जीवा बोले परमाधामि देवता, किसो हमारो दोष। भ० ॥ १७ ॥ भवा जीवा छण जीतवा सुख वछवा, सागर पल है मार। भवा जीवा विन भुगत्यां छूटे नही, अर्ज करे बारम्बार। भ० ॥ १८ ॥ भवा जीवा क्रोध मान माया लोभ मे, कधियो वह्यो अन्याय। भवा जीवा साध श्रावक बल्यो देतो धर्म अन्तराय। भ० ॥ १९ ॥ भवा जीवा जीव हणी धर्म जाणियो,

सेवा कुगुरु कुदेव । भव्य जीवा निग्रन्थ मार्ग नवि ओलख्यो, ताणो कुल री टेव । भ० ॥ २० ॥ भव्य जीवा कपट करी धन मेलियो, चाड़ी चुगली खाय । भव्य जीवा अभक्ष्य भक्ष्य जीवने हणी, न पाली छः काय । भव्य० ॥ २१ ॥

रेआयुष टूटीको सान्धो को नहि की ढाल ।

आयुष टूटी को सान्धो को नहि रे, तिण कारण मति करो प्रसाद रे । जरा आयांनि शरणो का नहिरे, हिंसा टाली ने धर्म सम्भालरे ॥आ०॥१॥ कुटुम्ब कबीलो नारी कारणेरे, मत करो कोई जाड़ा पापरे । चोर तणी परै सन्ध्या झुरसी रे, परभव मे सहसी घणो सन्ताप रे ॥ आ० ॥ २ ॥ धनगडियो लहिनो रह्यो लोकमे रे, आणे पोता लगदूं बताय रे । जीभ थी नथी आवै उता बालनो रे, रहो हूंस मनमांरी मन मांयरे ॥ आ० ॥३॥ ऊंचा चिणाया मन्दिर मालिया, रे दे दे जमीं में ऊंडी नींव रे । इक दिन ऊभा छोड़ी चालसी रे, सुखदुःख सहसी अपनो जीव रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चक्रवर्ती हलधर राणा केशवारे, इमि बली इन्द्र सुरांरो नाथ रे ।

उगमि २ ने सगला आथम्यां रे, जोयजो काई अचरज वाली वात रे ॥ भा० ॥ ५ ॥ जुगलिया रे तीन पल्योपमनी आयुषोरे, लाम्बीउथारी तीनकोसरी कायरे। कल्पवृक्ष पूरे ज्यांने दशजातगारे, बादल जिम गया विलाय रे ॥ भा० ॥ ६ ॥ भगवन्त चौवीसवा श्रीवर्द्धमानजी रे शक्रेन्द्र बोल्यो इमडी वात रे। स्वामी दोयघडी आयुने वधारजोरे, जिमि यह भस्मग्रह टल जायरे ॥ भा० ॥ ७ ॥ वलतो श्रीवीर जिनेन्द्र इसडो कहे रे सुनरे शक्रन्द्र माहरो वाय रे। तीन काल में वात हुई नहीरे, आयुषो वधारिया नहि जांयरे ॥ भा० ॥ ८ ॥ अस्थिर संसार जाणी मुनि तज कीसन्यारे करता मुनि नवकल्पी विहाररे। भार उपत्नीनो टी ज्याने उपमारे, नधरैमुनि ममता नेह लिगाररे ॥ भा० ॥ ६ ॥ चारित्र पाले रूडि रीति सूं रे, देवे वली अपनो छन्दो रोक रे। तुरत विराजे मुनि मुक्तिमे रे यश लहे इहलोकने परलोक रे ॥ भा० ॥ १० ॥ शब्द रूप देखिने ममता करो रे, मत करो कोई भणियांरो अभिमानरे। चोथ ऋषिजी कहे शहर जालोरमे रे, सूत्र थी सुभ होज्या निस्तार रे ॥ ११ ॥

॥ अन्तर ढाल ॥

(समझू नर विरला देशी)

केई लोग मिथ्यात्वी त्याने नहीं ज्ञान, वले पूरो नहीं विज्ञान रे। समझू नर विरला। (आंकड़ी) आज दोय तीर्थङ्करांरे झगड़ो लागो, तेतो सावत्थी नगरीरे बागोरे ॥ स० ॥ १ ॥ ये दोनों माहोमांहो वादमें बोलै, एक एकरा पड़दा खोलैरे ॥ स० ॥ वीर कहे म्हारो चेलो गोशालो, सो सूं मतकर झूठी झकालोरे ॥ स० ॥ २ ॥ गोशालो कहे हूं थारो चेलो नाहीं तें कूड़ी कथी लोकां मांहीरे ॥ स० ॥ मैं तौ साधपणो थां आगे नहीं लीधो, मैं तो गुरु तोनै कदेय न कीधो रे। स० ॥ ३ ॥ वीर कहे गोशालो तीर्थङ्कर नाहीं, तीर्थङ्करना गुण छै सो मांहीरे ॥ स० ॥ गोशालो कहै हूं तीर्थङ्कर शूरो, ओतो काश्यप प्रत्यक्ष कूरोरे। स० ॥ ४ ॥ वीरने सम्मुख कह्यो गोशालो, तूं तो मो पहिलो करसो कालोरे। स० ॥ जब वीर कहे सुणरे गोशालो, करसो तूं मो पहिलो कालोरे। स० ॥ ५ ॥ आप आप तणा मत दोनों थापै, एक एकनै माहोमां उत्थापैरे। स० ॥ यांमे कुण साचो कुण मृषावाई, केइ कहे म्हांने तो खबर न कांईरे। स० ॥६॥ यांमे

केई कहे गोशालोजी साचा, याने किण विध जाणां काचा रे । स०॥ यांमे उघाडी दीसे अरामाती, तुरत कीधो वे साधांरो घातोरे । स० ॥ ७॥ इण देखता वे दूणां बाल्या दोय चेला, इणसु पाछा न हुवा हेलारे । स० ॥ इणने खोटो कहतो जब बोलतो सठा, पछे अणबोल्यो काई बेठोरे । स० ॥ ८ ॥ गोशालोजी बोले गुञ्जार करतो, वीर पाछा बोले मोई डरतोरे । स० ॥ गोशालोजी सिंह तणो पर गूँज्यां वीरना साधु सगला धूजारे । स० ॥ ९ ॥ वीररी तो लाका देखलीधी सिद्धाई, इणमे कला न दीखे काईरे । स० ॥ जो सिद्धाई होवे तो देखावता यांने जब थे पण ऊभा रहता क्यानेरे । स० ॥ १० ॥ ओ तो इण ऊपर चलायने आयो, इण कोठग बागरे मायोरे । स० ॥ ओ शूर पणोतो दीसे इण मांई, इण में कमी न दीखे काईरे । स० ॥ ११ ॥ जब पिण लोकामे हूं तो इसडो अन्धारो, ते विकलांने नहो विचारोरे । स० ॥ ओ गोशालो पाखण्डी प्रत्यच पापो, तिणने दियो तीर्थंकर थापोरे स० ॥ १२ ॥ केई चतुर विचक्षण था तिणकालो, त्यां खोटो जाण्यो गोशालोरे । स० ॥ ओ गोशालो कुपात्र मूढ मिथ्याती तिण कीधी साधांरो घातोरे । स० ॥ १३ ॥ क्षमा

शूरा अरिहन्त भगवन्त, त्यांरे ज्ञानतणो नहीं अन्तरे।
स० ज्यांरा क्रोड़ जिह्वा कर नित्य गुण गावे, त्यांरो
पार कदे नहीं आवेरे। स० ॥ १४ ॥ यां लक्षणांकर
तीर्थङ्कर पिछाणो, तेतो भगवन्त महावीर जाणोरे।
स० ॥ ये तो अतिशय गुणोकरी पूरा, यांने कदेय म
जाणो कूड़ारे। स० ॥ १५ ॥ कोई तो भगवंतने
जिण जाणे, तेतो एकान्त त्यांने वखाणेरे। स० ॥
कोई अज्ञानी गोशालेरो ताणे, ते तो जिनगुण मूल
न जाणेरे। स० ॥ १६ ॥ कोई कहे दोनोंही साचा,
आपांथी दोनों ही आछारे। स० ॥ आपांने तो यारे
झगड़े में न पड़णो, सगलांने नमस्कार करणोरे।
स० ॥ १७ ॥ कोई कहे दोनो ही कूड़ा, ते कर रह्या
फेल फितूरारे। स० ॥ आप आप तणो मत बांधन
काजे, तिणसूं झगड़ा करता नहीं लाजेरे। स०
॥ १८ ॥ ओ तो पेट भरणरो करैछै उपाय, लोकांने
घालैछै फन्द मांयरे। स० ॥ इण विध कोई बोलै
अज्ञानी, ते तो भाषा काढै मनमानीरे। स० ॥ १९ ॥
हुसड़ो अन्धारो हूंतो तिणकाले, अशुभ उदय आपो न
सम्भालेरे। स० ॥ तीर्थङ्कर थकां हुआ हुसड़ा बेहदा,
ते तो अनादि कालरा सेंहदारे। स० ॥ २० ॥ इम
सांभल उत्तम नरनारी, अन्तरङ्ग मांहि करज्यो बिचारी

रे । स० ॥ पक्षपात किणरी मूल नहीं कीजे, साचो मार्ग ओलख लीजे रे । स० ॥ २१ ॥

॥ कर्मनो सिज्झाय ॥

देव दानव तीर्थंकार गणधर, हरि हर नरवर सबला । कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्यां, सबला हुआ महा निबला रे । प्राणी कर्म समो नहीं कोई ॥ १ ॥ (आकडी) आदीश्वरजाने कर्म अटाख्या, वर्ष दिवस रह्या भूखा । वीरने बारह वर्ष दुःख दीधा, उपना ब्राह्मणी कूखा रे । प्राणी० ॥२॥ बत्तीस सहस्र देशांरो साहिब, चक्री सनत्कुमार । सोलह रोग शरीर में उपना, कर्म किया तनुछार रे । प्राणी० ॥ ३ ॥ साठ सहस्र सुत मार्या एकण दिन, ओवा जवान नर जैसा । सागर हुवो महादुःख नो दुःखियो, कर्मतणा फल ऐसारे । प्राणी० ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरिचन्दने, बेची सु तारा राणी । बारह वर्ष लग माथे आण्यो, नीच तणे घर पाणो रे । प्राणी० ॥ ५ ॥ दधिवाहन राजानी बेटो, चाहवी चन्दन बाला । चौपद ज्यों चौहटा में बेची, कर्म तणा ये चाला रे । प्राणी०

॥ ६ ॥ सम्भूम नाम आठवों चक्री, कर्मां मायर नाख्यो। सोलह सहस्र यक्ष ऊभा देखें, पिण किण ही नवि राख्यो रे। प्राणी ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नाम बारहवों चक्री, कर्मांकीधो आन्धो। इम जाणी प्राणी थे कांई, कर्म कोई मति बान्धो रे। प्राणी० ॥ ८ ॥ छप्पन करोड़ यादव नो साहिब, कृष्ण महावली जाणी। अटवी मांहीं मुवो एकलड़ो, बिल-बिल करतो पाणीरे। प्राणी० ॥ ९ ॥ पाण्डव पांच महा जूझार हारी द्रौपदी नारी। बारह वर्ष लग वन रड़वडिया, भमिया जेम भिखारी रे। प्राणी० ॥ १० ॥ वीस भुजा दश मस्तक हुंता लक्ष्मण रावण मार्यो। एकलडे जग सहु नर जीत्यो, ते पिण कर्मां सूं हार्यो रे। प्राणी० ॥ ११ ॥ लक्ष्मण राम महा बलवन्ता, अरु सत्यवन्ती सीता। कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्यां, बीतक बहुतसा बीता रे। प्राणी० ॥ १२ ॥ सम्यक्त्व धारी श्रेणिक राजा, बेटे बान्ध्यो मुसका। धर्मी नरने कर्मां धकाया, कर्मां सूं जोर न किसका रे। प्राणी० ॥१३॥ सती सिरोमणी द्रौपदी कहिये, जिण सम अवर न कोई। पांच पुरुषनी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे। प्राणी० ॥ १४ ॥ आभा नगरी नो जे स्वामी, साचो राजा चन्द। मांई कीधो पक्षी कूकड़ो, कर्मां नाख्यो

ते फन्द रे। प्राणी० ॥ १५ ॥ ईश्वर देव पार्वती नारी, कर्त्ता पुरुष कहावे। अहनिशि महल श्मशानमें वासो, भिक्षा भोजन खावे रे। प्राणी० ॥ १६ ॥ सहस्र किरण सूर्य्य परितापी, रात दिवस रहे अटतो। सोलह कला शशिधर जगचाहवो, दिन २ जाय घटतो रे। प्राणी० ॥ १७ ॥ इम अनेक खराडा नर कर्मे, भाज्या ते पिण साजा। ऋद्धिहर्ष कर जोड़िने विनवे, नमो २ कर्म महाराजा रे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

※ उपदेशिक ढाल ※

चेतोरे चेतो प्राणिया, मति राचो रे रमणी रे संग के सेवो रे जिनवाणी ॥ ए आकडी ॥ सुरतरु नी परें दोहिलो रे, लाधो नर अवतार। पहिल जनम किम हारिये, काई कीज्योरे मन माहि विचार के ॥ चेतो रे० ॥ १ ॥ पहिलो तो समकित सेवियेरे, जे छे धरम नो मूल। संजम समकित बाहिरो, जिन भाख्यो रे तुस खराडवा तुल्य के ॥ चेतो रे० ॥२॥ अरिहन्त देव आराधज्या रे, गुरु गिरवा शुद्ध साध। धर्म जिनेश्वर भाषियो, ए समकितरे सुरतरु सम लाध के ॥ चेतो

रे० ॥ ३ ॥ तहत करीने शरव ज्योरे, जे भाख्यो जग-नाथ। पांचों ही आस्रव परिहरो, जिम मिलिये रे शिव पुरनों साथ के ॥ चेतोरे० ॥ ४ ॥ जीव वंछे सर्व जीवणोरे, मरणो न वंछे कोय। आपसलू कर लेखवो, तस थावररे हणज्यो मत कोय के ॥ चेतोरे० ॥ ५ ॥ अपजश अकीर्ति इण भवेरे, परभव दुःख अनेक। कूड कहितां पामिये, कांई आणोरे, मन मांहिं विवेक के॥ चेतोरे० ॥ ६ ॥ चोरी लेवै कोई पर तिणोरे तिणथी लागै छे पाप। तो धन कंचन किम चारिये तेथी वांधे रे भव भव में संताप के ॥ चेतोरे० ॥ ७॥ महिला संगे टूहव्यारे, नव लख सन्नी उपजन्त क्षणेक सुखरे कारणे, किम कीजिरे हिंसा मतिवन्त के ॥ चेतोरे० ॥ ८ ॥ पुत्र कलत्र घर हाटनी रे, ममता मत किज्यो फोक जेह परिग्रह मांहिं छै, ते तो छाडीरे गया बहुला लोक के ॥ चेतोरे० ॥ ९ ॥ अल्प दिवसनो पाहुणोरे सहुको इण संसार। इक दिन उठी जावणो, कुण जाणेरे किणहीं अवतार के ॥ चेतोरे० ॥ १० ॥ व्याधि जरा ज्यां लग नहीं रे, तहां लग धर्म संभाल। धारा सजल घन बरसतां कुण समरथरे बांधेवा पाल के ॥ चेतोरे० ॥ ११ ॥ अंजलीनां जल नी परें रे, क्षण क्षण छीजै आव। जावै ते नहिं वाहुडै जरा घालेरे

जीवन मे घाव की ॥ चेतोरे० ॥ १२ ॥ मात पिता बन्धव बहूरे, पुत्र कलत्र परिवार । स्वारथ लग सहूको मगा कोइ परभवरे, नहिं राखण हारकी ॥ चेतोरे० ॥ १३ ॥ क्रोध मान माया तजोरे, लोभ न करजो लिगार । समता रसपूरी रहो, वले दोहिलोरे मानव अवतार की ॥ चेतोरे० ॥१४॥ आरम्भ छोडो आतमारे, पीवो सजम रस पूर। शिव रमणी वेगा वरो, इम भाखेरे विजयदेव सूर की ॥ चेतोरे० ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल पार्श्वचन्द्र सूरी कृत ॥

दुल हो नर भव पामणो जीवनें, दुल हो श्रावक कुल अवतारो, गुणवन्त गुरूनो सग छे दोहिलो ते पामी न मत हारोरे प्राणी, जीव दया व्रत पालो ॥ १ ॥ आस्रव प्रति पच्च सवर बोल्यो, तेहनो रहस्य विचारो, आरम्भ आस्रव सजम सम्वर, इम जाणी जीव न मारो रे ॥ प्राणी जी० ॥ २ ॥ जीव सहू ते जीवणुं वाञ्छे, मरणू न वञ्छे कोई आपणे दुख छे जिम छे परनें, हिये विमासो जोईरे ॥ प्राणी जी० ॥ ३ ॥ अग उपाङ्ग शस्त्र धारा अणी सूं, नख चख छेदे कोई, जेहवी वेदना मनुष्यने होवे तेहवी एकेन्द्री नें होई रे ॥ प्राणी जी०

॥४॥ जो जरा पुरुषनैं बलवन्त तरुणो, देवै मुष्टि प्रहारो। जे दुख वेदै तेहवो एकेन्द्रिनें, लीधां हाथ मझारोरे ॥ प्राणी जी० ॥ ५ ॥ समकित बिन गज भव सुमरारी, दया चोखे चित पाली। प्रति संसार कियो तिण ठामें, मेघ कुमर हुयो दुखटाली रे ॥ प्राणी जि० ॥ ६ ॥ अभय दान दानां मांहिं मोटो, बले दान सुपात्रे दाख्यो आगम संभालनै जिनमत जोवो, मूलदया धर्म भाख्यो रे ॥ प्राणीं जी० ॥ ७ ॥ लोह शिला ज्यो तिरै महोदधि, कदा पश्चिम उगै भानू ॥ सहज अग्नि पण शीतल होवे, तोही हिंसा में धर्म म जाणूरे ॥ प्राणी जी० ॥ ८ ॥ रवि आंथमियां दिवस विमासै, अहिमुख अमृत जोवे ॥ विषखावे बले जीवणूं वांछे तिम हिंसा में धर्म न होवै रे ॥ प्राणी जी० ॥९॥ अग्नि सींचो नैं कमल बधारै, चीर धोवा ने कादो आणैं ॥ ज्यों कुगुरु प्रसंगी मूरख मानव, जीव हणै धर्म जाणैरे ॥ प्राणी जी० ॥ १० ॥ आगम वेद पुराण कुरान में कह्यो दया धर्म सारो बलि जिनजीरा बचन सांचा जाणूं तो, छकाय जीवांनें मतमारोरे ॥ प्राणी जी ॥ ११ ॥ अर्थ अनर्थ धर्म जाणीनें, जीव हणै मन्द बुद्धि ॥ पिण धर्म काजे छकाय हणे त्यांरी, सरधा घणो छै औंधी रे ॥ प्राणी जी० ॥१२॥ सूई रे नांके सीधड़ो पोवै, ते किम

सुमति सग सुख पावूं, गणपति छाड किहा नही जावूं ॥६॥ सुण इन्द्रराणी वदन कुमलावणीजी, आवी पतिने एम प्रकाशे तेतो नहीं आवे तुम पासे, इम सुण हरि थयो अधिक उदासे ॥७॥ प्रभुता इन्द्र तणी पर आपणीजी, शीतलता शशिहर सम जानी, कठ रजत सारद सुखदानी, पाणी विच कमला लहराणी ॥८॥ निशदिन वछा तुम दरशण तणाजी, लाग रही मुझ तनमन मायो, दिवस गिणत छिवे दरशन पायो, भाज तो छू बड बखत कहायो ॥ ९ ॥ तुम गुण सिधु मुझ मति चिदुरोजी । मै तो पार कदे नही पाऊ, पिण निज मननो हूंस पूराऊ किंचित गुणकारी तोय रिझाऊं ॥ १० ॥ युग मुनि वरसर सुचि कृष्ण अष्टमीजी । आयो सोहन शरण तिहारो, मस्तक कर धर द्यो रिझवारी, प्रभु अपनो विरुद विचारो ॥ ११ ॥

अथ अनाथी मुनिको स्तवन ।

राय श्रेणिक वाडो गयो । दीठो मुनि एकत । रूप देखी अचरज थयो । राय पूछेरे कुण वृतान्त ॥ श्रेणिक रायहू रे अनाथो निग्रंथ । मैतो लीधोरे साधुजी रो पथ ॥ श्रेणिक ॥ १ ॥ कोसम्बी नगरी हु'तो । पितामुज प्रवल धन ॥ पुत्र परवार भर

पुरस्यूं तिणरो हूँ कुंवर रत्तन ॥ श्रेणिक ॥ २ ॥ एक दिवस मुज वेदना उपनो । मो स्यूं खमियन जाय । मात पिता झूरया घणा । न सक्यारे मुज वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ३ ॥ पिताजी म्हारे कारणे । खरच्या बहोना दाम ॥ तो पिण वेदना गई नहीं । छहवोरे अथिर संसार ॥ श्रेणिक ॥ ४ ॥ माता पिण म्हारे कारणे । धरतो दुःख अथाय । उपावतो किया घणा । पिण म्हारेरे सुख नहिं थाय ॥ श्रेणिक ॥५॥ थाय बन्धु पिण म्हारे हुंता । एक उदरना भाय ॥ औषध तो बहु विध किया । पिण कारो न लागी काय ॥ श्रेणिक ॥ ६ ॥ बहिनां पिण म्हारे हुंती । बड़ो छोटी ताय । बहुविध लूण उवारती पिण म्हारेरे सुख नहीं थाय ॥ श्रेणिक ॥ ७ ॥ गोरड़ो मन मोरड़ी । गोरड़ो अबला बाल । देख वेदना म्हायरी न सकीरे मुझ वेदना वंटाय ॥ श्रेणिक ॥ ८ ॥ आंख्यां बहु आंसु पड़ै । सिंच रही मुझ काय ॥ खाण पाण विभूषा तजो । पिण म्हारेरे समाधी न थाय ॥ श्रेणिक ॥९॥ प्रेम विलुधो पदमणो । मुझस्यूं अलगी न थाय ॥ बहु विध वेदना मैं सही । बनिता रहीरे विललाय ॥ श्रेणिक ॥ १० ॥ बहु राजवैद्य बुलाविया । किया अनेक उपाय ॥ चन्दन लेप लगाविया । पिण म्हारेरे

समाधो न थाय ।। श्रेणिक ।। ११ ।। जगमें कोई किणरो नहीं । तब मे थयोरे अनाथ ।। वितरागजीरे धर्म बिना । नहो । कोईरे सुगतिरो साथ ।। श्रेणिक ।। १२ ।। वेदना जावे मांहरी । तो लेऊ संजम भार । इम चिन्तवता वेदना गई प्रभातेरे थयो अणगार ।। श्रेणिक ।। १३ ।। गुण सुण राजा चिन्तवे । धन २ यह अणगार ।। राय श्रेणिक समकित लीवी । वान्दी आयोरे नगर मझार ।। श्रेणिक ।। १४ ।। अनाथीजीरा गुणगावता । कटे कर्मा री कोड । गुण सुण सुन्दर इम भणे । ज्याने वन्दुरे वेकरजोड ।। श्रेणिक ।। १५ ।।

करणी हो कीज्यो चित्त निर्मले की ढाल ।

भव्य-जीवा आदि जिनेश्वर विनऊ सतगुरु लागूं पाय । भव्य जीवा मन वचन काया वश करो छाराडो चार कषाय । भव्य जीवा करणी हो कीज्या चित्त नर्मले ॥ १ ॥ (आकड़ी) भव्य जीवा मनुष्य जमारो दोहिलो, सूत्र सुणणो सार । भव्य जीवा साची श्रद्धा दोहिली उत्तम कुल अवतार । भ० ॥ २ ॥ भव्य

भव्य जीवा जन्म मरण युग पूरियो. ज्ञान विना नवि अन्त। भ० ॥ ३ ॥ भवा जीवा भिकियो इण संसार-में, ज्यों भड़भूजारी भाड़। भवा जीवा निग्रन्थ गुरु जीवा मोह मिथ्यात्वरी नींदमे सूतो काल अनन्त। हेला दिये, अबतो आंख उघाड़ ॥ भ० ॥ ४ ॥ भवा जीवा नरक तणा दुःख दोहिला, सुणतां थड़हड़ थाय। भवा जीवा पापकर्म एकठा किया, मार अनन्ती खाय भ० ॥ ५ ॥ भवा जीवा चन्द्र सूर्यरो दर्शन नहीं, दीसै घोर अंधार। भवा जीवां न्हासण नें सैरी नहीं जहां देखे जहां मार। भ० ॥ ६ ॥ भवा जीवा आख्यो जीमण रातरो, करतां जीव मराय। भवा जीवा भीभर विष्ठा जेहने, चापे मूंढा मांय। भ० ॥ ७ ॥ भवा जीवा परमाधामी देवता, ज्यांरी पन्द्रह जात। भवा जीवा मार देवे एकण जीवने, करै अनन्ती घात। भ० ॥ ८ ॥ भवा जीवा अर्थ अनर्थ धर्म कारणो, जल ढोल्यो बिन ज्ञान। भवा जीवा वाहिर शुचि बहुला किया, माहें मैल अज्ञान। भ० ॥ ९ ॥ भवा जीवा वैतरणी लोही राधनो तिणरो तीखो नीर। भवा जीवा तिणने डुबोवे तेहमें छिन छिन होय शरीर। भ० ॥ १० ॥ भवा जीवा ढांढा ज्यों चरतो सदा नहीं जाण्यो तिथीं वार। भवा जीवा पानफूल रूंख

छेदतो दया न आणी लिगार ।। भ० ॥ ११ ॥ भव्य जीवा वृक्ष तणां कूड सांभलो तिणरे वसाणे छाय । भव्य जीवा पान पडे तरवारमा टूक टूक होय जाय । भ० ॥ १२ ॥ भव्य जीवा धस्का में रवतो रहे अति धरते भार । भव्य जीवा लोह तणे रथ जोतरे, धरतो धूप अगार । भ० ॥ १३ ॥ भव्य जीवा परनी छाती दाह दे चोख्या वित्त बहुबार । भव्य जीवा धन खाधो कुटुम्बिया, सहे एकलो मार । भ० ॥ १४ ॥ भव्य जीवा हाथ पाव छेदन करे, न्हाखे अंग मरोर । भव्य जीवा पुकार करे किण आगले, वहा नहीं किणरो जोर । भ० ॥ १५ ॥ भव्य जीवा रङ्गरातो मातो फिरे परनारी प्रसङ्ग । भव्य जीवा अग्निवर्णी लोह पूतली, चेढे तिणरे अङ्ग । भ० ॥ १६ ॥ भव्य जीवा पाप कर्म बोहला किया, वार वार मनरी मौज । भव्य जीवा बोले परमाधामि देवता, किसो हमारो दोष । भ० ॥ १७ ॥ भव्य जीवा घणा जीतव्य सुख अछवा, सागर पल्य ने मार । भव्य जीवा बिन भुगत्यां छूटे नहीं, अर्ज करे वारम्वार । भ० ॥ १८ ॥ भव्य जीवा क्रोध मान माया लोभ में, छुटियो वलो अन्याय । भव्य जीवा साध श्रावक बण्यो, टलो धर्म अन्तराय । भ० ॥ १९ ॥ भव्य जीवा क्रोध इणो धर्म आणियो,

सेवा कुगुरु कुदेव । भवा जीवा निग्रन्थ मार्ग नवि ओलख्यो, ताणी कुल री टेव । भ० ॥ २० ॥ भवा जीवा कपट करी धन मेलियो, चाड़ी चुगली खाय । भवा जीवा अभक्ष्य भक्ष्य जीवने हणी, न पाली छः काय । भवा० ॥ २१ ॥

रेआयुष टूटीको सान्धो को नहि की ढाल ।

आयुष टूटी को सान्धो को नहि रे, तिण कारण मति करो प्रसाद रे । जरा आयांने शरणो का नहिरे, हिंसा टाली ने धर्म सम्भालरे ॥आ०॥१॥ कुटुम्ब कबीलो नारी कारणेरे, मत करो कोई जाड़ा पापरे । चोर तणी परै सन्ध्या झुरसी रे, परभव में सहसी घणो सन्ताप रे ॥ आ० ॥ २ ॥ धनगडियो लहिनो रह्यो लोकमे रे, जाणे पोता लगदूं बताय रे । जीभ थी नथी आवै उता वालनो रे, रह्यो हूंस मनमांरी मन मांयरे ॥ आ० ॥३॥ ऊंचा चिणाया मन्दिर मालिया, रे दे दे जमीं में ऊंडी नींव रे । इक दिन ऊभा छोड़ी चालसी रे, सुखदुःख सहसी अपनो जीव रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ चक्रवर्ती हलधर राणा केशवारे, इमि बलो इन्द्र सुरांरो नाथ रे ।

उगमि २ ने सगला आथम्यां रे, जोयजो काई अचरज वाली बात रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ जुगलिया रे तीन पल्योपमनी आयुषोरे लाम्बीडयारी तीनकोसरी कायरे । कल्पवृक्ष पूरे ज्यांने दृशजातरारे, बादल जिम गया विलाय रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ भगवन्त चौवीसवा श्रीवर्द्धमानजी रे शक्रेन्द्र बोल्यो इमडी बात रे । स्वामी दोयघडी आयुने वधारजोरे, जिमि यह भस्मग्रह टल जायरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ वलतो श्रीवीर जिनेन्द्र इमडो कहै रे सुनरे शक्रेन्द्र माहरी वाय रे । तीन काल में बात हुई नहीरे. आयुषो वधारिया नहि जायरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ अस्थिर संसार जाणी मुनि तज नीसरयारे करता मुनि नवकल्पी विहाररे । भार उपत्तीनो दी ज्याने उममारे, नधरैमुनि ममता नेह लिगाररे ॥ आ० ॥ ९ ॥ चारित्र पाले रुडि रोति सूं रे, देवे वली आपनो छन्दो रोक रे । तुरत विराजे मुनि मुक्तिमे रे यश लहै इहलोकने परलोक रे ॥ आ० ॥ १० ॥ अद्भुत रूप देखिने ममता करो रे, मत करो कोई भणियांरो अभिमानरे । चोथ ऋषिजी कहै शहर जालोर मे रे, सूत्र थी सुझ होज्या निस्तार रे ॥ ११ ॥

सुध सरध्यां हुवै समगतिरे, भाईसुध० २ वैराग तेह समोय ॥ सु० ॥ २ ॥ भगवती शतक पचीसमेंरे, छट्ठे उद्देशे जोयजी छः नियंठा कह्या जू‌आ २ रे भाई छ० छट्ठेस्युं चवदमें जोय ॥ सु० ॥ ३ ॥ पड़िसेवणा मूल उतर तणो रे. डांडस्युं मैन्या भणीयजी पुलाक नियंठा तिण स्युं कह्यो रे भाईपु० २ एतो छठें गुणठाणे होय ॥ सु० ॥ ४ ॥ पड़िसेवण उतर गुण तणोरे. बीजो बूकस जोयजी, जगन दोय सै कोड़स्युं रे भाईज० २ ओछा कदे नहीं होय ॥ सु० ५ ॥ पड़िसेवणा मूल उतर तणो रे पड़िसेवणा अवलोयजी, च्यार सै क्रोड़ जगन कह्या भाईच्या० २ त्यांरो विरहो कदेई न होय ॥ सु० ॥६॥ कषाय कुशील चोथो कह्योरे छठेस्युँ दशमें जोयजी, छः लेश्या पांच शरीर छै, भाई छः० २ वले समुदघात छः होय ॥ सु० ॥ ७ ॥ निग्रन्थ इग्यारमें बारमेंरे, सना-तक केवल दोयजी, संयागीनें अजोगी कह्यारे, भाई सं० २ धुर प्रथम तिहुं छठै जोय ॥ सु० ॥ ८ ॥ खेत धान ज्यूं पुलाक छैरे, काढै खलै ज्युं बूकुस जोयजी, साल ढिग ज्युं पड़िसेवसारे. भाईसा० २ कषाय कुशील उफण होय ॥ सु० ९ ॥ निग्रन्थ छडिया चावल जिसारे। सनातक उजल धोयजी ॥ एह दृष्टान्त परंपरारे, भाईस० २ थूल पणे अवलोय ॥ सु० १० ॥ पुलाक बुकस पडि-

सेवणारे, कषाय कुशील पिछाणजी, उत्कृष्टा पजवा चारित्र तणारे, भाई उ० २ तिण आसरे दृष्टान्त जाण ॥ सु० ११ ॥ निग्रन्थ छडिया चावल जिमारे सनातक उजल धोयजी, चउ कर्म खपावे तिण आसरेरे, भाई च० २ ए दृष्टान्ते जोय ॥ सु० १२॥ छठे गुणठाणे जिन कह्यारे जोग म्युं चवदम होयजी दोष तणी नहीं थापनारे भाई दो० २ शुद्ध नीत चरण री होय ॥ सु० ॥ १३ ॥ वायस हंसादिक तणारे। विविध रूप वैक्रोयजी ॥ वागुल जलपखिया तणारे। भाई वा० २ छक्र छत्र धर जोय ॥ सु० १४ ॥ बनखण्ड बावडी रूप करेरे, शतक तेरमे जोयजी, नवमें उदेशे निहालज्योरे। भाई न० २ ते पण डण्ड लिया शुद्ध होय ॥ सु० १५॥ अश्वरूप करि बहु जोजन जावे। तास मुनि कह्यो सोयजी ॥ निश्चे अश्व कह्यो नहीरे, भाई नि० २ ते पिण डण्ड लिया शुद्ध होय ॥ सु० १६ ॥ मासि चौमासी निशीथमेंरे। पाठ सैकडा जोयजी ॥ विराधक कह्यो डण्ड लिया विनारे, भाई वि० २ अराधक हुवे आलोय ॥ सु० १७ ॥ पकम पूनम चन्द जिसारे। वद पख चन्द सु जोयजी ॥ ज्ञाता अध्येन दशमे जिन कह्यारे, भाई ज्ञा० २ म्हारा साध साधवी होय ॥ सु० १८ ॥ छठो गुणठाणो जावे नहीरे वीर वचन अवलो-

प्यारहो लाल ॥ ३ ॥ सीतकाल बहु सी खम्योरे एक पछेवड़ौ परिहारहो लाल घणा वर्षां लग जाणज्योरे हेम गुणांरा भण्डारहो लाल ॥ ४ ॥ उभा काउसग्ग आदरयोरे सीतकालमें सोयहो लाल पछेवड़ौ छांडी करीरे बहु कष्ट सह्यो अवलोयहो लाल ॥ ५ ॥ सज्झाय करवा स्वामजीरे तनमन अधिको प्यारहो लाल दिवस राति में हेमनारे एहिज उद्यम साहरो लाल ॥ ६ ॥ काउसग मुद्रा स्थापनेरे ध्यान सुधारस लीनहो लाल नित्यप्रति उद्यम अति घणोरे मुक्त म्हामी धुन कीनहो लाल ॥ ७ ॥ स्त्रियादिक ना संगनेरे जाण्या विष फल जेमहो लाल हांसकितोहलने हणोरे हिये निर्मला हेम-हो लाल ॥ ८ ॥ शीयल धर्‍यो नववाड़ सूंरे धुर बोला ब्रह्मचारहो लाल ए तप उत्कृष्टा घणोरे सुरपति प्रणमें सारहो लाल ॥ ९ ॥ उपशम रस माहें रमरह्यारे विविध गुणारो खाणहो लाल एकांत कर्म काटण भणीरे संवेग रस गलताणहो लाल ॥ १० ॥ स्वाम गुणारा सागरू, गिरवो अति गम्भीरहो लाल । उजा-गर गुण आगलारे मेरु तणी पर धीरहो लाल ॥ ११ ॥ कठिन बचन कहिवा तणोरे, जाणकि लीधो नेमहो लाल । बहुल पणे नहीं वागस्योरे बचनामृत सूं प्रेमहो लाल ॥ १२ ॥ त्रिविध कठिन वच सांभलीरे, ज्यांरे

मनमें नही समायहो लाल । तन मन वच मुनि वश कियोरे ए तप अधिक अथायहो लाल ॥ १३ ॥ मु० ॥ चोथे आरे मामल्यारे क्षमा शूरा अरिहन्तहो लाल विरला पंचम काल मेरे हैम सरिषा संतहो लाल ॥ १४ ॥ मु० ॥ निरलोभी मुनि निर्मलारे आर्जव निर अहङ्कारहो लाल लक्ता कर्म उपधिकारीरे सत्यवच महा सुखकारहो लाल ॥ १५ ॥ मु० ॥ संयम में शूरा घणारे । वर तप विविध प्रकारहो लाल उपधि अना-दिक मुनि भणोरे दिलरो हैम दातारहो लाल ॥१६॥ मु० घोर ब्रह्म मुनि हेमनोरे स्यूं कहिये बहु वारहो लाल अखिल व्रत उचरङ्ग सुरे पाल्यो अधिक उदारहो लाल ॥ १७ ॥ ईर्या धुन अति सोपतिरे जाणे चाल्यो गजराजहो लाल गुण सुरत गमती घणोरे प्रत्यक्ष भव दधि पाजहो लाल ॥ १८ ॥ मु० मो सूं उपकार कियो घणोरे कह्यो कठा लग जाय हो लाल निश दिन तुझ गुण सभरूंरे वस रह्यो मो मन मांयहो लाल ॥ १९ ॥ सुपने मे सूरत स्वामनीरे पेखत पामे प्रेमहो लाल याद किया हियो हुलसेरे कहणो आवे कैमहो लाल ॥ २० ॥ मु० हूतो बिन्दु समान थो रे तुम कियो सिन्धु समानहो लाल तुम गुण कबहु न विसरूंरे निश दिन धरु तुझ ध्यानहो लाल ॥ २१ ॥ साचा पोरस

थे सहीरे कारदेवो आप सरिसहो लाल बिरह तुम्हारो दोहिलोरे जाण रह्या जगदीशहो लाल ॥ २२ ॥ मु० जीत तणो जय थे करीरे विद्यादिक विस्तारहो लाल निपुण कियो सतीदास नेरे वलि अवर संत अधिकार हो लाल ॥ २३ ॥ स्वाम गुणारा सागरूरे किम कहिये मुख एकहो लाल उंडो तुझ अलोचनारे वारू तुझ विवेकहो लाल ॥२४॥ मु० अखंड आचार्य आगन्यारे, ते पाली एकणधारहो लाल मान मेट मन वश कियोरे नित्य कीजे नमस्कारहो लाल ॥२५॥ मु० साझ घणा संता भणीरे, तें दीधो अधिक उदारहो लाल गण वछल गण वालहोरे समरे तीरथ च्यारहो लाल ॥२६॥ मु० सुखदाइ सहु जग भणीरे, कर्म काटण ने शूरहो लाल तन मन रंज्यो आप सूं रे तुं मुझ आशा पूरहो लाल ॥ २७ ॥ मु० हेम ऋषि दूण रीतसूंरे लीधा जनम नो लाहहो लाल हेम तणा गुण देखनेरे गुणी-जन कहै वाह २ हो लाल ॥ २८ ॥ मु० चर्म चौमासो आमेटमें रे आप कियो उचरङ्गहो लाल ध्यान सुधा-रस ध्यावतारे सखरी भांत सुरङ्गहो लाल ॥२९॥ मु० सातमी ढाल विषे कह्यारे हेमतणा गुण सारहो लाल हेम गुणारो पोरसोरे याद करै नरनारहो लाल ॥३०॥